यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

३२

ढोलन कुंजकली

ढोलन रूपाली न पूरब दिशा की ओर दखा। सूरज अभी निकला नहीं था मगर उजास फैलने लगा था। उस उजास पर जीण शीण चुनरिया-सा बादल का एक टुकडा लटका-लटका-सा लग रहा था।

तभी सदा की तरह वही काना कौवा आकर काव-काव करने लगा जिसके पख नोचे-नोचे स लगते थ।

उसने 'हिशऽऽऽ' कहकर उसे उडाया। फिर वह पुराने चिथडा की बनी रग बिरगी 'रलकी' को समेटने लगी।

घर के पास ही खेजडा था। उस खेजडे की डाल पर कमेडी कुऽऽऽ कर रही थी।

रूपाली ने जम्हाई के साथ अगडाई ली। सहसा उसकी नजर मनका पर पडी। वह भी अभी अभी जगी थी। वह काले रग की रभा थी। इतने तीखे नाक-नक्श कि हर छैला लुट जाए।

'अरी, जाग गयी क्या ?'

'हा कन, रात कभी ही सो गयी थी। सोओ कैगा तो जागा कगा।

खूऽऽ खू—खासी की आवाज़।

उस आवाज़ के साथ उसकी जीभ पर खारापन तैर आया।

रूपाली की मुरभायी आकृति पर एक कठोरता उभरी। मन ही मन घृणा से बोली, 'निठल्ला! आधी रात गये दारू पीकर आया होगा और

चोर की तरह 'सान म घुसकर सा गया हागा। डर क मारे जीमा भी नहीं हागा नही जीमा है तो न जीम मैं परवाह नही करती। एक तो पैसा-धेला कमाता नही है ऊपर स ठस्से और जमाता ह। म किसी के ठस्से नही सह सकती। दबन थोडे ही हू। अपन वूकिया (वाजुआ) की कमाई खाती हू।"

उसके मन म विचारो का तूफान सा आ रहा था। तभी मनका न कहा, "जगल चल रही है क्या ?'

'हा, चल रही हू।

वह अपन घाघरे को झडकान लगी। फिर उसन उसके नाडे का कसा। काचली के बाहर झाकती छातिया को भीतर किया। उस पर फटा पुराना ओढना डाला। खाट का दीवार के सहारे खडा करके वह सीन्या उतरन लगी।

कमडी फुरर कर उड गयी।

रुपाली का घर कच्चा था। दीवारें ता पत्थर पर पत्थर रखकर ही बनायी हुई थीं। आगन म राती मिट्टी लीप दी गयी थी। कमरा के नाम पर एक साल, एक ओटा और एक रसोई थ।

साल म उसका पति हीरु सोता था। हीरु की खाट आक के पेड क रेशा की सुतली स बनी हुई थी। खाट के बराबर दीवार म कई सूराख थ जिनम स हवा फरर-फरर की ध्वनि करती हुई आती रहती थी।

आगन म एक दीवार ऐसी भी थी जिस पर तरह तरह क माडणे बनाये हुए थे। यह रगाली ग्रामीण चित्रकारी की प्रतीक थी। उसम राम दवजी का चित्र प्रमुख था।

एक ओर एक माची बिछी हुई थी। उस पर उसकी दसवर्षीय बटी कुजडी पट मे घुटन डालकर सोयी हुई थी। वह गोरी चिट्टी थी और उसक नाक नक्श भी आकर्षक थ।

रुपाली न अपनी बटी कुजडी का ममता भरी नजर स देखा। एक जू उसके मीढिया किय हुए बाला म से निकलकर कान की ओर बढ रही थी। वह थोडी चौंकी। फिर उसन जू का उगलिया की चिमटी म पकडा। उस अगूठा के दानो नाखूना के बीच देकर पीस डाला। उठा

दिया फूक मारकर।

हालांकि उसे हीरू से ज्यादा प्रेम नहीं था, फिर भी वह उसके प्रति एक विचित्र करुणा की भावना रखती थी। अभी भी उसके मन में वही भावना उभर आयी। वह भट से साल में पहुची।

हीरू की खाट के नीचे ऊचे किनारो वाली कासी की थाली पडी थी जिसमें रूपाली ने रात को बाजारी की मोटी रोटिया और मोठ की दाल बनाकर रख दी थी। उसने उस थाली को खीचकर देखा। उसमें भोजन नहा था। उसे अपार सताप हुआ, कम से कम दारूबाज भूखा तो नहीं सोया।

वह साल से बाहर निकल आयी।

साल के ऊपर कीकर की लकडियो और घास की छप्पर थी। एक लकडी को रस्सी से बाधकर लटकाया गया था जिस पर ओढन बिछान के कपडे पडे थे।

एक खूटी पर ढोलक लटक रही थी।

खाट के पास ही चिलम और पानी की 'लोटडी' पडी हुई थी।

रूपाली ने आगन में पडी मटकिया मे से पानी का लोटा भरा और वह जगल की ओर चल पडी। उसने मनका को पुकारा, 'अरे! बैनडी आव।'

मनका ओढना डालती हुइ बाहर आयी।

दोनो जगल की ओर चल पडी।

गाव से काफी दूर बावलिया का एक भुरमुट था। घना और हरा। वही औरतें जमती थी। शौच से निवृत्त होकर वे गोलाकार शक्ल में बैठ जाती थी। हाथ माजती रहती थी और गप्पें हाकती रहती थी।

रूपाली मजे हुए लोटे को उछाल-उछालकर हाथ में ले रही थी।

तभी चादकी ने खखार थूककर कहा "रात को बडा मजा रहा।"

"रात को कुण कुण थी?"

'मैं, चम्पी, गवरा और रत्ती।'

'कहा गयी थी?

'ठाकुर भूपतसिहजी के डेरे पर। चादकी ने नयन मटकाकर

वहा अगनी दासा (विसमिग) या दारू था। किरन का माम भी नना था। इसके दारू पिया और जम के माग गाया।'

रूपाली न व्यग्य भर स्वर म कहा और जम क अपन शरीर का कुटवाया होगा।

चान्दी न भट म कहा डीन या क्या धिमा है। व भी चार थ और हम भी चार! सबस पहल गवरा न घाघर का नाडा खोला। इसक बाद जा रासरप्पा हुआ कि ठकुराणीजी आ गयी। मैंन उन्ह पर्दे के पीछे दख लिया था। ठाकुर मूपत भी नश म धुन था। ठकुराणी मन ही मन जल रही हागी। उस जलान के लिए मैंन जान-बूझकर उनके गिलास का जूठा कर दिया।'

'मुझे ता मुद्दे की बात बता कि टका पिस्या कितना मिला?

'पाच पाच कलदार (नगद रुपय) हिस्स म आय।'

रूपाली न लम्बा सास लिया, मुझे ता पिछल पखवाडे स कोई बुलावा नहीं आया। घर क सार भाडे बतन खाली हा गय है।

'ता अबार मेरे साग चल!'

"कहा?'

अरे भोजराज महता के पोता हुआ है। बधाई ल आएगे।'

मैं पचायत चलूगी। उसन दढता से कहा।

'हा अपनी ढोलक ले आना। मेरी ढोलक ता फट गयी है।

तू ढोलक की चिंता न कर। तरी फट गयी है पर मेरी ता साबित ह।'

इस दोहर अथ वाले वाक्य न सबको जोर स हसा दिया।

चादकी कृत्रिम रोष से बोली, 'चल फीटी! जरा अपनी जबान पर काबू रखा कर।"

और सारी ढोलना न अपने-अपने रास्त पकड लिय।

सूरज काफी ऊपर आ गया था। ताजा धप सारे शहर पर फल गयी थी।

जिस तजी के साथ रुपाली कधे पर ढोलक लटकाकर चादकी के घर पहुची, उस समय वह नखराली अपना घाघरा ही पहन रही थी।

"चादकी ! क्या माती पिरोने लग गयी ?"

चादकी घाघरा पहनती-पहनती बाहर निकली। झट से बाल पडी, 'गली (पागल) सबसे पली। पागला को कौन-सा सजना सवरना पडता है। उस पुकारो और वह आ जायेगा।"

रूपाली नाक चढाकर बोली 'अब मिजाज को मीने की तरह डीन पर मत जड ... रगी बैंगी चल।

चादकी भीतर गयी और ओढना ओढकर आ गयी।

चार ढोलनिया ढोली बास से बाहर निकली। महता की हवली मे आग लोग आ जा रहे थ। ढोलनिया बठकर 'बधावा' के गीत गाने लगी।

धूप बडी प्रोल के आगे से चली गयी थी। मेहता न स्वय आकर ढोलनिया को सवा रुपया और आखा दिया। आखे म गुल और धान था।

चादकी ऊचे स्वर म बाली, "जुग जुग जिओ कामदारजी आपके घर-द्वार पर सदा हाथी झूमता रहे आपकी पगडी के पज सवाय हा आपकी मूछ का चावल कभी न जाय खम्मा अन्नदाता खम्मा धणिया आपका भडार दिन दूना रात चौगुना हो।'

चादकी की मासी-मास लखमी लगभग पचपन साल की थी। उसका स्वर अब भी सुरीला था। पतला था।

जब उसने आशीषा की वर्षा कर दी तो महता नजदीक आकर बाला "क्या चाहती हो, ढोलण जी ?'

"दनार के ओढन आनाओ।' लखमी हाथ जोडकर बाली, 'सोवन थाल बजा है। हडिया नही फूटी है। हाथ को खुला कर दीजो।'

मेहता चुप रहा। उसकी मुद्रा किंचित् गभीर हो गयी।

'मुह मे चावल डालकर मत खडे होइए। बस हुक्म कीजिए, अन्न-दाता ! सेठाणी अबार ओढना ओढा देगी। हम बिना ओढना ओढे महा स नही जायेंगी।'

मेहता ने उन्ह टालन की कोशिश की पर ढोलनिया नही मानी। व

तो पसरने लगी। नाचार मेहता को उन्हे ओढने देने पडे।

सारी ढोलनिया समवत स्वर मे भुक भुककर हाथ जोडने लगी, "खम्मा अन्नदाता न। भगवान आपके भडार हीरे मोतिया से भरे। आप हम मुट्ठी भर देंगे तो भगवान आपको धोबा भर (हथेली भर) कर देगा। घणी घणी खम्मा '

मेहता की हवेली की प्रोल के आगे मे रवाना हुई यह सकरी गली थी जिसमे जन जाति के ही लोग रहते थे। गली की समाप्ति पर चौक था। उस चौक मे कबूतरो का एक पिंजरा बना हुआ था। उसमे कबूतर दाना चुग रहे थे।

पिंजरे के पास ही एक गोरा चिट्टा प्रौढ आदमी खडा दाना फेंक रहा था। उसकी मूछें मोरपख जसी थी।

उसने धोती और कुर्ता पहन रखा था। उसके दाना डालने वाले हाथ मे दो दो हीरे की अगूठिया थी जो धूप के चिलके मे चमक रही थी।

उसे देखते ही रूपाली के मन मस्तिष्क मे भवर सा घूमने लगा।

'ठाकुर शिवपतसिंह जी !' उसने मन ही मन कहा और वह जल्दी-जल्दी चलने लगी।

'रूपाली !' ठाकुर शिवपत ने पुकारा।

रूपाली ने सुनकर भी अनसुना कर दिया। उसने अपने घूघट को खीच लिया।

चादकी आश्चय से बोली 'रूपाली ! तू बाली (बहरी) हो गयी है। ठाकुर सा तुझे हेला (पुकार) मार रहे है।'

'रूपाली ओ रूपाली !'

न चाहकर भी रूपाली को रुकना पडा।

चादकी ने भवें चढाकर कहा 'बहुत बडे ठाकुर है बावली हाथो मे हीरे की अगूठिया कानो मे सोने की मुरकिया और हीरे का ही भवरिया पहनते है। जा जल्दी से मुजरा कर ले।

तब तक शिवपत रूपाली के समीप आ गया था। उसने अपनी मूछो पर ताव देकर कहा 'हमसे नाराज हो रूपाली ?"

नही अन्नदाता, मैं आपसे नाराज कैसे हो सकती हू ! मैं ठहरी कीडी

(चींटी) भला बेचारी चींटी कभी हाथी से नाराज होने का हौसला कर सकती है ?" उसकी आखों में प्रश्न था।

'फिर तुम डेरे क्यों नहीं आयी ?"

"मन नहीं करा।"

"तेरा मन तो बावला है। एकदम गैला है। अपना भला-बुरा भी नहीं सोचता।'

'मुझमें अक्ल नहीं है, अन्नदाता।'

"अपने मन को समझाकर डेरे आ जा। मैं तेरी उडीक (प्रतीक्षा) रखूगा।'

और ठाकुर चला गया।

रूपाली वापस अपनी साथिना के बीच आ गयी। चादकी ने आख मारकर पूछा "ठाकुर सा क्या कह रहे थे ?"

वह झल्लाकर बोली, 'तेरा सर!'

चादकी ने झट से कहा, 'मेरा सर तो तू पहले ही खा चुकी है।"

रूपाली गभीर हो गयी। बोली चादकी, तग न किया कर। खोद खोदकर बात न पूछा कर। सब अपनी अपनी कहत है।

ठाकुर तेरा 'रामू' है ?'

"नहीं, चादकी, नहीं! वह तो मेरे शरीर का भूखा है। उसमें प्रेमी के गुण है ही नहीं। बस, अब बद कर इस बात को।"

बडी सती बनती है।'

"हम गरीब ढोलिनें है। हमारा 'सत' कैसे रह सकता है? घर घर मागती फिरती है। हमारे ये अजगरिये मरद औरतों की कमाई पर मजे लेते है। उनकी लुगाइया सती नहीं हो सकती। तू विराजी मत होना। मेरी भायली (सखि)! कुछ ऐसी बातें होती हैं जिन्हे चाह कर भी होठो पर नहीं लाया जा सकता।

चादकी चुप हो गयी।

ढोलियों का वास आ गया था। सारे मकान छोटे छोटे और कच्चे। भूख और गरीबी साफ-साफ झलक रही थी। गदगी जहा तहा पसरी हुई थी। छोटी छोटी गलिया। गलियों के बीचोबीच एक छोटा सा चौक।

"क्या लायी ?"

"पाच आने, एक ओढ़ना, धान और गुड।" रूपाली ने विगतवार बताया, 'पर तू परेशान क्या है ?"

"मुझे जोर की भूख लगी है। घर में बासी रोटी भी नहीं है।"

"अभी खिचडा बना देती हू।" उसने ढोलकी को साल की खूटी पर टागा। हीरू शायद निपटने चला गया था। रूपाली के मन में खाली खाट को देखकर वितृष्णा सी जागी। सोच बैठी—कितना निठल्ला और निकम्मा है उसका मरद ? उसकी जीभ पर खारापन तैर आया।

उसने ओढ़ना उतार फेंका। कांचली और लहगे में उसका मासल बदन अब भी आकर्षक लग रहा था। वह कुजडी के पास आयी। उसके सिर पर स्नेहिल हाथ फेर बोली, 'लाडी ! जा, भागकर 'गोर' के रास्ते में से कुछ छाने (बिना बनाये हुए उपले) चुग ला। मैं खिचडा कूट देती हू।'

कुजडी लोह का बना पुराना कूडा लेकर भाग गयी।

रूपाली खिचडा कूटने लगी। आगन के एक कोने में ही पत्थर का 'ऊखल' बना हुआ था। उसके पास ही ढाई-तीन फीट का लकडी का मूसल रखा हुआ था।

मूसल का निचला हिस्सा पतला था। वह खिचडा कूटते कूटते सोचने लगी—

ठाकुर शिवपत के बारे में !

अपने प्रेमी जैतसिंह के बारे में !

अतीत का एक टुकडा उसके सामने पसर गया—

'अरे ! तू तो सफा गेली है।' जैतसिंह ने रूपाली को समझाते हुए कहा "लाय (आग) को तू दीये से मत देख। रूपाली ! मैं तुझे सच्ची प्रीत करता हू पर मेरा-तेरा ब्याह नहीं हो सकता। आखिर मुझमें ठाकुरों का रक्त है। मेरे घर की मान मरजाद है।"

रूपाली की आखें भीग गयी थीं।

"मैं तुझे अपने हृदय में रख सकता हू। तुझे अपनी पडदायतण बना सकता हू।'

रूपाली से नहीं रहा गया। उसने तीखी बात कह दी थी, 'आप बहुत

डरपार हो। आज मुझे आप नीबू की तरह निचोडकर यह बात कहते हो? सचमुच आपकी छाती पर बाल नहीं है, आज यह बात सही हो गयी।

'रूपाली ! तू समझती क्या नहीं !" जतसिंह ने किंचित झुझलाकर कहा था क्या तू चाहती है कि मैं तेरे लिए अपना हक छोड दू ? इतने बडे ठिकाणे को छोड दू ? अपनी इज्जत को धूल मे मिला दू ? सोच रूपाली सोच।'

मैं क्या सोचू ? 'उसने व्यथित स्वर म कहा था 'मैं ठहरी जात की ढोलण, नीच। मेरी कोई मान-मरजादा नही मेरा कोई चरित्तर नही। मैं भला इतनी भारी भारी बातें कैसे कह सकती हू ? ज्यादा कहूगी तो आप कह देंगे कि दो चार रुपया के लिए दारू पीकर नागी नाचनवाली भी ऐसी ठकुराणी जसी बातें करती है ? एक बात का ध्यान रखिएगा— उकूरडी (घूरे) पर भी आम हो सकता है। मुझम भी वह त्याग-तपस्या जग सकती है जो आपकी लुगाइया म होती है।'

'तू अपना तिरिया हठ छोड दे। जतसिंह ने उस परामश भरे स्वर म कहा था, "तू मेरे पास किसी भी रूप म रहगी मेरी प्यारी बनकर रहगी। मैं तुझे एक सुन्दर घर बना दूगा।

'मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। आप असली राजपूत हू। सुनती आयी हू कि राजपूत वचन के पक्के होते है पर आपके बोल तो पानी के मोल बिक गये। मैं आपके प्रेम के कारन ही किसी के सामने नगी नहीं नाची। यहा तक कि अपने धणी (पति) को भी नहीं चाहा । उसने लम्बा उच्छवास लेकर कहा था, खैर अपने अपने भाग ! जब भाग म सुख लिखा ही नही है तो कसे मिलेगा ?"

तो तू नही मानेगी ! '

नही नहा नही !' रूपाली ने भन्नाकर कहा था, आपने परेम के नाम पर मेरा 'सरबस लूट लिया। आपने मुझे अपनी बीनणी बनाने के फेर म मेरे डील (तन) पर अपने अदीखे साप बना दिये हू। सच कहती हू, कवर सा मुझ सदब ऐसा लगेगा जसे मेरी रग रग म हजारो कीडिया (चीटिया) कुलबुला रही है।

जतसिंह ने अपने हाथो के सोने के कडो को खोलकर कहा था फिर य

ला और ठडे दिल से साचा।"

रूपाली ने थूक दिया था, "मुझे साने के कडे नही चाहिए, कुवर सा! यदि साने से ही इत्ता माह हाता तो पहले म अपने डील को सान स पीला करती, फिर आपकी सेज का सिणगार बनती। समझे!"

और फुत्कार कर रूपाली लौट आयी थी।

जिस प्रेम के उसने सपने दखे थे, वे रेत के महल की तरह ध्वस्त हा गय।

और वह घर आकर राने लगी थी। उसे लगा था कि ठाकुरा का धरम बदल गया है। उनकी नीयत खोटी हो गयी है। ढोलन रूपाली निरन्तर निरथकता का बोध करती रही। और उसने सवण औरत की तरह जीन का जा निणय किया था, वह काच की तरह टूट गया। उस लगा कि आज की व्यवस्था ढोलण को ढोलण का तरह ही जिलायेगी, ठकुराणी की तरह नहा।

उस पहली बार अपनी मृत साम केसरकी की एक बात याद आयी—"बीनणी! तुझे बहुत बडा भरम है कि इन बडे लागो की लुगाइया सती-सावितरिया हाती ह। घाघरे म सब नागी हाती ह। कोई चवडे करे और काई छान। इसीलिए ही ता इन बामण, वाणिया और ठाकुरा क घर म भी दोगले पैदा होत है। हर भरे गुलाबा के बागा म भी तो कीकर बावलिया उग सकता है। फिर तू इस जतसिंह के लिए बावली मती बन। वह तुझ आम की गुठली की तरह चूसकर फेंक देगा।"

तब रूपाली ने अपनी सास की बात नही मानी थी। उस सात भव म भी खयाल नही था कि इतन बडे और ताकतवर मरदों की लुगाइया भी दूजा से अपनी चूडिया तुडवाती हागी, पर आज जतसिंह के विश्वासघात ने उसके मन की सारी आस्थाआ और विश्वासा को तोड दिया।

वह साचती जा रही थी—उसमे असली खून नही हा सकता। उसकी मा पर उसका बाप नही । साला अपनी जबान से मुकर गया। अपना असली पानी दे दिया।

पहली बार उसे खयाल आया कि अपना आखिर अपना ही हाता है। इसीलिए ही ता कहा गया है कि रहना भाइया म ही चाहे बर हो।

रूपाली के विचारो ने एक नया अर्थ लेना शुरु कर दिया।

उसमे अपनी जाति बिरादरी, कुटुम्ब कबीले के प्रति जो अलगाव था, एक अरुचि थी, एक अश्रेष्टता की भावना थी, वह मिटने लगी।

इसी अभिमान ने उसे अपनी जात बिरादरी से काफी दूर कर दिया था। ठाकुर जैतसिंह की 'सरवस' बनने की ललक ने उस हीरू के प्रति एक घिन से भर दिया था और उसका पति हीरू उसकी निरंतर उपेक्षा और प्रताडना के कारण दारूबाज हो गया था। वह रूपाली की जगह नशा मे डूबता गया। यौन के प्रति उसमे एक मुर्दापन पैदा हो गया। एक विचित्र तरह की नपुसकता छा गयी। उसे कभी रुचि ही नहीं होती कि उसके भी एक सोवणी मावणी कामणगारी लुगाई भी है।

वह तो रूपाली से कुछ पैसा चाहता था। उन पैसो से वह अमल (अफीम) और दारू खरीदकर नशे मे धुत हो जाता था। कभी-कभी अपनी मा को गालिया देता था 'तू घर मे ऐसी छिनार बीनणी लायी है जो पातर से भी गयी-बीती है। और उसने मुझे हाट चौराहे मेल-तमाशो मे, ताल-तलया–सभी जगह बदनाम कर दिया है। उसने मेरी पगडी की ऐसी रंगत बिगाडी है कि उस पर अब चोखा रग ही नहीं चढ सकता। ओ मां! उस मालजादी ने मुझे मरद से नामरद बना दिया। मैं कभी उसका गला गसासकर रख दूंगा।

केसरकी सदा की तरह चुप रहती थी।

सोचती रहती—यह कैसी किस्म की लुगाई है जो अपने 'घरबिंद' की बात नही सोचती! यदि इसे अपनी व्रत बाडी का काम-काज छोडकर इज्जतदार बनना था तो इसे हाथो मे सोने की नहीं तो चादी की बगडिया, हथफूल बाजूबद, कानो मे सुरलिये माथे मे मोरमीढ़िया पावो मे रमझोल और कडिया बनाकर पहननी चाहिए थी ताकि लोग जानें कि यह अमुक ठाकुर कवर की भायली है। यह तो न इधर की रही और न उधर की। कभी वह कवर का बच्चा फूल की तरह सूघकर फेंक देगा तब इस छिनार की आखें खुलेंगी।

और यही हुआ।

रूपाली जितना आत्मिक तौर पर जैतसिंह से बधती गयी, वह उससे

उतना ही दूर होता गया। देह-मंदिर के अर्चन वंदन में जतसिंह ऊबने लगा। पहले वह रूपाली के लिए दुनिया छोड़ने को तैयार था और अब वह परिवार को भी त्यागने की बात नहीं करता था।

रूपाली बार बार छली गयी।

और जतसिंह ने अपना बौनापन तब एकदम जाहिर कर दिया जब रूपाली की सास मरी। दाह संस्कार करने के बाद रूपाली ने जतसिंह से रुपये मंगवाये तो उसने इतने थोड़े रुपये भेजे कि वह जलकर राख हो गयी।

उसने वे रुपये लौटा दिये। उसने तय कर लिया कि वह कमा कर लेगी पर मुट्ठी भर अहसान जतसिंह का हर्गिज नहीं लेगी।

जब सास के 'औसर' की बात आयी तो समाजवालों ने उसे 'दूआ' भी नहीं दिया। उनका कहना था, 'हीरू डोम-चमारों के यहां खाता पीता है। उसका न कोई धरम है और न कोई मरजादा! हम ऐसे विधरमी के यहां जाकर 'थाली' नहीं ग्रहेंगे।'

रूपाली ने अरदास की, "मेरे धणी के पापों का दंड मेरी सास को न दें। यदि मेरी सास के पीछे औसर नहीं हुआ तो उसकी गति मुगति नहीं होगी। उसके पीछे दाना नहीं बिखरा तो उसके सात भव खराब हो जायेंगे।

रूपाली ने लम्बा घूंघट निकाल रखा था। वह बार बार पंचों को हाथ जोड़ रही थी।

और पंच कड़े ठूंठ हो रहे थे। दरअसल उनमें रूपाली के प्रति अचेतन में जलन थी। रूपाली ने कभी भी उनकी परवाह नहीं की। उसमें जैतसिंह का घमंड था और जैतसिंह ने 'टाय टाय फिस' कर दी। उसने पंचों पर दबाव भी नहीं डाला।

रूपाली ने कहा था, 'कुंवर! तुम मेरे क्या काम आ सकते हो? लगता है कि तुमने मुझे डूर डगर पर ठगा है। तुम्हें सिर्फ मेरे 'डील' की चाह थी।"

जैतसिंह बहया की तरह बोला था, "रूपाली! तू नहीं जानती कि मैं ठाकुर सा के सामने कितना लाचार हूं! तू नहीं जानती कि वे तेरी

हत्या भी कर सक्त ह।'

य बातें तो तुम मुझे पहले भी कह सकत थ! बात बात पर अपन बाप का सायपा क्या करत हो?

रूपाली! जवान पर लगाम दो। यह मत भूलो कि मैं क्षत्री हू।

तू न छत्तरी है और न छाता। उसन व्यग्य स कहा था 'मिनख अपनी जात जात का तो वरी होता ही है पर तुम वरी हो जाओग, यह मैंने कभी नहीं सोचा था। पर मरी मास का औसर होगा और पचायत होगा। जाय लाख रह साख।

रूपाली न उस आग्नेय नत्रो म देखा और कहा था—

'पग पग किये कपट, जीवण न विस दियो
धिक है तन सूरमा प्रीत म धोखो कियो।

रूपाली धुआ फुआ होकर आ गयी।

फिर वह जतसिंह के पास नहीं गयी और भमर रूपी जतसिंह न भी उस नहीं बुलाया। पर उसन दुबारा किसी स प्रीत नहीं की।

इस बीच ठाकुर शिवपत न बार बार कहा था रूपाली ढोलण! मैं तुझे सोन सी पीली कर दूगा। चादी स तर अग-अग को सजा दूगा।

और रूपाली हस देती थी। कहती थी, "ठाकुर सा! प्रीत कोई पान थोड़े ही है जिसे बार बार खा लिया जाय। वह तो ऐसा कच्चा फल है कि एक बार भी हाथ लग गया तो मुरझा जायगा। मरा मन मुरझा गया है। हिया मुड़दा हो गया है।

और ठाकुर शिवपत का मन रूपाली को पाने क लिए मचलन लगा। यदि जतसिंह का भय नहीं रहता तो वह कभी का रूपाली का अपहरण करवा देता पर उसने मन ही मन यह तय कर लिया था कि वह साम दाम दड भेद किसी भी तरह रूपाली को पायगा।

एक पच को पाच रुपय देकर रूपाली ने उस अपन पक्ष म कर लिया। फिर उसन रूपाली को दूआ दिलवा दिया।

गुड का सीरा और चावल नात के भोजन का औसर हो गया।

औसर के तीसरे दिन ही शिवपत और जतसिंह शिकार खेलन गये। उसम जतसिंह पहाड से गिरकर मर गया।

रूपाली जानती थी कि ठाकुर शिवपत न जतसिंह की बडी सफाई स

हत्या कर दी। वह कमीना सिर्फ उसे पाना चाहता था। उसके रूप सागर म अपनी काम पिपासा को बुझाना चाहता था।

रूपाली की इच्छा हुई कि वह 'काला' ओढ ले। यह प्रमाणित कर द कि वह प्रेम दीवानी है। उसमे सवर्णो स भी अधिक पवित्र रक्त है पर वह जानती थी कि इसमे उसकी जग-हसाई ही होगी। कौन इस छोटी जाति की ढोलन पर विश्वास करेगा कि इसने प्रेम के पीछे काला ओढा है ?

वह कुछ दिना तक जगल की उस हिरनी की तरह तड़पती रही जिसके हिरन का किसी व्याध ने मार डाला हो।

तब ठाकुर शिवपत न मौका देखकर उससे फिर कहा—

रूपाली !'

हु !'

"जैतसिंह ने केवल तुझसे प्रेम का स्वांग रचकर तुझे लूट लिया था। अब तू मेरे पास आ जा मैं तुझे राणी बनाकर रखूगा।'

'ठाकुर सा ! नगी क्या छुपाय और क्या दिखावे। पर मैं आपके सा 'गाम (वस्त्र) उतार दूगी। ठाकुर शिवपत का नागा होना बड़ा ही मतलब रखता है। आप कितने ही स्वाग रचें आप कितन ही उणियार (चेहरे) लगायें पर मैं आपका असली उणियारा जानती हू।'

क्या जानती हो ?"

'कि कवर जैतसिंह अपनी मौत नही मरा बल्कि उस मारा गया है।'

"साली की जबान काट लूगा—मुझ पर यदि थूक भी उछाला तो !'

शिवपत क्रोध म आहत साप बन गया।

आप मेरी जीभ काट सकते हैं आप मुझे सूली पर चढा सकते ह आप मेरी बोटी-बोटी काटकर चील गीधा को नुचवा सकते है पर आप रूपाली का अपनी सेज का सिणगार नही बना सकते। ढोलण रूपाली जथारथ (सत्य) को जानती है। जाघ ढकी रहगी तो ही अच्छा रहगा।

चार के जी म चानणा (प्रकाश) होता है। उस दिन से ठाकुर शिवपत न तो अपने मुह म चावल डाल लिये। फिर नही बोला। फिर कभी उसन रूपाली पर जोर जबरदस्ती करने की धमकी नही दी। उसकी काचली म हाथ डालने के बारे में वह सोचता रहा पर बडी विनम्रता से। रूपाली

को पान की एक अदम्य लालसा के साथ वह जी रहा था और रुपाली ने अपने को सभी तरह से तोड लिया था पर वह ठाकुर शिवपत के महल मे नही गयी। उसके किसी उत्सव आयोजन मे नही गाया। उसके किसी मरणे परणे पर नही गयी। पुत्रोत्सव पर ओढना ओढने नही गयी।

वह जाती थी दूसरी ढालनियो की तरह गाने बजाने। वह जब शराब मे घुत होकर अपने मादक कटाक्ष और बाकी चितवन लुटाती थी तो श्रोता उस पर मोती लुटा देते थे, कभी कभी।

और वह अपने ही समाज की भूख, गरीबी अभाव अभियोग रुढिया परम्पराए और मूल्य लेकर जी रही थी।

रूप का दीया बुझने लगा था। अपनी एकमात्र सतान 'कुजडी' को वह लाड कोड से पाल रही थी।

उम्र के खेल न्यारे होते है।

रुपाली का यौवन तो जाने लगा पर टहरका (नखरा) नही गया। वही मिजाज, वही मरोड वही उन्माद भरी जोड तोड।

स्मृति के खडित चित्र समाप्त हो गये।

खिचडा कुट गया था। कूडे मे छाणे लेकर कुजडी आ गयी थी।

कुजडी ने मटकी उठा ली। चीढिया से जडी हुई झुमकेदार ईंढाणी को सिर पर रखकर कुजडी बोली, 'मा ! मैं कुए से मटकी भर लाती हू, तब तक तू खिचडा बना ले।'

वेंगी आये ?

उसने चुटकी बजाते हुए कहा, 'जिस पग जाऊगी, उसी पग आ जाऊगी।

वह चली गयी।

ढोलन रुपाली चूल्हा जलाकर हडिया मे खिचडा पकाने लगी।

पडोस की कोई ढोलन गा रही थी—

तावडा धीमो पड ज्यारे
सूरज बादल म छुप ज्यारे
गोरी रो नाजुक जीव
सूरज बादल मे छुप ज्यार

ढालन-ढोलिया का जीवन इन लोक गीतो और लाक-धुना के घेरा म बीतता जाता है।

ढाली-वास से एक रास्ता तो किले की ओर जाता था और दूसरा रास्ता मेहताजी के कुए की आर। पत्थर का बना हुआ अत्यन्त कलात्मक कुआ था। लाल पत्थर, पीले पत्थर और कही कही सगमरमर का प्रयाग था—उस कुए के निर्माण म।

चारो कोना पर चार छतरिया थी। वहा पानी के वडे बडे चार काठे थे। दो मूण और आठ बैल थे। कुए के दोनो ओर दा बडी वडी कूडिया थी। इनमे ढोर पानी पिया करते थ। बहुत लम्बी 'सारण थी। उस सारण के तीन आर मिट्टी की पाल थी। उस पाल म छोटी-छोटी बर की झाडिया उगी हुइ थी। कुए के पास पीपल और खेजडा पास पास उग हुए थ। उसकी घनी छाया मे गायें और भसें बैठी रहती थी और जुगाली करती रहती थी।

कुओ से पानी माली निकालते थे। ब्राह्मण, बनिया और राजपूतो को कुए पर चढने का हक था, शेष छोटी जातियो का या तो माली स्वय पैसे लेकर डोल से पानी भरते थे या एक नाली वनी हुई थी, उसमे स पानी दिया करत थे। पानी पैसो के अलावा कौडियो के बदले भी दिया जाता था। ऐसा भी होता था कि फटी हुई 'पगरखियो' के बदले भी पानी के घडे भरे जात थ।

पाव म पहनी हुई फटी हुई पगरखिया स 'बरत के वेग का दबा दबा कर माली रोकते थे।

होता ऐसा था कि कुए मे बारा डाला जाता था। यह खोल की तरह होता था जो गाय के चमडे का बना हुआ रहता था। उसको चमडे की रस्सी यानी बरत से बाध दिया जाता था, फिर बैला की सहायता स पाना निकाला जाता था।

जब बारा खिच जाता था तब माली जोर का अलाप लेकर कहता—

अर कीलिया कीली खोल द

कीली खोल दे रे कीलिया कीली खोल दे

और कीली जो लक्डी की बनी हुई होती थी खोलत ही बारा जोर दार सन सन की आवाज करता हुआ कुए म चला जाता और धमाक की आवाज करता।

जब कुजडी कुए पर पहुची तब सन्नाटा पसर गया था।

कुए के पीपन पर एक मोर मोरनी बठे थे, शायद धूप की प्रखरता स बचने के लिए।

उस मोर का देखकर कुजडी ने कहा—'पीऊ पीऊ और वह अपने आप हस पडी।

एक भस उठकर फोटा' (गोबर) करने लगी। कुजडी न सोचा कि कितना बडा फाटा है एक वक्त की रसोई हो जाय।

और तभी ही वह कुए की सीढया के समीप पहुच गयी।

उसन आवाज लगायी ओ लोकिया बाबा मटकी तो भर दे।'

लाकिया माली छतरी म बठा बैठा चिलम पी रहा था। वह बाहर निकला। लाकिया माली बडा ही रसिया था। चरित्र के मामले मे गिरा हुआ।

उसने घुटना तक की धाती फताई और पगडी पहन रखी थी।

कुजडी को देखत ही उसकी आखा के दीय भक से जल गय। हाठो पर साप वाली जीभ लप लप करने लगी।

अपनी मूछा पर ताव देकर बोला, पसे लायी है?

'नही, एक फटी पगरखी लायी हू।

'दिखा!

उसने अपन पावा की ओर सकेत किया। उस पगरखी को देखत ही लाकिया बोला, अरी चोट्टी! यह पगरखी है! यह तो 'खालडा है— सूखा हुआ खालडा। इसके बदले पानी की मटकी नही भरी जायगी।

कुजडी वडे ही भोलेपन से आखें मटकाकर बोली, 'क्या नही भरी जायगी देखो न, जदि यह पगरखी नही हाती तो मेरे पाव नहीं जलत लाकिया बाबा! कित्ती तज़ धूप है! सूरज बाप तो आखें निकाल रहा है। भर दो न मटकी आपको हाथ जाडती हू।"

लोकिया उसके पास आया। कुजडी सचेत हो गयी। यह सदा का नियम था कि जब-जब कुजडी पानी भरने आती तो लाकिया उसके पास आता और उसकी उभरती हुई छातिया पर हाथ फेरकर कपोलाको चूमता। फिर उसकी मटकी भर देता।

गरीब की छोरी जो थी कुजडी।

कुजडी साचती थी कि कितना सस्ता सौदा हो गया। वह मन ही मन अपार प्रसन्नता का अनुभव करती थी। उसे कुछ गर्व का आभास भी होता था कि उसने लोकिया बावा की 'ना नू' पर 'हा हू' करा ली और पसे भी बचा लिये।

वह लौट आयी।

रूपाली न उसे खिचडा परास दिया। वह तेज भूख के कारण बडे बडे कौर लेने लगी। रूपाली ने उसे टोका, 'मर राड ! एस क्यो डचके भर रही है ! कही कौर गने मे अटक गया तो बेमौत मरेगी।

कुजडी न पानी का गुटका लेकर कहा, "तू फिक्र मत कर मा ! मैं अवार नही मरुगी। अलखिया बावा न मेरी उमर बहुत लम्बी बतायी है, आकाश जित्ती।

रूपाली न रावतिया के लिए खिचडा परासा। उसे दूसरी थाली स ढक्कर कहा, "म रावतिया बावा को खिचडा खिलाकर आती हू। जदि तरा बापू आ जावे तो उसे बिठा देना। फिर मुझसे तू थाली लेन के लिए आ जाना।' घर मे थाली एक ही थी।

'चाखो।" कुजडी न कहा।

रूपाली रावतिया काका के पास आयी। वह उसका अडीक ही रहा था। रूपाली न थोडा सा घूघट खीचा और कहा "ला काका, खिचडा खा लो, एकदम सूखा है खिचडा। न घर मे छाछ है और न घी दूध।"

रावतिया न लम्बा सास लेकर कहा, "अरे बटी ! हम गरीबा का खाली नाज ही मिल जाय तो बहुत है।

"हा, काका !" रूपाली न भी व्यथित स्वर म कहा, सान जैसा पानी देने के बाद भी पेट भरने जितना अनाज नही मिलता।'

तभी आ गयी बरजी।

काली कलटी और खुराट किस्म की लुगाई। वरजी न भी बडा जमाना देखा था। वह विधवा थी। उसन बगनी रग का घाघरा और ओढना आढ रखा था। उसने हाथ म रामदेवजी की 'भोली' की वनायी तातो पहनी हुई थी और पावा म भारी भारी कडिया थी।

वरजी ने रूपाली की वात सुन ली। नखरे से बोली, "हीरन की बीनणी! बुरी नही मान तो एक बात कहू। तूने ता जोबन विरथा ही गवाया। गैली! तू जे चाहती तो सोने से पीली हो जाती और आज बिखे के दिन नही देखती। पण तू ता अपनी अकड मे रही! जैतसिंह जी जसे खुले हाथ वाले आदमी से लाग लगाकर तू ता फुकनी (दरिद्र) की फुकनी रही। इसका कहते है भाग! जब भाग म सुख नही लिखा है तो मिलेगा कसे? बडे लोग कहत भी है कि भागवान के तो भूत कमाता है और निरभागी के बटे भी नही कमाते। तू तो सफा निरभागी निकली।

रूपाली जानती थी कि वरजी से बहस करने का मतलब है—सात पीढी की निंदा स्तुति सुनना इसलिए वह उसकी हा मे हा मिलाकर बोली तू साची कहती है। मैं हू तो निरभागी ही।

'अब अपनी छोरी के कानी ता हुशियार रहना। छारी घणी फूटरी (सुदर) है। जोबन विगाड लिया तो बुढापा ही सुधार ले। छोरी तरी क्या है पूगल की पद्मण साने जैसा रूप सूव (तोते) जैसी नाक हिरनी जसी चाल बडी बडी कजी आखें चौडा ललाट हाथ पाव भी चोखे है। नाम भी भला-चाखा—कुजकली।

रूपाली मौन रही। उसन सप्रश्न वरजी की आर देखा। बरजी फिर वाली देख हीरू की बीनणी, मैं सदा साची कहती हू। झूठ से मेरा सात भव म भी काई नाता रिस्ता नही। तरी छोरी है न रामदेव बाबा की किरपा हुई तो तरा दलिद्दर धा देगी।

हालाकि रूपाली का उसकी वाता म जरा भी दिलचस्पी नही थी पर वरजी अपनी आदत के अनुसार बके ही जा रही थी, 'पण एक बात का खयाल रखना इस निगोडे दारूवाज हीरू से छोरी को बचाना यह कही दारू की वातल के बदले छोरी का सट्टा (सौदा) न कर आय! घरम वा

कहना मेरा काम है मानना न मानना तेरा काम।"

रावतिया भी भयंकर रूप से उसकी बातों से ऊब गया था। वह खिचड़ा खाते-खाते बोला, "बरजी भौजाई, आज तू पट पूजा करके आयी है क्या ?"

"अभी जीम कर ही आयी हूं।

"तभी तू गोधे (साड) की तरह डड़ूक रही है। आज तेरा गला भी काफी साफ है। कानी मिरचें चबाई हैं क्या ?'

बरजी ने रावतिया के व्यंग्य को समझ लिया। झट से बोली, 'आ टागटूटिया ! मेरी ही मीठी मसखरी करता है। बड़े छोटे का कायदा रखा कर। मुझे कहां फुरसत कि मैं बक-बक करूं ?"

और बरजी चली गयी।

रावतिया उदास हो गया। बरजी ने उसे टागटूटिये की जो गाली निकाली, इससे उसके हृदय में शूल की दश पीड़ा-सी हुई। रूपाली उसकी आकृति पर बैठी पीड़ा को समझ गयी। रावतिया को धैर्य देती हुई बोली, 'बाबा ! बरजी की चाय चाय पर ध्यान मत दो। वह रडाप तो उल्टी-सुल्टी बकती ही रहती है।"

रावतिया ने जैसे तैसे खिचड़ा खाया। फिर उसने हाथ धोकर एक गदी मटकी में से पानी पिया। बोला, "रामदेव बाबा तेरा भंडार भरा रखे।" और वह नेत्र मूंदकर पड़ा रहा।

रावतिया रम्मत वाला !

रावतिया नौटकी वाला ! रावतिया ख्याल तमाशे गाने वाला।

रावतिया अपनी जवानी में बड़ा ही नामी गिरामी आदमी था। वह छोटे मोटे शहरों और गांवों में अपनी नौटंकी लेकर घूमता था। उसकी नौटंकी में ग्यारह आदमी थे—एक नगाड़ची, एक हारमोनियम बजाने वाला, एक सारंगिया और आठ आदमी नौटंकी में काम करने वाले। रावतिया कभी कभी और रूपाली का बाप गोपिया स्थायी रूप से स्त्री का पाट करता था और ऐसा पार्ट करता था कि देखने वाले उसे सचमुच सुन्दर

स्त्री समभार हुडदग मचा देते थे, जार-जार की सी टिया बजाकर बात मारते थ—'लुट गय तुभ पर नैन मटारी, क्या जालिम है तू कामणगारी
अरी छप्पन छुरी ! इतनी तीखी मार न कर हम घायल हो जायेंगे।
तुझे तो घर म डालन को जी चाहता है। हाय हाय !'
जितन मुह उतनी उछानें !

और रावतिया गाव गाव और कस्बे-कस्बे अपनी ढोलक की थाप बजाता रहता था। अपन नगाडा की गूज गुजाता रहता था। अपन घुघरओ की छमछमाछम स लोगो को मुग्ध करता रहता था। ढोली होने के बावजूद उसका ब्राह्मण, वैश्य और क्षत्रियो म सम्मान था। लोग उसे विवाह और अन्य उत्सव आयोजनो पर सदैव बुलात थ और वह अमरसिंह राठोर, सत्य हरिश्चन्द्र सती सावित्री की नौटकी करता था। कभी-कभी हिडाऊ-मरी की रम्मत भी करता था जो अपने दोहरे अर्थ वाले दोहो और गीतो के कारण प्रसिद्ध थी।

रावतिया को याद आया—

उस दिन ठाकुर बनवारीसिंह के यहा उसकी अमरसिंह की नौटकी थी। वह अमरसिंह बना हुआ था और गापिया हाडी रानी।

भीन नगाडा किड किड धिनऽऽऽ किड किडऽऽऽ धिना बज रहा था।

रावतिया न चूडीदार पाजामा, जोधपुरी कामदार सलम सितारा जडी जूती, फूलदार रेशमी शेरवानी, साफा पहना हुआ था। साफे म मान का तुरा कमर म तलवार। वह ठुमक-ठुमककर गा रहा था—

अमरसिंह राठौड राजवी
छत्रपति नागौर का

नगाडा बजता रहा।

और गाव के ठाकुर की डेरे की जालियो म स ठाकुर की बडी लडकी 'अणदकुवर' रावतिया के गठीले बदन को देख रही थी। वह उस पर रीझ रही थी— कितना बाका मोत्यार है ? ढोली के घर जन्म लेकर यह राजा-ठाकुरो के कुवरो सा लगता है। उसके हृदय के ओर छोर पर उसकी आसक्ति के साप फुफकारने लगे।

उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह उससे मिलेगी।

और उस रात नौटंकी के समाप्त होने के बाद जब रावतिया अपने दल के साथ डेरे के पास वाली एक लावारिस 'मालकी' में जाकर विश्राम की तयारी करने लगा तब एक बूढी डावडी जखिया ने आकर कहा, "रावतिया जी !

'क्या है बाई सा ?"

अभी भी घना अधेरा फैला था। रावतिया देख नही पाया कि यह डोकरी कौन है, इसलिए उसने झट से 'चिमनी' मगवायी।

गोपिया हाथ की आड देकर चिमनी लाया। उसमे उस डोकरी (बुढिया) का झुर्रियो भरा चेहरा साफ नजर आ रहा था।

"आपको मेरे साथ चलना है। डोकरी ने कहा।

'कठै ?"

बस, चुपचाप आ जाइए।'

रावतिया समझदार था। बिना पूरी बात समझे वह चलने को तैयार नही हुआ।

डावडी जखिया ने तनिक झुझलाहट से कहा आप डरिये नही, मैं आपको जजाल म नही फसाऊगी।

"इतनी अधेरी रात है ! इस कुसमय मुझे कौन बुला रहा है यह म भी तो जानू।'

"आपको बाई सा इनाम देना चाहती है। आइए आइए न !

इनाम के नाम पर गोपिया का लालच उभर आया। उसने उसको कोहनी मारकर कहा, "जा न यार क्यो शक रहा है। कुछ मिलगा तो अपनी दलिदरता ही दूर होगी। अरे अपनी मडली वालो के नये कपडे भी बन जायेंगे। आजकल धधा भी तो मदा चल रहा है। सभी मडली वाले पूर (एकदम फटे कपडे) पहन रह ह।'

रावतिया भीतर से डरा हुआ उसके पीछे चला गया। डेरे के पिछवाडे एक दरवाजा था। उस दरवाजे के आगे एक छाया-सी खडी थी। उसका क्या रग रूप था, रावतिया को नहीं मालूम पर वह आवाज से जवान लग रही थी। उसने किस रग का घाघरा ओढना और काचली-कुर्ती पहन रखी

थी, अधेरे मे वह नही देख पाया।

रावतिया को पसीना-सा आ गया। उसने सहमते हुए कहा, "मुजरो करू, बाई सा।"

"मैं भी मुजरा करू रावतियाजी, आपन बहुत चोखी नौटकी की। आप तो साख्यात अमरसिंह लग रह थे। ला मेरी ओर से इनाम।'

उस अनजान औरत न सोन की एक जजीर रावतिया के हाथ म दे दी।

खम्मा बाई सा आपन घणी घणी खम्मा! हम गरीब आपको बडी आसीस देंग। बाबा रामदेव आपकी मन-इच्छा पूरी कर। आपके पुण्य परताप को बनाय रखें आपकी दातारी बनाय रख।'

रावतिया विनम्रता की पराकाष्ठा को छू रहा था। वह कोशिश करने की ऐसी स्थिति म था जसे वह जमीन पर लोट जाएगा।

छाया ने पूछा, 'कल फिर रम्मत होगी?'

'जी बाई सा!

'कौन-सी?'

हिडाऊ मेरी की।'

छाया के स्वर मे आदेश आ गया, "जब रम्मत खत्म हो जाय तो यही पर आ जाइएगा।'

'हुक्म बाई सा!

रावतिया न भक्कर फिर खम्मा खम्मा की। उसका स्वर जसे ही तज होने लगा वैसे ही उस छाया ने उसे रोक दिया, "अपनी बोली को धीमा रखिए मैं ठाकुर की बेटी अपनी मान मरजादा को तोडकर आपके पास आयी हू।'

रावतिया छाया का परिचय पाकर स्तब्ध रह गया। उसके शरीर मे ठडी भुरभुरी छूट गयी। वह तुरन्त लौट आया।

दूसर साथी सो गए थे। वह भी अपनी रलकी गूदडी म सो गया मगर उसे नीद नही आयी। आज जो कुछ अघट घटा था, उसन उसे उद्विग्न और बेचन कर दिया।

नीद उसकी आखो से कोसो दूर चली गयी। जगार के कारण उसका सिर और शरीर भारी होने लगा।

सुबह मुर्गे न जब बाग दनी शुरु की, तब वह उठ गया।

बाहर खेजडा उगा हुआ था। उसकी एक डाल पर कौवा काव-काव कर रहा था। 'सानकी की कच्ची छत पर दो टालोडिया (टिटहरिया) आपस मे चूचक-चूचक कर रही थी। कभी-कभी वे आपस म उलझ जाती थी और कभी-कभी व एक-दूसरे के पीछे भागती थी।

रावतिया उन सबसे कटा हुआ सालकी की चौकी पर बैठा था।

ठाकुर की बटी है वह। उसने मन ही-मन इस वाक्य का दोहराया और वह एक अनजानी दहशत से घिर गया कि कही ठाकुर का मालूम पड गया तो जमीन म गडवा देंग। लेकिन इसम उसका क्या कसूर है ? उसने खुद ही तो बुलाया है। खुद ही बख्शीश दी है। मैंने तो किसी तरह की पहल नही की। फिर भी कसूर मेरा ही माना जायेगा। इस धरती पर कोई कसूरवार है तो गरीब छोटी जात वाला ढोली चमार नाई बावी नायक-बाबरिया उसन कई जातियो को याद कर लिया।

उसकी मडली वाल अभी तक खराटे भर रहे थे। उसन एक नजर उन पर डाली। फिर उसन अपनी अटी मे से वही सोन की साकल निकाली जो ठाकुर की बटी ने दी थी। साकल पाच छह तोले की थी। उसन हाथ को हिलाकर उसके वजन का अन्दाज करना चाहा। अन्दाज स वह इतनी ही लग रही थी, जितना उसने सोचा था। आतक के बीच म सुख उग आया। इससे तो सब मडली वालो का क्या, उनके घर वालो को भी नाज-कपडा दिया जा सकता है।

इस तरह वह अन्तर्द्वन्द्व म खोया रहा।

गोपिया जाग गया था। उसने अपनी हथेलियो को जोडकर आख मद मूदे कुछ जपा फिर उसने अपनी आखें खोली।

बाहर आत ही उसन खखारा। रावतिया चौक पडा। गोपिया ने खखार थूककर कहा, 'रावतिया! रावतिया! क्या इनाम लाया ?'

"बाई सा न एक साकल दी है।

गोपिया न झट म उसके मुह पर हाथ रख दिया, "धीमे बोल चल जगल चलते ह। वही सून' मे बात करेंग।'

दोनो ने एक एक लोटा लिया तो रावतिया जसे याद करक बोला,

"गोपिया ! अपने पास चार तो लोटे है और आदमी ज्यादा हम लाग एक ही लाटे से काम चला लेंग।"

गोपिया न लोटा रख दिया।

व दाना एक लोटा लेकर जगल की ओर चल।

जगल जात-जात गोपिया न पूछा, "हा, ता क्या इनाम लाये ?'

तू खटाव (धीरज) नही रख सकता ? जा भी लाया हू तुम लागा से नही छिपाऊगा।"

'यह तो विश्वास है पर तू जब तक नही बतायेगा तब तक मुझे चन नही आयगा।

बाई सा न एक साकल दी है सोन की साकल पाच छह ताल की लग रही है। बहुत चोखी है।

सच ?

'तुझे भरोसा नही ?"

भरोसा तो है। तू कभी कूट (झूठ) नही बोलता, पण भायला दिखना तो सही !

रावनिया न उस साकल को दिखा दिया। गोपिया की आखें फट गया। वह विस्फारित नत्रो स कुछ पल उस साकल को देखने लगा। उसकी आकृति अपार उल्लास से भर गयी, जस उह कारू का खजाना मिल गया हो। पर सहमा वह उदास हो गया। एक आनका उसकी आखो म तैरी।

अरे ! तू किस सोच मे डूब गया ?"

'सोच रहा हू कि यह इनाम गले का जजाल न बन जाय ?"

बन सकता है।'

'कस ?

एम कि ठाकुर सा की बाइ सा ने लुक छिपकर और सबसे छाने यह साकल दी है ?'

फिर ?" उसकी आखा मे भय नाचा।

और उसन मुझे आज रात फिर बुलाया है।

"मुझे ता डर लगन लगा है। य राजा ठाकुर है, इनकी प्रीत भी

बावनी होती है और दुश्मनी भी। हगी मूती बात पर तलवारें निकाल लेते हैं। मेरी राय तो यही है कि तू मत जाना।

"जदि नहीं गया और बाईं सा ने कह दिया कि उसकी साकल गुम हो गयी है तो ? फिर सजोग-कुजोग स हमारे पास वह पकडी गयी तो सब मडली का काला मूडा और लीला पग कर देंगे।'

"फिर तू अकेला ही जाकर आ जा।"

वे लोग लौट आये। दोपहर को बाजरी का खिचडा बनाया था। कुछ लोगो ने उसे घी के साथ खाया तो कुछ लोगो ने दूध के साथ। गोपिया ने उस छाछ के साथ सबेडा। यह प्रबध ठाकुर की ओर से था।

'रम्मत होने की तिथि मे वे एक समय ही खाना खाते थे। उनका विश्वास था कि खाने के बाद अच्छी तरह से गाया नही जाता है। दिन भर उन्होने विश्राम किया। रात का डेरे की जनानी ड्योढी के आगे के बडे चौक म 'हिडाऊ-मैरी' की रम्मत शुरू हुई। रावतिया 'हिडाऊ' बना था और गोपिया व सादिया उसकी दो मरिया (रानिया)। दामू बना 'नूरसा'। नूरसा उसका तावेदार था। हिडाऊ जी व उसकी रानियो का बिचौलिया।

हिडाऊ ने अस्सी कली का केसरिया जामा पहन रखा था। उसके नीचे चूडीदार पाजामा। कमरपटटे म नकली सान की मूठ की तलवार और चादी की ढाल। पगडिया मे खडकिया पगडी जडाऊ चौवदी गने म, दाढी-मूछें। हाथा म कडे और पावो मे घुघरओ की पायल।

मैंरिया न छडीदार घाघरें छडीदार ओढनें कनार जडी काचली-कुर्तिया। सिर पर बारिए, हाथा मे चूडिया और साने की नगडिया घाघरे के नीचे चूडीदार पाजाम। पावा मे घूघरें।

नूरसा ने चूडीदार पाजामा चपकन और सिर पर तुर्रा छोगा की पाग और कमर म कमरबद।

नगाडा बजने लगा—

धिनाका धिनाका धिन ऽऽऽ
धिनाका धिनाका धिन ऽऽऽ

पहले प्राथना हुई । फिर हिडाऊ न अपना परिचय दिया । हर बात अलग-अलग रागनिया मे थी जिसको नगाडा बजाने वाले के साथ दूसरे गायक गाते थे ।

हिडाऊ, नूरमा और दोना मैरिया एक ताल पर नाच रह थे । उन दोना मरियो ने घूघट निकाल रखे थे । नाच दशका के घेरे म था । गाव के लोग भी आय थे जो दूसरी ओर थे ।

जनानी डयोढी की जालियो मे से ठाकुर के रनिवास की औरतें देख रही थी ।

उनमे ठाकुर की बेटी अणदकुवर तो रावनिया के एक एक बाल पर मदमस्त हो रही थी । वह डावडी जखिया का आतरिक उत्तेजना के मारे हाथ दबा देती थी क्योकि रम्मत के मवादा के बीच अश्लील दोहे दशका मे एक आनन्द की लहर उठा रहे थे ।

कसूम्भ के नशे की पिनक मे ठाकुर बार-बार अपनी मूछो पर ताव द रहा था, जस वह यह बताना चाहता था कि हिडाऊ तुझमे तरी दो रानिया असन्तुष्ट है पर हम तो पाच-पाच ठकुराणियो को दबाय हुए बैठे ह ।

तभी नगाडा शात हुआ । उसके साथ ही चारो ओर एक मौन बिखर गया ।

रावतिया घुघरुआ का ठनका मारकर बोला—

जोवन झाला दे रयो भरी जवानी माय

ठाकुरा रै चौक मे निरखणी आई नादान

धिनाक धिन्न धिन्न ऽऽऽऽ

कहानी आग बढ्ती है ।

हिडाऊ की दोनो रानिया नाराज हो जाती हैं ।

आवाज गूजती है—

केसर भरी कटोरडी

फूटी पत्थर लाग

जिण तिण आगे क्या कहू

म्हारी केसर आठी काग

(केसर भरी कटोरी पत्थर से फूट गयी । ओ निर्मोही रसिया, मैं

किस किमका कहू कि मेरी केमर को कौवे न जूठी कर दी है।)

वही नगाडे की धिनाक धिन, वही घुघरूआ की छमक छमऽऽ

अणदकुवर विमुग्ध हो रही थी। रावतिया की एक-एक भगिमा, एक एक भाव, एक-एक अन्दाज अणदकुवर के मन म उसके प्रति प्रेम की आग जगाने लगे।

और जब ट्टिडाऊ की दोना मरिया ने उस प्यार और रमण के लिए आह्वान किया तो अणदकुवर एक सपनीली दुनिया म खो गयी।

गीत गूज रहा था—

रग आम्बा रग आम्बली
रग दाडम, रग दाख
रग छ महाराजा री सज म
ह रमसा माझल रात
हो रग मौणा—रग मौणा

अणदकुवर का नारी न जैसे रावतिया को बाहो मे भर लिया है। वह एक अतुलनीय अकल्पनीय आनद मे खो गयी। जसे रावतिया उसके अग-प्रत्यग मे नये नये गुलाब उगा रहा है।

रम्मत खत्म होते ही वह अपनी डावडी के साथ अपने महल मे गयी। दीया जल रहा था। उसका मदा मदा उजास फैला हुआ था। जैसे ही सन्नाटा हुआ, वसे ही उसने डावडी से कहा, "जलिया ! बगी चल, रावतियाजी मरी परतीखा कर रहे होगे।'

बाई सा ! किसी ने देख लिया तो दानो बेमौत मारी जायेंगी।'

वह क्रोध मे भरकर तडपी। बोली, "डाबडी ! ऐसे जीने से तो मरना भला। पूरे चौंतीस साल हो गये हैं। न कोई 'बीद (दूल्हा) मिला और न कोई परेमी ! आखिर लुगाई-जात हू। कोई 'भाटा ता नही। लाय तो हर सरीर मे होती है। जब वह लाय नही बुझती है तो लुगाई पागल हो जाती है। मैंने ता पूरे चौंतीस बरस इन जालीदार झरोखा म काट दिये। कभी-कभी लगता है कि मैं लुगाई नही, कोई भूतणी हू। छाया हू जो बस पनीत की तरह इधर उधर डोल रही है। कभी मैं डायन हो जाऊगी। या तो मैं तुम सबको पीसकर चूरा बना दूगी या मैं

खुद इस डेरे के डागले (छत) से कूदकर चूरा बन जाऊंगी।

जखिया को अणदकुवर प्रेतात्मा-सी लगी। वह जडवत खडी रही। उससे बोला नही गया।

"बालन जोगी ! तू चलती है या नही ?"

'मेरा तो रुआ रूआ काप रहा है। कलेजा थरथरा रहा है। मुझे माफ कर दीजिए, बाई सा !" उसने अणदकुवर के पाव पकड लिय।

अणदकुवर ने घणा से उस देखा और उसन उस जोर की ठोकर मारी और वह अकेली ही चल दी।

वह प्रेतात्मा की तरह अधेरे मे खडी रही। चहलकदमी करती रही। बार बार अपने पाव पटकती रही। अपने बालो को खीचती रही।

और रावतिया भाडी के पीछे छिपा हुआ उसको दखता रहा। उम पसीना आ रहा था।

भाभरका होने लगा।

हलका उजास हात ही रावतिया ने देखा कि अत्यन्त ही काली-कलूटी चचक के दाग वाली अप्रिय युवती है अणदकुवर !

उसन मन ही मन कहा—कित्ती कोजी है !

तभी अणदकुवर आकाश की ओर देखकर बडबडायी, "रावतिया जी ! आप जब तक नही आयेंग तब तक मैं यही बठी रहूगी।

रावतिया डर गया। प्रकाश हान लगा था। रावतिया के मन मे ठड सी घुस रही थी। यदि किसी ने देख लिया तो उसको जिन्दा नही छाडेग। उसे गडक की मौत मार देंगे। उसे अपनी दीनता याद आती रही। उसे ठाकुर का आतक दबोचता रहा। इसी ऊहापोह मे रावतिया उठा और थूक मुटठी मे भागा।

उसे देखते ही अणदकुवर चिल्लायी, 'रावतिया जी रावतिया जी !'

पर रावतिया भाग रहा था। वह एक भाडी से अडकर गिर गया।

अणदकुवर ने उसे जाकर पकड लिया। बोली, रावतियाजी ! मैं तुम्हे अपने गल की सोने की हसली दे दूगी एक बार मेरे मन की पूरी कर दीजिए।

पर रावतिया को उसका जवाब नहीं सूझा। वह हकलाने लगा। उसने फिर भागने की चेष्टा की पर अणदकुंवर ने उसे मजबूती से पकड़ लिया। वह प्रार्थना कर रही थी, "नहीं-नहीं, मेरे रसिया नहीं, आज ' गमाण ही लीजिए '

और उसी पल दैत्य की तरह डयोढ़ीदार गुमानसिंह प्रकट हुआ। इस तरह अणदकुंवर को गिड़गिड़ाते हुए पराये मरद के सामने देखकर उसका खून खौल उठा। उसके एक हाथ में बांटी की मजबूत लाठी थी दूसरे हाथ में पानी का लोटा। उसने लोटे को रखा और गुस्से में दांत पीसकर कहा 'कमीन ! बाई सा को छेड़ रहा है उनके 'आंचल' में हाथ डाल रहा है।

रावतिया की सफाई कौन सुनता ? बस, गुमानसिंह ने लाठियां बरसानी शुरू कर दी। यदि अणदकुंवर दो चार लाठियां अपनी पीठ पर नहीं खाती तो शायद रावतिया की कपाल क्रिया हो जाती।

अणदकुंवर ने ड्योढ़ीदार की लाठी पकड़कर कहा, "यह क्या अंधेर मचा रखा है ? ये तो बापड़े जंगल जा रहे थे।'

गुमानसिंह ने अंगारों की तरह जलती आंखों से देखा। कहा, 'और आप यहां क्या कर रही थीं ? आप डेरे के बाहर क्यूं आयीं ?'

अणदकुंवर के पास इसका कोई उत्तर नहीं था। वह एकदम चुप हो गयी।

वह धुआं फुआं होकर बोला, 'लगता है, आपने राजपूतानी का नहीं, किसी गोली का दूध पिया है। मैं अभी जाकर ठाकुर सा को कहता हूं।

अणद कुंवर सहसा मृत्यु के संत्रास से घिर गयी। उसके सामने साक्षात मृत्यु नाच गयी। शरीर पसीना पसीना हो गया।

नहीं, ठाकरां, नहीं।" उसने ठाकुर के आगे हाथ जोड़ दिये। जिस तरह बड़े सामन्त को ठाकुर कहते हैं, उसी तरह छोटे राजपूतों को ठाकर या 'ठाकरां' से सम्बोधित किया जाता है।

'कहूंगा।' उसने दृढ़ता से कहा।

"आप मुझ पर दया कीजिए, मैं आपसे अपने प्राणों की भीख मांगती हूं।'

और उसने ठाकर के पांव पकड़ लिये और चुपचाप उसे अपनी सान

की हसली' द दी। किसका इनाम किसको मिल गया ?

सान की हसली देखकर ठाकर की क्रोधाग्नि पर ठडा पानी पड गया। लालच न सदा सच्चाई को मिटाया है और रिश्वत न सदा सच का गला घाटा है।

डयाढीदार न हसली को अपनी धाती म दबाया और वह बाला, ' इस 'ढोलीडे' का कह दना कि वह अपनी जबान सीकर रखे। यदि किसी का जरा-सी भी भनक मिल गयी तो इस तो सूली पर चढा दिया जायगा।

और डयाढीदार चला गया।

अणदकुवर बिजली की फुर्ती से रावतिया के पास गयी। रावतिया कराह रहा था। वह क्रन्दन कर रहा था—' मेरी टागें टूट गयी हाय, मरी टागें टूट गयी।'

अणदकुवर ने उसके सिर पर हाथ फेरा और भयभीत सी वाली, ' छिमा करना, रावतिया जी! इस वात की चरचा किसी स मत करना। भोर हा रहा है, मैं चली।

और अणद कुवर चली गयी।

थोडी देर के बाद गोपिया आया। उसने उसे घोडी चढाया। रावतिया की टागा मे मर्मान्तिक वेदना हा रही थी। सालकी तक पहुचते पहुचते वह अचेत हा गया। एक आतक छा गया मडली पर।

गोपिया न उसके अग-अग की जाच की। पुराना सयाना आदमी था। झट म समझ गया कि रावतिया की टागें टूट गयी हैं।

सब हैरान परेशान थे पर गापिया ने किसी को कुछ भी नही बताया। वह जानता था कि किसी को कुछ भी कहने का मतलब है कि सबके सिर फूटेंगे। उसने कहा, "उस्ताद गिर गया।'

दामू जल्दी से डरे पर गया। ड्याढीदार गुमान न पूछा, क्या बात है ढोलीडा ?'

दामू की आखें भर भर आयी। उसने विगलित स्वर म अपन आसू पाछते हुए सारी बातें बतायी।

गुमान न वडी सहानुभूति प्रकट की। उस तुरन्त घी और हल्दी लाकर दी जिस मिलाकर रावतिया का पिलाया गया।

होश आने पर रावतिया ने भी वार-बार यही कहा, "मैंने एक चीत का देखा। फिर भागा तो गिर गया।"

इनाम वख्शीश लेकर मडली लौट आयी।

और इस तरह रावतिया की टागें बेकार हो गयी। वह अपाहिज वन गया।

फिर वह नहीं नाच सका। वह दुबारा अमरसिंह, सत्यवान, हिडाऊ जी नहीं बन सका। उसकी मडली टूट गयी। उसके दोस्त गोपिया ने भी उसके बिना नाचना गाना वद कर दिया। ढोली न गाय और न नाच फिर जिए कैसे? गोपिया भी बीमार हो गया और एक दिन खासता-खासता मर गया।

बस, मरने के पहले उसे इतना ही सतोष था कि उसने रूपाली के हाथ पीले कर दिय।

सब कुछ याद करके रावतिया की आखें भर आयी। वह सुबकता हुआ गाने लगा—

मनडे री दुनिया सूनी।
जित्ती बीं री ओलू आवै,
उत्ती पीडा दूनी।
मनडे री दुनिया सूनी।
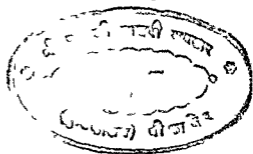
दिन साला मे समा रह थे।

उस दिन गजब हो गया।

रुपाली ने जो अपनी आखो से देखा, उस पर उसे विश्वास नही हुआ।

हडमानिय को ता उसन डाटकर घर से बाहर निकाल दिया और कुजडी की कमर पर दो जोरदार धौल जमाय कि उसका सास ऊपर चढ गया। वह कुछ क्षण रो नही सकी। फिर उसने एक आतनाद-सा किया।

रुपाली न फिर उसके बाल पकडे और उसे बेदरदी स खीचते हुए कहा, 'हरामजादी! यह कुलखण तून कहा से सीखे? पट मे सो बाहर

निकली नहीं और हाथ पांव मारने लगी।'

कुजडी रो रही थी। वह सुबक रही थी। कभी-कभी सुबकन म उसका सारा शरीर हिल जाता था। उसकी बडी बडी आखा म से आसू निकल कर मल गाता पर लकीरें बना रह थ।

और रूपाली के तन-बदन की आग और भडक रही थी। उसने उसकी बायी जाघ पर चिकोटी काटी, 'खानगी कहीं की ! बता, यह काम कहा स सीखा ? ये हरमजदगिया तेरे खून मे आयी कहा से ?'

चिकोटी काटन स वह फिर चिल्लायी, 'नहीं मा ! छोड द मुझे "

'बता, यह सब लखण तून कहा स सीखे ?'

उसन रोते हुए कहा "बताती हू, बताती हू। मुझे मार मत मैं तुझे हाथ जोडती हू।'

और कुजडी ने जो बताया, वह इस तरह था—

कल दोपहर को कोटवाल आया था। उसन रूपाली का दरवाजा खटखटाया।

अरे, कोई है !'

रूपाली ने दरवाजा खोला।

आगन्तुक ने फटे-पुरान कपडे पहन रखे थ। उसके बाल बडे बडे थ और उनम स तेल चू रहा था। उसकी जुल्फें बडी बडी और मूछो स मिली हुई थी।

पा लागी कोटवाल साहब !

'ले आखा ! ' उसन रूपाली क हाथ मे चावल के दान रख दिय।

फिर कोटवाल ने नाक पर हाथ रखा और कहा, 'कागले सा काला काला है मतवाला।

इस बीच कुजडी आ गयी।

कोटवाल जै बाबा की कहकर चला गया।

कुजडी गभीर हो गयी। उसके ललाट म बल पड गये। वह सोचने लगी कि जब जब यह विचित्र आदमी आता है तब-तब मा और बापू रात को गायब हो जाते हैं।

रूपाली ने तल्लीन-सी कुजडी से पूछा, "अरी ! क्या टुकुर टुकुर देख रही है ?

'कुछ नही।' कुजडी यह कहकर साल म चली गयी। उसन ढोलक उतार ली और बजाने लगी—

धिनक धिन धिनऽऽ

धिनक धिन धिनऽऽ

रूपाली न उसे टोका "कुजडी ! अभी अपनी ढोलकी बद कर।"

कुजडी बाहर निकल गयी।

ढोली-बास के बाद ब्राह्मणो का 'बास' पडता था। उसम लम्बी चोटी, गोपद चोटी और जनऊधारी ब्राह्मण रहत थे।

हालाकि वह ढोलन थी। नीच जात की थी, ब्राह्मण उसे अछूत समझते थे, फिर भी उसकी एक खास सहेली थी—पदमण ! पदमण जोहरी। जाति की शुद्ध ब्राह्मण।

कुजडी जब जब ऊबती तो भागकर उसके पास चली जाया करती थी। हालाकि कुजडी का उसके घर मे घुसने की इजाजत नही थी इस लिए वह घर के बाहर बनी चौकी पर खडी होकर पुकारती, 'पद्मण अरी ओ पदमण !

पद्मण बाहर आ जाती। फिर दोनो बठकर बात करती।

पद्मण आख का सकेत करके कहती, 'तू हनुमानजी के मदिर के पिछवाडे चली जा मैं आ रही हू।'

और वह चली जाती।

पद्मण पहुच जाती। फिर दोनो सहलिया गलगुथिय खेलती गीत गाती। कभी कभी उन दोनो के बीच पद्मण का भाई आ जाता था। वह कुजडी को कहता "मैं भी खेलगा।

"तू क्या छोरी है जा 'गडडे खेलेगा ! हटमान' यह खेल छोरियो का है।

वह कुजडी का हाथ पकडकर एक ओर ल जाता। कहता 'हम धणी बहू (पति पत्नी) का खेल क्या नही खेलें ?"

"छि शरम नही आती !

"इसमें शरम की क्या बात है?"

"नहीं-नहीं, मैं नहा लेनूगी।'

"जदि तू नहीं खेलगी तो मैं अपनी मा को जाकर कह दूगा कि म्हने दाना न साथ-माय 'जानिय' खाय!'

वह जाल का वृक्ष था। उसमें छोटे छोटे मोतियों की तरह फल लगते थे।

पधाण उसकी धमकी से डर जाती थी। वह जानती थी कि मा को जस ही यह मालूम पड़ा कि उसने कुजड़ी का जूठा खाया है, वैसे ही वह मार मारकर उसके शरीर में जामू (चकत्ते) उपाड़ देगी। वह इस प्रसंग को लेकर कई बार उसकी निर्मम पिटाई कर चुकी थी।

'कुजडी खेल ले वरना यह नकटा मुझे मार लगवा देगा।"

लाचार कुजड़ी हड़मान की बहू बनती और पधाण नणद!

वह घूघट निकालकर आती—झूठ मूठ का घूघट! हड़मान खुश होता। उसका लाड-कोड करता। उसे नहीं मालूम कि इस सम्बन्ध सही अर्थ क्या होता है?

खेल-खेल होता है, और खेल-खेल में अपने जुड़ाव होते हैं।

उन जुड़ावों की अनुभूति आत्मा को स्वतः ही होने लगती है।

एक दिन हड़मान ने कहा, 'कुजड़ी! तू कित्ती चोखी और फूटरी है। मेरा जी तो चाहता है कि मैं तुझ साचली अपनी बहू बना लूं।'

कुजड़ी ने उसको झिड़कते हुए कहा, "हड़मान! तेरी तो खोपड़ी खराब है। कहां मैं ढोलण और कहां तू बामण! 'मतिमारिये' को जात से बाहर कर देंगे। आगे से कोई बामण तेरे साथ खायगा पीयगा नहीं। तेरे घरवाले भी तेरे साथ नहीं जीमेंगे।

बात खरी थी।

पर हड़मान के अन्तर्लोक में कुजड़ी का रूप यौवन और उसकी शहद सी मीठी वाणी घर करती गयी।

कुजड़ी भी अनजाने में अपने में उसके प्रेम बीज को अंकुरित कर रही थी।

और जब जब कोटवाल आता था तब-तब उसके दूसरे दिन वह

हडमान को लेकर सन्नाटा म खो जाती थी।

आज कोटवाल आया था। कुजडी के मन मे चिनगारिया-सी जलन लगी। त्रिया तरह मरद अठारह। वह मन-ही मन मुसकायी और वोली —हडमान तो चौदह का ही है। अधूरा मरद।

कुजडी का नीद कहा ?

वह अपनी मा पर अपनी दृष्टि जमाय बठी थी। हीरू घर आया ही नही था। रूपाली वार-वार आकाश की ओर देख रही थी। वह आकाश के तारा से समय का पता लगा रही थी। उसने देखा 'किरत्या' खेजडे की दायी ओर है।

रात के ग्यारह वजे हागे।

वह उद्विग्न हा गयी। उसने अपन पति को बुरा भला कहा।

गुरु जी नाराज हाग ?' उसने मन ही मन भयभीत हाकर कहा। उस मे टूटन और भय व्याप्त हो गया।

आखिर वह घर स निकल पडी।

कुजडी न उसका पीछा किया।

चादनी रात थी। दानो चुपचाप पगडडी पर जा रही थी।

ढाणिया के वास के आगे वडा तालाव पडता था। उस तालाव के पीछे जगल था। उस जगल मे काले पत्थरो का बना हुआ एक खडहर था।

रूपाली उसम घुस गयी। कोटवाल ने नाराजगी से पूछा, 'क्या वात है, टालण ? तग धणी कहा है ?'

"वह राम का मारा मर गया। दोपहर का घर स निकला हुआ है। मैन तो वडा इतजार किया पर वह आया ही नही। उसे गुरु और वावा का कोप नही है।

वहा दस स्त्री पुरुप पहले ही उपस्थित थे। 'पाट' पूरा कर दिया गया था। सवा हाथ का सफेद कपडा जमीन पर विछा था। उस पर लाल कपडा। उसके ऊपर खारक, दाख, मिश्री, वादाम और पिस्ता यानी पचमेवा। सातिया। उसके बीचोबीच रामदेवजी का घोडा। दोना आर सूरज-चाद। रामदेव का पगलिया। चूरमे का प्रसाद।

कुछ दर तक भजन होते रहे। फिर सभी औरता ने अपनी-अपनी काचलिया साल दी। कोटवाल ने उन्हें मिट्टी के कुडे म डाल दिया।

गुरु ने मत्र का जप करके एक काचली निकाली और उमन अपनी इच्छानुमार एक व्यक्ति को दे दी।

जिम औरत की काचली थी, वह उस पुरुष के साथ एकात म चली गयी।

काचलिया पथ की आठ पाश स मुक्ति का साधना ! पाश विमोचन का आह्वान !

लोक, कुल मान-सम्मान, भय, परकीय-स्वकीय, घृणा, जुगुप्सा—सब बधनो से मुक्ति वाममार्गिया की साधना का एक लघु रूप !

जिस जाड मे वे स्त्री पुरुष गये थ, वह कुजडी वही वठी थी। चादनी का उजास। सभी सम्बन्धा के अर्थों से कट नर नारी।

आह्वान, क्रिया।

कुजडी दखती रही। अगारे उसके भीतर चटकने लग। इम तरह उस की मा भी पराय मद के साथ ? और उसने दखा कि उमकी मा रूपाली ही नही, हर स्त्री अपनी अजुरी मे भरकर कुछ लायी और कटोर म डाल दिया।

क्या डाला वह नही जानती।

वस, इतना जानती थी कि उसी कटोरे म से प्रसाद दिया जा रहा है।

प्रसाद मे मिश्री मिला दी गयी।

कोटवाल न प्रसाद का कटोरा लेकर कहा 'मैं गुरु के हुक्म से 'वाणी' फेर रहा हू।

और रूपाली के पास आकर बाला—

हुक्म

रूपाली न जवाब दिया—

हडमान को।

आग्या

ईसर को।

दुवो—
चारा जुग मे हुवो।
चौकी
हिंगलाज की।
परमाण
सत चढ़ै निरवाण।
थेगी
अलख रा घर देखो।
यह कौन सी निर्वाण पद्धति है? यह कौन सा बीसानामी पथिया का मुक्ति माग है? पर यह सही है कि जो जो स्त्री पुरुष अपने घर लौट, उनम कोई हीनता नही, कोई पाप भावना नही कोई अपराध भावना नही।
रूपाली की आकृति पर सुख सताप की गहरी भावना थी पर कुजडी के राम रोम म अगारा की दहक!
जब दूसरे दिन रूपाली दोपहर को व्रत मे गाने चली गयी तो कुजडी हडमान को पकड लायी। वह उससे बोली, "हडमान! तू घर आ जा!'
"क्यू?
'खेल खेलेंगे!'
"पर घर म क्यो?
"मा नही है।"
और हडमान चला आया।
कुजडी ने इस प्रकार बता दिया कि उसने यह गदा काम कहा से सीखा।
रूपाली की जबान बद हो गयी। उसे लगा कि उसके गुरु की जाना और आठ पाग की मुक्ति ने उसे अत्यत ही कटीले बधनो मे बाध दिया है। उसकी बेटी के सामने एक नया सम्भ खोल दिया है—यह गध का नया सदम!
उसने सुबकती हुई कुजडी को बाहा म भीच लिया "लाडी! तू किसी से मत कहना। हम तो गुरु के हुक्म से यह सब करते ह। पर तू

अब ऐसा मत करना यह पाप है।"

वह अपनी बेटी को पुचकारकर चली गयी। उसे जाना ही था। इच्छा अनिच्छा से जहा पुनर्जन्म हुआ है, वहा ढोलण का जाना ही पडता है।

यह पापी पेट की लाय (आग) है न? बडी अजीब लाय है। दोनो समय बुझाओ और यह निगोडी दोनो समय फिर जल जाती है।

रावनिया ढाली गली म गा रहा था—

डेडरिया तज द छिनरिय री आसा र
इण छिनरिय म दुखडो घनेरा
कर ले समन्दरा म वासा र डेडरिया
आ तेरी सुदर काया मिट्टी म मिलसी
ऊपर उगे तेरे घासा र

रूपाली के हृदय मे करुणा का उद्रेक फूट रहा था। वह भर भर आयी।

रूपाली एक आरोपित जीवन जी रही थी। सारी दिनचर्या जसी की तैसी चल रही थी। पर रूपाली को लग रहा था अब उस दिनचर्या को चलान म कोई मजा नही है कोई आनद नही। अब तो वह यत्र बन गयी ह—मशीन जो सुबह से शाम तक अपनी आत्मा के विरुद्ध चल रही है।

उसकी आत्मा म बस एक ही बात थी 'इस कुजडी को क्या हो गया है? वह लुगाई मद के सम्बधो को अभी ही जान गयी है। मोटयार (जवान) होने के पहले मोटयारो के लखण करने लगी यदि मैंने इसके चारो ओर काटो की बाड नही की तो छोटी मौडी वगी हाथ स निकल जायगी। मेरा मूडा (मुह) काला कर देगी।

वह क्या करे?

खसम तो उसका किसी काम का नही। वह तो केवल रोटियो का ठाव (बतन) है। खाता है हगता है पीता है और सोता है। चाह उसकी लुगाई अपना जीवन लुटाकर उसकी दारू की बोतल को लाय, इसकी उसे कोई चिंता नही।

फिर वह किस से सलाह मशविरा करे ? बिरजी से ? अरे, नहीं-नहीं ! उसे कहना और सारे मुल्क को कहना बराबर है !

वह हताश-सी होने लगी। उसे समस्त दिग्दिगंत में असहायता नजर आयी। बेचारी अपने मन को समझाती रही। अचानक उसकी स्मृति-पट पर एक नाम आग की लकीर की तरह खिंच गया—रावतिया ! रावतिया काका !

उस दिन तपती दोपहर में वह रावतिया के पास गयी। पाँ लागी कर वह गंभीर मुद्रा बनाकर बैठ गयी।

"क्या बात है, लाडी ?"

"काका ! मैं तुम से एक राय लेने आयी हूं।" उसने टूटे हुए स्वर में कहा।

"बोल जितना जानता हूं, उतना तो बता ही दूंगा।" रावतिया अपनेपन से बोला।

"छोरी के लिए कोई छोरा ढूंढो न। वह चंवरी चढ जाय तो चिंता मिटे।

"हां, रुपाली मां बाप का जमारा (जन्म) ही बेटी को विदा देने के बाद सुधरता है।"

"उसके लिए टके पैसे भी चाहिएंगे।"

"हां, गिगरी (बेटी) के नाक-कान तो ढकने ही पड़ेंगे। एकदम नागी भूखी तो नहीं निकाली जा सकती।"

"तू कोई छोरा देख। जब 'गजानंद' का नाम लेकर ब्याह का काम शुरू होगा तो सब ठीक ठाक हो जायेगा।"

"देखूंगा" रावतिया ने बीड़ी सुलगा ली। उसका लम्बा कश लेकर उसने ढेर सारा धुआं छोड़ा और कहा 'एक छोरा मेरे ध्यान में है।'

"कुण सा ?"

जानकिया का छोरा गुलजिया ! छोरा गाने-बजाने में हुशियार है। दो जून रोटी तो डाल ही देगा। तेरी कुजड़ी राणी बनकर भले ही न रहे पर रोटी भूखी भी नहीं रहेगी।'

"गुलबिया छोरा तो ठीक ही है।" उसने अपनी राय जाहिर की।

'बातचीत करू ?"

करो।

रूपाली वहा से माडकी के यहा चली गयी। उसने उसे दो तीन बुलावे भेज दिय थे। एकदम टूटा फूटा मकान। मिट्टी के सारे बतन भाडे। उसके घर म ताब-पीतल का तो कोई लाटा-थाली भी नही थी। चारा आर पूर चीथडे पडे थे। जितनी भी रलकिया और गूदडिया थी सब-की सब म बास आ रही थी। कीडे मकोडा की तरह उसके नग धडग बच्चे जहा तहा पडे थे।

क्या बात है मोडकी ?"

'दो कटोरा धान चाहिए। कल रात स चूल्हा भी नही जला है।"

"इस तरह चूल्हा कितने दिनो तक जलाये रखेगी ? चार चार टाबर (बच्चे) ह तर कमाई का कोई साधन नही। तरा चूल्हा तो ठडा ही होगा।"

'पण मैं करू क्या ?"

तू पचायत बठा। पचा स विनती कर कि वे तुझे रोटी-कपडा दिलायें। पच परमेसर होता है।

मैं बहुत निरबल हू।'

अरे, तू निरबल नही हाती तो तरा धणी उस खसमखावणी 'मिरचटी' के यहा थाडे ही चला जाता। अपने को इतनी निरबल मत बना। मोडकी, पचा का दरवाजा खटखटा। उनस न्याव माग।'

माडकी की आखें भर आयी।

गवरिय का बापू तो बरतन भाडे भी उठाकर उस राड को खिला आया। मुझे तो जीत-जी मार दिया। चार चार टाबरा को पालू तो भी कस ?"

"मैंने कहा न, पचा के सामने रा, उनको अपन आसू दिखा।

क्या तू मेरी मदद नहा कर सकती ?

रूपाली गभीर हो गयी। एक पीडा की लहर उसके भीतर सनसना गयी। बोली, 'सबको अपनी अपनी पडी है। सबके बरतन बोलत रहत ह। फिर कहावत है कि खुद मरे बिना सुरग नही दिखता।'

मोडकी से फिर नही वोला गया।

रुपाली चल पडी।

रास्ते म चादकी मिल गयी। रुपाली को देखते ही कली की तरह खिल गयी। वोली, "कहा से आ रही है, भायली ?"

"माडकी के कन गयी थी।"

चादकी न चौककर कहा, 'तुझे बुलाया होगा ? वह रडार भी जबरी है। चाहती है कि काई कौर को मसलकर मुह मे दे तो वह खाए। यह कसे हो सकता है ?'

"मैंने भी उसे यही समझाया था कि तू पचो का दरवाजा खटखटा। पचायत अपने आप तेरा कोई परवध करेगी।'

'उसे ऐसा ही करना चाहिए।' चादकी ने उसकी वात का समथन किया और उसने प्रसग को वदल दिया, 'रुपाली !"

"हु !"

'एक वात कहू ?"

'कह।'

सच-सच जवाब देगी ?"

"तुझे मेरे पर भरामा नही ?"

"भरोसा तो है।"

फिर पूछ।'

'तू उदास क्यो है ?"

नही तो।"

"देख तू मेरी पक्की भायली है। तेरे मेरे बीच मे धरम है। जदि तू मुझे अपना दुखडा नही रोयेगी तो भला फिर तू किस के सामै रायेगी ?"

तू मेरी सौगन खाकर कह कि किसी को कुछ भी नहीं कहगी।

'तेरी सौगन।'

रुपाली ने कुजडी और हडमान के सम्वधा की सारी वातें वताकर कहा मरी तो आखो की नीद उड गई है।'

चादकी न देखा, चारो ओर तेज धूप सोयी पडी थी। कुत्ते लम्वे लम्वे सास ले, रहे थे। वे कीचड म वैठे हुए थे। वकरिया छज्जो के नीचे

खडी थी।

वरजी ढालन के घर से आवाज आ रही थी—

रामा सामा आवज्यो
कलजुग अयो करड
अरज करू अजमाल जी रा छावा
हला सुणज्यो जरूर

वरजी की बडी लडकी गा रही थी शायद। पर चादकी तो गभीरता की अनत गहराइया म खो गयी। अपने गले मे पहन हुए बाबा सतराम क ताव के बन मादलिय (तावीज़) को व्यथ ही छू रही थी। सहसा उसक मिस्सी किय हुए होठ पर एक व्यग्य भरी मुसकान थिरकी। बोली, "जसा रुख (पड) वसा छौडा (छाल)! है ता शायद कुवर जैतसिंह की ही छोरी! तू तो आज भी उसके लिए जागण है और वह तेरा रूप रस पीकर कसी नजर फेर गया। तू तो उस देवता मानन लगी थी। उसके लिए गैली हो गयी थी पर वह चरित्तर का बिलकुल ही अच्छा नही था। जगह-जगह घानी भाडता फिरता था। और क्या न भाडे? बडा आदमी था। ठाकुर। छत्तरी। अरी पगली! य जितन भी छत्तरी, बामण, बनिय होत है वे गरीबा की जोरू को भावज नही समझते बल्कि वे गरीब की बेटी का अपनी बहू ही समझत हैं।' चादकी न घणा स अचरचाकर कहा, 'मुझे ता इन पर बडी रीस आती है। सोचती हू कि ईसर मुझे कुछ एसा बल द कि मैं इन कमीना की बहू-बेटिया को भरे बाजार बेचू। तब इनकी अक्ल ठिकान आय। जिसकी फटी नही बियाऊ वो क्या जान पीर पराई! ठाकुर को ता ईसर न दड दे दिया और '

"तू अपना भाषण तो बद कर और बता कि कुजडी के हाथ पील कैसे करें? रूपाली न अरुचि मे कहा 'जो हो गया है वह अब नहा मिटने का। उसकी पीड मैं भोग चुकी हू और जनम भर भोगती रहूगी। अपन-अपन नसीब! उसका लिखा कौन मिटा सकता है? पण कुजडी ठाकुर की बेटी है, यह मैं दावे स नही कह सकती।"

चान्दकी का विद्रोह पूववत था। वह आत हो उठी। बाली, "फिर तो मैं बमाता (भाग्य लिखनवाली) को भी घूमखार कहूगी। राजा के वट का

भाग राजा की तरह लिखती है और डोन-चमार का डाम चमार की तरह वैनडी ! सभी नोग गरीवा को ही सतात ह।"

रुपाली भुभला उठी। वाली अव तू अपनी यह चख चख वद क ग्रार काई ग्स्ता वता ताकि छाकरी को ठिकाणे लगाऊँ।

'तरे ध्यान मे कोई छोरा है ?'

'एक ह।'

कुण सा ?

"गुलविया !"

"अर, वह जानकिये का वटा ?'

"हा हा, वही, वही। उमन उतावली से अपने

कहा।

"मैं कल ही उसमे वात कर लूगी।" चादकी न कहा, "वह गाव का रहन वाला है, यह वात पहले साच ले। तेरी कुजडी का उस छाट स गाव मे मन लगेगा या नही ? अलवत्ता यह ता वडा ठिकाणा है।'

"तू वात कर।'

"जदि उन्होन 'हा भर ली तो वे वारात अपने गाव से यहा लाएग।" चादकी ने ललाट म वल डालकर कहा 'कुछ खरच ज्यादा पडेगा।"

'ऊखली म सिर देन के वाद मूसल से क्या डरना!' रूपाली ने लम्वा सास लेकर कहा 'खरच तो विरतवालो से ही मागूगी। अपने कौन सी खेती वाडी या काई दूसरा धधा पाणी है। अपनी तो अन्नदाता है ढोलक। जहा ढालक वजाती हू, वही म लाग' लूगी। गणेस भगवान सव ठीक करेंग।'

"फिर मैं आज रात ही उससे वात कर लूगी।" चादकी ने निश्चयात्मक स्वर मे कहा, "आज उसके यहा रामदेवजी का जुम्मा (जागरण) है। मैं भी जाऊगी। सव वातें तय कर लूगी।

'भगवान तरा भला करें !" रूपाली न कहा "मैं अव वडी चिन्ता म रहती हू। छारी ता अपनी उमर से भी चार चदा ज्यादा निकली। वस, अव ता व्याव करके मुगति पाना चाहती हू।'

चादकी स्नेह-भरे स्वर म वाली, "गिरस्ती से कभी भी छुटकारा

नही मिलता। यह एसी फास है कि सास टूटे ही टूटेगी।"

"मैं कल तुझे अडीकूगी।

"चोखा।' दोना ने अपनी-अपनी राह ली।

कुजडी का ब्याह तय हो गया।

वसत पचमी के फेरे थे।

रूपाली ढोलक ले-लेकर अपने यजमानो के घरो के दरवाजे खट-खटाती थी और उनसे अपनी बेटी के ब्याह की 'लाग' मागती थी। कोई भेंट देता यानी आइना, घाघरा और काचली। कोई नारियल देता। कोई गुड देता इस तरह वह अपना हक माग रही थी। उसमे उसकी सहायक थी—चादकी। कभी-कभी चादकी उसके सग दिनभर रहती थी।

इस तरह शादी की तयारिया हो रही थी। हीरू भी यकायक सचेत हो गया था। जसे उस दारूबाज और निकम्मे मे भी यकायक दायित्व का बोध जाग गया हो। वह खुद बिना रूपाली को कह-सुने ढोलक लेकर निकल जाता था। अपने सेठो और ठाकुर के आगे अपना पल्ला फैलाता था 'माई बाप! छोरी के हाथ पीले करने हैं, उसे ब्याव कर विदा देनी है हम लोग तो आपके ही मगत(मागनेवाले)हैं। आपसे ही मागेंगे। जय हो अन्नदाता की!

रूपाली उसके इस परिवर्तन से हैरान थी। वह सोचती रहती थी—जोरू के टुकडो पर पलने वाले इस माणस को क्या हो गया है उसमे कोई भूत-पलीत घुस गया है क्या?

उस दिन हीरू बडी देर हुए लौटा। रूपाली उदास उदास और अनमनी बैठी थी।

कुजडी खो गयी थी पर वह सोत-सोत सुबक रही थी।

हीरू ने अपने साफे को उतारा और गमछे से पसीना पोछकर कहा, यह कुजडी इतनी बेगी कैसे सो गयी?'

'मैने इसे खूब डाटा और दो झापड भी लगाये!"

'क्यू?' हीरू ने गभीरता से कहा।

दीया जल रहा था। उसकी कांपती हुई रोशनी।

"मगर बात क्या हुई ?"

रूपाली ने हीरू को देखा। उसे लगा कि हीरू सम्बन्धों का मरम समझने लगा है। वह एकाएक उसका पति बन गया है। उसमें एकाएक समझ आ गयी है, बुधि आ गयी है। वह कुजडी के प्रसग को टालती हुई बोली 'तुझे क्या हो गया है ?"

"मुझे ?' वह चौंक पडा।

"हा, तुझे!'

मुझे तो कुछ नही हुआ।'

'अरे! तूने दारू पीनी छोड दी है। तू घर का ध्यान रखने लगा है। तुझे अपनी बेटी के ब्याव की चिंता है। यह सब तुझे क्या हो गया है ?" वह आश्चय में डूबकर बोली।

"यह सब बाबा रामदेव का चमत्कार है।" उसने सामा य बात कही पर रूपाली को उस पर विश्वास नही हुआ। उसने उसे कुरेदा "ऐसा नही हो सकता! जरूर कोई और बात है। कुजडी के बापू! तुझे मुझमें कभी भी लाग नही रही। तुझे सदा लाग रही—दारू से, हराम की रोटियो से अपनी अऊतई (आवारगी) से। फिर तेरा मोह हमारी ओर क्यों जागा ?'

हीरू ने देखा—रूपाली की आखें डबडबा आयी है। उसके चेहरे पर ममोलिये जीव की सी अत्यन्त कोमल उदासी पसर गयी है। वह अपराधी की तरह गदन झुकाकर बोला, 'मै आज तुझे सच-सच ही कहूगा चाहे तू मेरे सिर पर जूते ही मार देना। कुजडी की मा! इस दारू की लत ने मुझे इतना नीचे गिरा दिया था कि मैं तुझे क्या बताऊ ? एकदम कमीना बना दिया था। पापी बना दिया था। एक दिन मेरे पास दारू नही थी। मैं बेचैन हो गया। उसके बिना तडपन लगा। हाथ-पाव टूटने लगे। एक अजीब-सा खालीपन भर गया। मन बार-बार उचाट होने लगा। मुझे कुछ भी चोखा नही लग रहा था। मेरे पास पैसे नही थे। कई जगह भीख तक भी माग आया पर उस दिन किसी ने मुझे फूटी कौडी भी नहीं दी। अजब मन दसा' थी। सोचा—थाली-कटोरी चुरा लू ? पर कुजडी की मा,

मैं तुमसे डर गया। फिर मैं ठेके पर गया तो ठेकेदार कलाल ने उत्साह से कहा—'तुझे पूरे एक महीने तक मुफ्त मे दारू पिला सकता हू।' यह सुनते ही मेरी बाछें खिल गयी। डूबते का तिनके का सहारा मिल गया।
कहा—पिला दे कलाल भाई, पिला दे तेरे गुन गाऊगा तेरी जूतिया चाटूगा। तुझे अपनी हथेली पर थुक्वाऊगा। वह मेरे नजीक आ कर बोला—तेरी छोरी कुजडी को मेरे घर के पिछवाडे के 'दानखाने में छोड जा।' मैं उसकी नीयत समझ गया। वह फिर बोला—'अरे! तू ठहरा ढोली। आज नही तो कल, तेरी छोरी गायगी नाचेगी ही तू मेरे सामने ही उसे नागी कर दे। मैं मजबूर था। लाचार था। कुजडी की मा! मैं कुजडी को उसके दानखाने पहुचाने के लिए घर आ ही गया। पर दुरभाग से तू घर मे थी। तुझ से मुझे बेहद डर लगता था।
मैंने कलाल को जाकर कहा—छोरी को तो तेरे पास फिर कभी ला दूगा अभी मेरी लुगाई घर मे है। तू मुझे दारू पिला दे।

कलाल काइया था। अपने कानो के पोपटो पर उगे हुए बालो को झटके के साथ उखाडकर वह वहयायी से ही-ही हसकर बोला—उधार करना मैं नही जानता। इतना याद रखो कि नगद दाणा बीद परणीज जाणा। अरे! पास मे पैसा हो तो काना बीद (दूल्हा) भी मान-सम्मान पा जाता है। फिर रपल्ली पल्ले तो रोई (जगल) मे भी चल्ले।'
वह साला नही माना। मैं छटपटाने लगा। आखिर मैं गुरुजी के पास चला गया।

गुरुजी ने मेरी सारी बातें सुनकर मुझे हिकारत से देखा। मैंने कुजडी का ले जाने की बात भी गुरुजी को बता दी। उनके सामने कूड (झूठ) बोलने का साहस मुझमे नही हुआ। उन्होने मुझे कौन-सी नजरो से देखा मैं नही जानता, पर इतना जानता हू कि उसमे कोई जादू टोना था। उसमे कोई जबरी बात थी। एक अनोखा खिचाव था। फिर उन्होने मुझसे कहा—तू आज से दारू नही पीयेगा! तू जो दारू पीयेगा तो गाय का खून पीयेगा। मेरे सामने हाथ मे पानी लेकर सौगन खा सौगन खा पापी, देखता क्या है? खा सौगन!'
'मैंने सौगन खायी। गुरुजी ने मुझे खाना खिलाया और वही सो

जान के लिए कहा। मैं वहीं सो गया। सुबह मेरी आंख खुली। मैं काफी स्वस्थ था। गुरुजी ने कहा— तूने दारू नहीं पी, इससे मरा तो नहीं।'

मैंने महसूस किया कि वास्तव में मैं नहीं मरा हूं। मुझे तो कुछ हुआ ही नहीं। माथा भी नहीं दुखा। उन्होंने मुझे फिर सौगन की याद दिलायी और कहा— पापी! तू कब तक अपनी जोरू की कमाई पर दारू पीयेगा? कभी तेरी जोरू और छोरी तुझे लाठियां में पीट पीटकर निकाल देंगी। माणस है तो माणसाई सीख। जिनावर मत बन।

मैं लगातार चार पांच दिन सांझ होते ही वहां चला जाता था। बस गुरुजी के उपदेश और रामदेव बाबा की किरपा से सब ठीक हो गया।'

रूपाली ने पहली बार अपने पति हीरू को गहरी आत्मीयता से देखा। उस दृष्टि में प्रेम का उफनता हुआ समन्दर था।

'मेरे तो दिन फिर गये।' रूपाली ने आह छोड़कर कहा।

हीरू ने पश्चाताप भरे स्वर में कहा— मेरी मत ठीक हो गयी है। अब मैं सूवें (सीधे) रस्ते चलने की चेष्टा करूंगा। तुझे जो दुख दिया उसके लिए तू मुझे छिमा कर दे।'

हीरू ने हाथ जोड़ने की कोशिश की। रूपाली के लिए इतनी दीनता असह्य हो गयी। वह तो बिखर गयी। जीवंत हो गयी उसकी नारी। उसने हीरू के हाथ पकड़कर अपनी ओर खींच लिये।

वह झर झर आंसू बहाने लगी।

हीरू उसके आंसू पोछते हुए बोला, 'मत रो मत रो, बावली। रामदेव बाबा की किरपा से सब ठीक होगा। सुख सांति हो जायेगी।'

"कुजटी के ब्याव के बाद रामदेव बाबा के सवा पांच सेर का गुड़ का चूरमा करूंगी।

उस रात दोनों काफी अर्से के बाद अजनबी से सच्चे आत्मीय बने।

अरी, सुन!'

' कोई उत्तर नहीं।

'तू क्या बोली (बहरी) है?

कुजडी ने दीये के उजास में अपने पति गुलविया की ओर देखा और दोनों कान पकड़ लिये। कान पकड़ते ही गुलविया हंस पड़ा।

'और गूगी भी है ?' उसने फिर पूछा।

कुजडी ने अपनी जीभ बाहर निकाल दी।

गुलविया उसके पास आ गया।

गाव का कच्चा मकान। कच्चे मकान की साल। साल में एक ही चरमराती खाट इसलिए कुजडी ने जमीन पर विस्तर बिछा लिया था।

यही थी कुजडी की सुहागरात की सजावट !

गुलविया उसके नजदीक आकर बोला 'अब तू अपना 'घूटा' हटा ले। ले मैं तुझे मुंह दिखाई की अगूठी देता हूं।'

गुलविया ने अपनी गुलाबी कमीज की जेब में से चादी की एक अगूठी निकालकर दे दी। फिर उसने एक झटके में उसका घूघट हटा दिया।

कुजडी ने हथेलियों में अपना मुंह छिपा लिया।

गुलविया ने उसके हाथ जोर लगाकर हटा दिये। पुस्तकों और चल चित्रों में वर्णित सुहागरातों के बिलकुल विपरीत थी उनकी सुहागरात !

जैसे नवले और साप की लडाई।

कुजडी ना-ना करती रही और गुलविया ने जबरदस्ती उसे विस्तर पर बिछा ही दिया।

गुलविया ने रनय होकर पूछा 'तुझे यह सब अच्छा नहीं लगा ?'

कुजडी ने अपनी करवट बदल ली थी। वह नाराज थी। उसने दूसरी ओर मुंह घुमाये हुए ही कहा *मुझे जोर-जबरदस्ती अच्छी नहीं लगती।*

तू ज्यादा नखरे करती ही क्या है ?

'नखरा क्या होता है, तू समझता है !

"अरी मैं ढाली हूं। गीत के बोलों से औरत को सजा दूं।

' ज्यादा सगी मत मार मुझे सोने दे।"

गुलविया में भी भरपूर आलस था। वह जम्हाई लेकर बोला 'दीया बुझा दूं ?'

'अरे जा रे जा जब दीया बुझाने का वगत था तो बुझाया नहीं और अब बुझाने की कह रहा है।'

फिर अपने-आप बुझ जायगा। जब तक तेल है, तब तक दीया जलता है।'

'तेरा तेल तो खत्म हो गया।

इस वाक्य के साथ कुजडी को हुडमान की याद आ गयी। उसकी जीभ पर मिठास तैर गया। उसने यह भी नही देखा कि इस चुनौती भरे वाक्य से उसके पति मे क्या प्रतिक्रिया हुई है।

कब दीया बुझा, उसे नही मालूम। जब उसकी आख खुली तो कोई गा रहा था—

जागिये व्रजराज कुवर
कमल कुसुम फूले
कुमुद वृन्द सकुचित भये भृगुलता भूले
जागिए व्रजराज कुवर

कुजडी ने कपडे ठीक किये। वह झाडू लेकर बुहारी लगाने लगी। ऐसा उसकी मा का आदेश था।

उसने अभी आधा आगन ही नही बुहारा था कि उसकी जेठानी अबीरी आ गयी। काली कलूटी और छोटी-छोटी आखो वाली। हाथो मे हाथीदात की मैली कुचली चूडिया। उनमे भी लोहे के तार के जोड। फटे-पुराने कपडे।

आकर बोली हाय बीनणी, यह क्या कर रही है? अडोस पडोस मे हमारी नाक कटवाएगी क्या? हाथ की मेहदी का रंग उतरा ही नही और झाडू हाथ मे ले लिया। छोड लाडी छोड

उसने हिचकारी देकर अपनी अस्वीकृति दी पर उसकी जेठानी ने उसके हाथ से झाडू छीन ली। उसे भीतर भेज दिया।

दिन गुजरे।

कुजडी ग्रामीण वातावरण मे ऊबने लगी। उसमे ऊब, घुटन और तनाव का जन्म हो गया। हालांकि वह एक बार पीहर जाकर भी आ गई थी और उसने अपनी मा के गले से लिपट लिपटकर कह भी दिया था, 'वे सब लोग कचरे है। महीनो नहाते ही नही। कभी कभी तो उसके (पति) डील से बास आती है। मुझे बडी घिन है। मा मा! मुझ

तू यहा बुलवा ले।"

रूपाली ने उसे दुलारकर कहा, "तू बकार जी उठा रही है। जी का जमाय रख। गुनबिया तो यहीं आ जायगा। एक-दो महीने के बाद शेखड़े की नाटकी चालू हो जायगी। रावतिया काका ने गुलजिया के लिए बात कर ली है। और कुजडी को यहा वापस आना पडा।

उसकी जेठानी उसे बडे ही लाड-कोड स रखती थी। एक दिन दोपहर के समय जब कोई भी मरद घर मे नहीं था तब उसकी जेठानी ने पुकारा, बीनणी ओ बीनणी!'

कुजडी थाडी देर बाद आयी। पूछा, 'आपने मुझे हला दिया?"

हा मैंने तुझे हला (पुकार) दिया। उसकी जेठानी ने कहा 'घर म कोई मरद नहीं है। आ, तुझे आज रगड-रगडकर नहला दू। मेरे पास एक सुगधित सावण है।

'सुगधित सावण है! उसने आश्चय से कहा कहा से लायी?"

'कहीं से लायी हू, तुझे क्या?' जेठानी उसके सन्निकट आकर बोली, आज तुझे नहला धुलाकर इत्ती फूटरीफरी कर दूगी कि मेरा देवर तुझ पर रीझ रीझकर पागल हो जायगा।

कुजडी तमक गयी। बोली 'अरे! आपका देवर क्या रीझेगा? उससे तो 'हिजडा ही चोखा। साची कहूगी तो आपको रीस आयगी पर जिनगी म मजा नहीं है।

जेठानी गदन हिलाकर बोली "छि छि! धणी को बारे म आछे मरद नहीं कहने चाहिए। बडा पाप लगता है। दोनों के 'जमार बिगड जाते हैं।

उसने उसका हाथ पकडा। खीचकर उसे अपने पास बिठाया। बोली, जो भाग म लिखा होता है वह मिलता है। दुग पर थूक देना चाहिए। ले नहा ले।"

कुजडी ने कहा, मैं अपने आप नहा लूगी। मुझे आपके सामने सरम आती है।'

"किस बात की सरम आती है।' जेठानी ने डाटा, तू भी लुगाई और मैं भी लुगाई। खोल कपडे।

कुजडी ना नू करती रही पर उसकी जेठानी अवीरी ने उस झटके स अपने पास बिठा लिया और उसके कपडे उतारने लगी।

"नही-नही, जेठानीजी, नही मुझे लाज आती है।"

उसने उसे एक भद्दी बात कही, "मेर देवर के सामन ? सुन मेरी दिराणी हम टोलणें हैं। हम तो पापी पट के लिए नाचना ही पडेगा। हमारी काई लाज नही लाज ता बडे लोगा का गहना होता है।

और उसन उसके कपडे खोल दिय। कुजडी तो लाज के मारे आखें मूद बैठी रही। कुजडी को बडा अजीब लग रहा था।

नहाने के बाद कुजडी न अपन को बहुत ही हलका अनुभव किया।

उसकी जठानी तो उस पर मुग्ध हो गयी—क्या रग है कुजडी का! हाथी के दात की तरह सफेद, रुई की तरह कोमल उसकी नजरा के सामन उसक अग-अग नाच रहे थ।

जेठानी न कुजडी को अपनी बाहा मे भर लिया। कुजडी का जी घुटन लगा। उसने कहा ' जेठाणीजी, यह आप क्या कर रही ह ? मेरा ता दम घुटता है। छाडिए न!

छोडने को जी नही चाहता!"

क्या ?

'तू मुझे बहुत चाखी लगती है। तुझसे ता परेम करन का जी चाहता है।

और जेठानी न कुजडी के लाख विरोधा के बावजूद ताबडतोड चूम लिया।

दोपहर ढलन पर जेठानी ओढना ओढकर निकल पडी।

वह राजसिंह दरोगा के पास गई। राजसिंह गाव के ठाकुर का खास आदमी था। उसका ठाकुर गोपीसिंह के यहा काफी आना जाना था। दरोगा स्वभाव का बडा रसिया था। जब कोई उसे चापलूसी भर शब्दा म ठाकुर कहता तो वह मूछा पर ताव देन लगता था और सम्बोधन कारी के प्रति दयालु हो जाता था।

उसका साधारण सा मकान था। उस मकान की बाहरी चौकी पर वह बैठा बैठा हुक्का गुडगुडाया करता था।

उसकी काया दुबली पतली थी। वैसा ही दुबला पतला उसका चेहरा था, पर दाढ़ी मूछों के कारण वह भरा भरा लगता था। उसके बाल बहुत छोटे छोटे थे और बीच मे गोलाकार की शक्ल म उस्तरा फिरा हुआ था। बडा ही विचित्र व्यक्तित्व था उसका।

वह घुटना तक की धोती और फतोई पहनता था। कभी-कभी फतोई पर बगलबडी। उसकी 'मोजडी' काफी भारी थी जो उसके लम्ब पावा मे फबती थी। उस पर गहरा तेल लगाया रहता था।

जब अबीरी राजसिंह के मकान पर पहुची तो वह सदा की तरह चौकी पर बठा था। उसके हाथ में हुक्के की नली थी। उसकी मोजडी चौकी के एक कोने पर पडी थी।

"मुजरो करू ठाकुर सा ?" अबीरी न नीचे भुककर कहा।

'कुण ? अबीरी !

"जी अन्नदाता !

'कैसे आयी ?

बस आपकी हाजिरी भरने।"

'अरे तू तो बेमतलब सूरज की तरफ भी नही भाके। बोल, साची बोल ?'

अपन ठाकुर सा कब पधारेंगे ?

'अरे वह ता यही पर विराज रहे हैं।

'फिर गाना बजाना कराइए ना ?'

राजसिंह न अपने मुह स हुक्के की नली का निकाला। धुआ छोडता हुआ वह बोला यहा की ढोलणो म कोई दम खम नही है। सब-की सब तेरे माजने' की है। उणियारें देखते ही भूख भाग जाती है।

अबीरी न अपने भद्दे चेहरे से अपना घूघट थोडा सा और हटाया। कहा, 'अन्नदाता ! इस बार मेरे घर म चाद का टुकडा आया है। जदि आप उसे देख लेंगे तो आपकी आख चुधिया जायेंगी। साख्यात अपसरा है। मैं तो समझती हू कि पूगलगढ की पदमण भी उसके सामने पानी भरती है।

तू तो ठीकरी (मिट्टी) को भी पीतल बताती है।' राजसिंह न

अपने मुह को अजीब तरह से हिलाकर कहा, "जब तक नजरो मे न देख लू तब तक तेरी बात नही मानूगा।"

फिर देख लीजिए।"

"कहा ?"

'आप यहा बुला लीजिए।'

"अरी बावली ! बिना थाली बाजे कोई ढोलणिया को बुला सकता है ?"

अबीरी को उसकी बात समझ म आ गयी। वह कुछ सोचकर बोली "फिर आप ऐसा कीजिए कि देवी के मदिर के पास जो झाडिया है वहा आ जाइए। मैं उसे छाणे चुगने के बहाने ले आऊगी। बत्तीस सागीडी (बहुत अच्छी) मिलनी चाहिए।'

राजसिंह दरोगा की आखो मे कांइयापन चमका। अपनी जीभ को होठो पर फिराकर बोला 'जदि तेरी दिराणी साचेली राणी हुई तो तुझे निहाल कर दूगा।"

और उसी पल एक घटना घटी।

एक घायल कबूतर पत्थर की तरह आकर अबीरी के सामने पडा। अबीरी डर गयी। उसके मुह से सीत्कार निकल गयी।

राजसिंह न आकाश की ओर देखा। नीले सूने आकाश मे एक बाज चक्कर मार रहा था।

'हाय राम मेरा तो कलेजा धडक गया। सास ऊची चढ गई।'

'तू जा, मैं कल दोपहर को देवी के मदिर के पास पहुच जाऊगा।'

उसने अटी मे से कुछ रेजगारी निकाली और उसके सामने ऐसे फेंकी जैसे कोई कुतिया के सामने रोटी का टुकडा फेंकता है।

अबीरी न सवेरे-सवेरे ही बाजरी की मोटी मोटी रोटिया बना ली थी। उसकी बेटी जाट चेताराम के घर से छाछ माग लायी थी। उस छाछ मे आटा डालकर 'कढी' बना ली थी। कढी हडिया मे बनाई गयी थी। कडछी पीतल की नही थी, लकडी की बनी हुई थी।

उसने जल्दी जल्दी काम निपटाकर धूप की ओर देखा। धूप सारे आगन म पसर गयी थी।

जबीरी का पति और देवर गुलबिया साल म बैठे बठे रोटिया खा रह थे।

कासी की थाली म कढी ले ली थी और हाथा म रोटिया। पीतल का लोटा पानी से भरा था। दोनो भाई एक ही लाट से मुह लगाकर पानी पी रहे थे।

अबीरी की दस साल की बटी फटी हुई ढालक का लेकर बजा रही थी। उसकी ताल ठीक थी। वह जिस अदाज से ढोलक बजा रही थी, उस देखकर गुलबिया ने कहा भाई ! आ पूरणी है न आगे चलकर बडी चाखी ढोलक बजाएगी।

"क्या नहा बजायगी ? ऊदरा (चूहा) के जायाडे ता बिल ही खादेंगे।

गुलबिया न उसका नजर म भरकर वहा, अरी पूरणी ! तुझे काई राग भी निकालनी आती है ?

पूरणी न अपनी पतली आवाज मे उत्तर दिया, "आती है।'

'कुण सी ? '

पणिहारी की।

सुना तो।

पूरणी शरमा गयी

सरमाती क्या है ? पूरणी का बाप जखिया बोला, ढोलण हाकर सरमायगी ता भूखी ही मरेगी। गा सानल गा !

पूरणी ने ढालक बजायी--

धिनक धिन

पणिहारी री ए ला

भरिया-भरिया समद तलाव

बाला जा

'राग तो फूटरी निकाली है।

रमाई म रोटी रखा रही थी दाना देवरानी और जेठानी।

पूरणा के गान पर अबीरी ने कुजडी की ओर दप से देखा, जैसे वह नजरा नजरा म बह रही हो, "कैसा मीठा सुर है? कोयल लगती है मेरी लाडेसर बेटी।"

कुजडी रोटी का टुकडा तोडती हुई बोली, "यह तो ढाली की जायाटी है। राग तो यह गरभ म ही सीखकर आती है।"

अबीरी ने आगन की ओर देखा। धूप आगन साल के ऊपर चढ गयी थी।

उसने झट स कुजडी से कहा ' जैगी बैगी रोटी खा। घर म कनीना (जनाने की सामग्री) नही है छाणे चुगने चलना है।'

दाना न खाना खाकर मीक की बनी आडिया ली। आडिया मध्यम नाप की थी। उनके नीचे ही ईढाणिया स्थायी रूप से सीकर लगायी हुई थीं। दोना ने पगरखिया पहनीं।

अबीरी ने घूघट निकाले ही कहा, "पूरणी के बापू! हम छाण' चुगने जा रही हैं।

"थोडी लकडिया भी तोड लाना।

"चोखो। अबीरी ने जसे याद करके कहा, 'हम केर भी तोड कर लायेंगी। साझ को साग भी हो जायगा।

"ठीक है।'

वे दाना निकल पडी।

वे दोनो गायो के आने-जाने के रास्ते से चलती रही। गोबर सूखा हुआ रास्ते म पडा रहता था। उसे उठा उठाकर वे आडिया मे डालती रहीं।

धीरे धीर देवी के मदिर पर पहुच गयीं।

वहा सन्नाटा पसरा हुआ था। झाडिया के बीच दो चार बकरिया 'पाला खा रही थी। तीन चार ढार चर रहे थे।

देवी के मदिर म धूल ही धूल बिखरी पडी थी। मदिर बडा था। उसकी फेरी मे वे दाना बैठ गयीं।

फेरी की दीवार ठोस नहीं थी। उसम बडे बडे कलात्मक सुराख थे।

दाना जनिया आढणे उतार उतारकर हाथ का तकिया बनाकर लेट

गयी।

अबीरी उसकी आर करवट बदलती हुइ बोली 'तुझे देखत ही मेरा 'हया हबाला खान लगता है। एक ही इच्छा होती है कि तुझे पकडकर भीच डालू रोद रादकर लुगदी बना दू।

कुजडी न अपनी कजी आखा को फलाया। भीत पर काले काले वडे चीटे रेंग रहे थे। बाहर सुगन चिडिया कभी कभी बोल जाती थी।

'ऐसे क्यू घूर रही है?'

"सोच रही हू कि आप बावली है।

"अरे! तुझे देखकर कौन बावला नही होता? तरी मदमस्ताई को दखकर ही मुझे लगता है कि मेरा देवर तेरी लाय नही बुझा सकता? वह तेरी तनतनाहट नही मिटा सकता?

दीवार पर रेत की परत जमी हुई थी। उसम तजनी उगली से गलत-सलत आकतिया वनाती हुई वह लम्बा सास लेकर बोली, 'आपका देवरिया तो चोखी तरह सोता भी नही।

अबीरी ने उसकी दुबलता को स्पश किया 'हालाकि वह देवर मेरा है फिर भी सच जवान पर आना ही है। तरी और मेरे देवर की जोडी राम सीता की जोडी नही ह।

'जो भाग मे होता है वही हाता है।

अबीरी झट मे भविष्यवक्ता बन गयी। वह बठ गयी। उसके भरपूर यौवन को नजरो से चूमा। फिर उसके सार शरीर पर हाथ फेरकर बोली "तेरा लिलाड (ललाट) बहुत चौडा है। उसमे तीन तीन रेखाए है। अपने पडितजी कहते है कि जिस लुगाई के लिलाड पर तीन-तीन लकीरें होती ह वह वडी भागवान होती है। इस दवी के मदर मे म जो कहूगी वह झठा नही हागा। तू एक न एक दिन जरूर किसी राजा की प्यारी बनगी।

राजसिह चोरी छिपे आ गया था। उसने सुराखा मे स कुजडी का अपूव रूप यौवन देखा। वह उसके सौदय पर मुग्ध हो गया। वास्तव म *यह ता अपसरा है पूगल री पदमण है।*

राजसिह ने मदिर की घटी को जोर स बजाया—टन।

पीतल की घटी मदिर म आगे पीछे लहराने लगी। अबीरी समझ गयी कि ठाकुर आ गया है। उसन कुजडी को देख लिया है।

वे दोनो चौक्कर उठ बैठीं। ओढने ओढे। तभी देवी की जयजयकार करता हुआ राजसिंह आया।

अबीरी और कुजडी दाना मदिर से बाहर निकल गयी।

फिर 'कर' नोडने जगन की ओर निकल गयी। कोई रेवड चराने वाला रेवडिया अपनी भेडा को लेकर जगल की आर जा रहा था।

उसने अपने कधे पर रखी लाठी म अपनी बहुत ही पतली 'रलकी' लटका रखी थी। उसकी बगल मे पानी का 'लोटडी' लटक रही थी। भेडो के आगे आगे एक बकरी चल रही थी।

उसके मुह म अलगोजा था। वह उसकी धुन पर गा रहा था—

ओ जी गोरी रा लश्करिया
घडी दोय लश्कर थामोजी, आढोला
पलक दोय लश्कर थामोजी, ओढाला

धूप की चादर आडे सन्नाट म अलगाजे का मीठा स्वर गूज रहा था। झाडिया खेजडा और मदिर की जीण शीण ध्वजा को स्पश करत हुए अलगोजे का गीत अमृत बरसा रहा था। कुजडी मोहित हो गयी। उस स्वर लहरी मे खो गयी। मुह से निकल पडा "वाह वाह! कितना सुरीला बजाता है!"

ओलूडी है।"

हा, यह ओलूडी (विदाई गीत) भी कितना दरदीला गीत है! काई राग से गाये तो चलने वाला के पाव थम जाय।

अबीरी न महसूस किया कि अलगोजे का स्वर जैसे-जसे दूर हाता गया बस वैसे शहद-सा मीठा कुजडी का स्वर उसके कण कुहरा म गूजने लगा—

ओ जी गोरी रा लश्करिया
घडी दोय लश्कर थामोजी ओढोला

विदा गीत।

दुल्हन जा रही है। उसकी सखिया लश्कर' को राकने के लिए कह

रही हैं।

कुजडी को मा बाप सखिया, घर-परिवार, बधु बाधव और हडमान की याद आ गयी आर वह गात गात सुबक पडी।

घर पहुचने के कुछ देर बाद ही राजसिह का सदेशा आ गया। सदेशा लायी थी कानी नाइन। अपनी रूप विकृति के कारण वह अपन पति द्वारा त्याग दी गयी थी। उस कोई भी प्यार नही करता था। पर उसन अपनी कठोर मेहनत के कारण एक छोटा सा घर बना लिया था। वह सार गाव वालो के काम-काज करती थी आर उसके एवज म वह उनसे धान, कपडा और कभी-कभी नकदी भी लेती थी। बिना लिय दिय वह किसी का भी काम नही करती थी। वह साफ कहती थी 'बिना मतलब अपन 'हाड कुण तुडवाए ? गाय घास से दोसती कर लेगी तो फिर खायेगी किसको ?

शोषण से मुक्ति के लिए सघर्ष की जरूरत होती है। कानी नाइन न उसक लिए सघर्ष सहा लागो की गालिया सुनी दा चार सेठानिया ठकुरानिया की लातें भी खायी। पर उसने साफ कह दिया 'म बिना दाम लिय काम नही करूगी। और अत मे लाग उसके साचे म ढल गय।

कानी नाइन का क्या नाम है मालूम नही, पर लोग उस काणकी कहत थे। शायद यह नाइन के विरुद्ध बडे लागा की घणा हा। चिढ हा। छोटी जात को कुछ भी नाम दिया जा सकता है।

नाइन ने आकर अजीरी को पुकारा "ए अजीरी जरा बाहर आ तो!

अजीरी घूघट नीचा करती हुई बाहर आयी। नाइन का देखकर राम राम की। पूछ बैठी, "कैस आना हुआ नायण जी ?'

'ठाकुर रा[illegible] [illegible] तुझे बुलाया है!

कब ?

अभी!

अभी मैं नहीं आऊगी। उन्ह मरी आर स अरदास करीजे कि मैं कल सुबह आऊगी।'

नाइन चाय पडी। बाली ', कल सुबह जाएगी ?

हा।'

अरी, आज ही डेरे मे गाना बजाना है। ठाकुर सा डेरे मे गये है। वे हा ना का जवाब लेकर आयेंगे, इसलिए तुझे बुलाया है।'

उसने कुछ दर सोचा। नाइन न तुनककर फिर कहा, "ढोलण जी! इत्ती क्या सोच विचार रही ह ? मौत के मूड ता नही जाना है। चोखी कमाई हो जायगी।'

"आप ठहरो। मैं अभी घर मे पूछकर आयी।'

वह सीधी अपने पति के पास गयी। उसका पति अफीम के नशे म ऊब रहा था।

"सुनो ता!" उसने उसे झिझोडा।

'क्या है ?"

'मैं ठाकुर राजसिंह जी के घर जाकर आती हू। अपने ठाकुर सा गोपीसिंह जी ने हम याद फरमाया ह। हुक्म उदली चोखी नही रहगी।'

"जा आ, जा आ!" उसन लापरवाही से कहा, "ठाकुर सा से मेरे लिए कुछ अमल (अफीम) माग लाना! भूलेगी तो नही ?

जवेरी भल्ला पडी। उसने हाथ को झटका दिया जिससे उसके हाथा की हाथीदात की चूडिया बज गयीं। नाक म सल डालकर बाली, 'अमल अमल अमल! इस अमल के पीछे तो तुमने अपनी जिनगानी खराब कर ली। न कमाना और न हाथ पाव चलाना।'

उसके पति न उसका हाथ पकड लिया। बोला "अरी गैली! अमल बुरी चीज नही है। वह तो गुणो की खान है। पेट को ठीक रखता है जुकाम मिटाता है आदमी की मरदानगी को बढाता है।"

पल भर का सन्नाटा!

उसने झटके स हाथ छुडाया। बाहर आयी। कुजनी चूल्हे म स राख निकाल रही थी।

नैनणी!'

'जी।

मैं ठाकुर राजसिंह के पास जा रही हू।

"क्यू ?"

"सायत डेरे म आज अपना गाना हो। जदि मामला पट गया तो महीन भर को धान का जुगाड हो जायगा।"

"पर '

उसन उसे झिडक दिया, 'ढोलण का गान बजान स कौन सी सरम! यह तो अपना धन्धा है। ईसर ने हम इसी काम के लिए बनाया ही है।

और वह फरदसरी बाहर निकल गयी।

राजसिंह हुक्का पीते हुए उसका इतजार कर रहा था। पीतल की बनी नली को हाथ मे लेकर वह पीठ-तकिये के सहारे बैठा था।

अबीरी को देखत ही वह सजग हुआ। उसके स्वागत म लम्बे स्वर म बोला, 'आ अबीरी आ, मैं तुझे भी उडीक रहा था। तेरी दिराणी बडी भागवान है। जदि वह चतुर हुई तो तेरे घर का सारा दलिदर दूर कर देगी।

'यह सब आपकी किरपा है।' अबीरी न सिर झुकाकर मुजरा किया 'अन्नदाता! गरीबो पर आपकी नजर होनी चाहिए। आप चाहे तो टोहिडे का गुलाब का पुसप बना सकते है।

पण हमारी सेवा तू क्या करगी?'

'जो आप हुक्म देंगे।'

फिर कहूगा। राजसिंह के हृदय पटल पर कुजटी की छवि उभर आयी। अपने होठो पर जीभ फिराकर वह बोला, देखो मुभ्म चाल मत करना। मैं चाहूगा तो तेरी दिराणी को राजा की जनानी ड्योढी म पहुचा सकता हू।'

"आप जो फरमायेंगे मैं कर दूगी।'

फिर तू अपनी दिराणी और ढोलक को लेकर आ जाना। डेरे के पीछे जो छोटी सी बारादरी है वही गाना बजाना होगा।'

'जो हुक्म '

अबीरी खुशी-खुशी घर लौट आयी। वर्षो के बाद उसे डेरे म जाने का अवसर मिला था। सोच रही थी मैं अपनी दिराणी के भाला मारते हुए जोबन के बल पर अपने घर की दलिद्दरता और दुखो को दूर करगी।

उसने घर में घुसते ही घोषणा की, "डोमणी! हमें आज रात डेरे चलना है। ठाकुर ने हमारा गाना कराया है।"

'केवल हमारा गाना कराया है!" कुजड़ी ने अपनी आंखों को अबीरी पर जमा दिया। एक अभिप्राय था उसमें कि केवल उन्हें ही क्यों बुलाया गया?

अबीरी छिनाल की तरह बहयायी सी बोली, "और यहां कोनी डोमणें हैं ही कुण? मव की सब राड़ें सुगनी (भद्दी) और बेसुरी।"

कुजड़ी ने गर्दन हिलाकर कहा, 'नहीं-नहीं मैं नहीं चलूंगी। मैं डेरा में होने वाले मुजरों को जानती हूं।"

"क्या तू नहीं चलेगी?" अबीरी के तौर बदल गये। उसकी कुरूप आकृति कठोरता के कारण विकृत हो गयी।

"मुझे डर लगता है।' उसने अपना सिर झुका लिया, "वहां तो गजब होता है।'

अबीरी बिगड़ गयी। उसने कुजड़ी को भला-बुरा कहना शुरू कर दिया। तब आवाज सुनकर अखिया आ गया। गुलबिया भी पड़ोसी के घर में आ पहुंचा। दोनों की समझ में नहीं आया कि अबीरी फूलझड़ी की तरह क्यों छूट रही है।

अबीरी बक रही थी, 'केवल 'माचे' तोड़ने से घर नहीं चलता। बिरन-वाड़ी में नहीं जायेंगे तो रोटी के लाले पड़ जायेंगे। यह जोबन का तम्बूरा टूट जायगा। यह नखरा जलकर राख हो जायगा। " वह अनाप शनाप बके ही जा रही थी।

अखिया ने पूछा, "क्या हल्ला मचा रही है? बात बता!"

"हां भौजाई, बात तो बता।" गुलबिया भी बोला।

अबीरी ने पांव को पटककर कहा, "आज ठाकुर सा ने रात को बुलाया है। यह नखराली कह रही है कि मैं वहां चलूंगी नहीं। मुजरे में जो कुछ होता है उसे यह जानती है। जानना तो और अच्छी बात है। हुसियार रहगी तो चार पैसे ज्यादा कमायेगी।"

गुलबिया भी इन दिनों बेकार था। वह भी कभी-कभी दारू पीता था, इसलिए दारू वाले के कुछ पैसे कर्ज हो गये थे। जेब बिलकुल खाली थी।

पावा की जूती भी फट गयी थी। सरवारा म कोई विद्रोह नही था उमत्र। उसन भी अबीरी का समयन किया, "यह त" साग जायेगी भौजाई मेरी। सीधी सीधी जायेगी तो ठीक है वरना मैं "मका चाटा पकडकर घमी ता ले जाऊगा। जे यह काम पस" नही थे तो किमी वामण-वाणिय के घर म जनम लिया होता।"

अखिया ने अपनी भारी आवाज म कहा "अरे! जायेगी जायगी। ढालण गायगी नही ता खायगी क्या? बीनणी जि" नही करत।

कुजडी आगन से उठकर साल म चली गयी। अबीरी एकदम काइया औरत थी। झट मे गुलविया का हाथ पकडकर बोली, "दवर मेरे एक दिन यह छिनगारी कहन लगी कि 'त" "वर दारू पीना है, अमन खाता है। मैंन जवाब दिया मरल का जायाडा ह, दारू ता पीयगा ही अमल ता खायगा ही। वस, तरी शिकायत करने लगी। तू जाकर अपनी इस "पाली गणगौर को समझा—ठाकुर सा वडे राजी हैं मारजडी (एक शराब) की पूरी भरी बोतल लाकर दूगी।

गुलविया ललचा गया। सचमुच अभाव आदमी का स्वभाव बिगाड दता है। गुलविया भी अबीरी की वाता के मम को समझ गया।

वह क्रोधित हुआ, सीना फुलाकर साल के भीतर गया। कडककर बाता 'यह तन क्या ना न लगा रखी है। फटाफट तयार होकर भौजाई के साथ चली जा।"

कुजडी न उस हैरानी से देखा। दुलार भरे स्वर मे वाली 'तू कसा मरद ह? जान बूझकर अपनी लुगाई को उल्ट रस्त डाल रहा है!"

'ढोली ढोलण के लिए यह रस्ता उल्टा नही, एकदम सुल्टा रस्ता है। नाचेगी गायगी नही ता पट कस भरेगी? इस गिरस्ती की गाडी को कसे चलायगी? दख ढोलण वेसी भखर न कर सामै आयी लिछमी ने लात न मार दुख उठायगी।"

कुजडी ने अपन मद गुलविया की ओर देखा। दोना की आखें टकरायी। गुलविया न मुसकरान की चेष्टा की। उसकी पीठ पर हाथ रग कर बाला, सुण अपना का तो यह काम करना ही होगा। अपनी ता यही राजी राटी है। कहीं रोजी छाडी जाती है?'

कुजडी न आहिस्ता से कहा, "ठीक है पर रात के गान नजान मे तो अणूती (अनुचित) बातें होती हैं। दारू नाच नगापन तू बरदास्त कर लेगा ?'

वह फस से हसा। बोला, "इसमे बरदाम्त करने की क्या बात है ? यह ता हमारी जात का धरम है। सब ढोली भी ता अपनी लुगाइया का भेजते ह। अर, परबतिये की लुगाई ने तो चौहान ठाकुर को मोह कर नया मकान बना लिया गले मे सोने का हार और हाथो मे सोने की बगडिया बना ली। और और परबतिया कितने ठाट से रहता है। रोज दारू पीता है। रोज धोती कमीज धोता है। एकदम फनाफ्न रहता है।"

कुजडी ने सोचा कि उसका मरद मरद नही, भडुवा है। उसमे पौरुष की जगह एक सम्पन्न जिन्दगी जीने की ललक है। उसे हडमान की याद हो आयी। वह कहता रहता था—'मैं तुझे धूप भी नही लगने दूगा। तू ठहरी ढोलण पण मैं तुझे बामणी से भी बेसी मरजादा से रखूगा। समझी ?'

"तू बण ठण के तैयार हो जा।"

"तू असती ढोली है।" उसने आह छोडकर कहा।

"बक बक बद कर और "

अबीरी ने बीच मे ही कहा, "तेरी यह 'बामणी मानी कि नही ?"

"आ रही है, भौजाई!"

' चलो, यह चोखा हुआ कि इसकी 'मत' बगी ही सुधर गयी।"

और साझ का धुधलका लालर-सी रात मे जैसे ही घुला, वैसे ही वे दानो अपने घर से निकल पडी।

घर मे निकलने के पहले अबीरी ने गुलबिया के कान मे कहा, "मरद का बच्चा है तो आज खूब छककर पीना, पसा न हो तो उधार ही पीना सुबह ता मैं तेरी मुटठी गरम कर दूगी, मेरे देवर।"

कुजडी मे वह उत्साह नही था जो ऐसे समय दूसरी ढोलनियो म रहता है। वह पूरी तरह सहज भी नही थी। प्रसन्न भी नही थी।

अबीरी ने उसके हाथ को दबाकर कहा, "दिराणी! मुझे तू गलत मत

समभना, मैं तेरे और अपन घर की भलाई के लिए कह रही हू। कितनी दलिदरता है ! भोर सिभा की चिता रहती है। जब ईसर न मौका द दिया है तो उसका क्यू न लाभ उठाया जाय ? कुजडी ! तू मरी दिराणी ही नही, भायली (सहली) भी है। मेरी बात मान, समय का लाभ उठा। समय हाथ से निकल गया तो फिर नही आयगा।"

कुजडी गभीर हो गयी। भुभलाकर बोली, 'जेठाणी जी ! और तो सब ठीक है पर मुझसे नागा नही हुआ जायगा। एक एक कपडा उतारना कितना दुखदायी होता है ?'

"कुछ दुखदायी नही होता।' उसने अपने घूघट को ठीक करके कहा, "जदि तू इन बाता पर सोचती रही तो ये बातें काटे ज्यू चुभने लगेंगी और इन पर नही सोचोगी तो जसा अपना मरद वसे पराये मरद मरद सब एक-से ही होते है। देते तो हमे रोटी-कपडा ही हैं।"

कुजडी ने सवाल किया, 'और धरम ?"

अबीरी हसी। बाली, 'धरम तो बडे आदमियो की चीज है। अपने लिए तो सबसे बडा धरम है—इस मादरकाढ पेट की लाय का बुझाना।"

कुजडी को उसकी बात मे दम लगा।

फिर भी वह अपने मन को सुदृढ नही बना पायी। उसे लगा—यह कसा धरम है ? यह कैसा न्याव है ? एक आदमी ठाकुर है जो मूछा पर ताव देकर पेट भरता है, दारू पीता है, मेहनत मजूरी किये बिना ढोलियो को तोडता है ? एक आदमी मेरा खसम है जो दाने दाने के लिए तरसता है, जो दारू की एक बूद के लिए अपनी लुगाई को नगी होने के लिए बाध्य करता है रोटी के लिए दूसरो की बाहो मे भेजता है। यह तेरा कैसा न्याव है भगवन !

यह कसा भेद भाव है ?

बाल बोल !

अबीरी ने उसके ध्यान को भग किया, "कुजडी, क्या साच रही है ?"

'तूने इतनी हिम्मत बधायी है फिर भी मन साथ नही द रहा है।

अबीरी न ठाकुर के डेरे को देखा। वह अधेरे मे डूबा हुआ था।

उसके बुर्जो पर नजर दौडाती हुई वह बोली, "पहले पहल एसा ही होता है। फिर तो मन चाहगा कि ऐसा बुलावा हर रात आये, हर रात झाली टके पसा से भरे मातिया से भरे।"

डेरे की डयोढी आ गयी थी।

प्रोल के आगे ही दरोगा राजसिह खडा था। मशाल जल रही थी।

राजसिह ने उनकी अगवानी की।

प्राल का छोटा दरवाजा खुला।

राजसिह दोना को लेकर भीतर गया।

कुजडी फिर साच रही थी—'ईसर को 'याव-कु'याव का आजकल पता ही नही लगता। या तो उसने खुद बडे बडे राजाओ ठाकुरा से 'सिरोपाव लेकर उ'ह जुलम ज्यादतिया करने की खुली छूट दे दी है या अब उसमे वह दम नहीं रहा जो राम किसन के युग म था। जदि ऐसा न होता तो भला ठाकुर गोपीसिंह मरे धणी को चोरी के झूठे इलजाम मे ब'द करता ?'

कुजडी की इच्छा हुई कि वह खुद गाव के ठाकुर के पास जाए। उससे पूछे कि उसके धणी ने उसके बाप का क्या बिगाडा है ? उसने उसका क्या कसूर किया है साथी मैं तेरे साथे नही, इससे उस बिचारे गरीब को क्या सताता है ?

हुआ यह था कि कुजडी उस रात अबीरी के साथ ठाकुर गोपीसिह की बारादरी गयी थी। उसने एक घूट शराब भी पी ली थी पर उसने अपने को निवस्त्र नही किया। ठाकुर और अबीरी ने बडी कोशिश की पर वे सफल नही हुए। ठाकुर तो उसके रूप यौवन पर विमुग्ध था। बाद मे उसने गुस्से म आकर गुलबिया का चोरी के आरोप मे पकड लिया।

घर मे तनाव था। अबीरी धुआ फुआ हो रही थी। वह बार बार कुजडी पर थूक उछालकर कह रही थी, 'तू अपने खसम की असली लुगाई नही ! तू खसम खावणी है। अपने धणी को तडपा-तडपाकर मारेगी, तभी तुझे चैन पडेगा। साचती नही, यहा ठाकुर गापीसिह जी का राज है।'

'जानती हू। पर यह कहा का न्याव है कि कोई मेरे साथ जबरदस्ती करे '

अबीरी तुरन्त स्नेह से भर आयी। कुजडी के सन्निकट आकर बोली, 'तू क्यू नहा समभती कि इस धरती पर हमारा 'जमारा' ही इसलिए है। ठाकुरा के सामने नाचना हमारा पशा है।'

'नाचना गाना पेशा हो सकता है पर नगा होना नही, घाघरा काचली खोलना नही। जानती हू कि जिसकी लाठी उसकी भस। पर ठाकुर की लाठी पर भी राजा की लाठी होती है ?"

'तू इधर बूढी बडेरी की तरह बातें करती रह उधर गुलबिया कस्ट पाता रहेगा।'

तभी अखिया आ गया। वह बहुत ही उदास और टूटा टूटा था। उसकी आकृति से लग रहा था कि वह बीमार हो गया है। उसकी चमडी पर पीलापन झाकने लगा है।

"कहा से आ रहे है ?"

"डेरे से ?

'गुलबिया से मिले ? '

"मिला ! बिचारा छोटे टाबर की तरह चिल्ला चिल्लाकर रो रहा है—'भाई ! मुझे छुडा ले भाई ! उस राड को जाकर कह कि मैं तुझे पसद नही हू तो तू दूजे के साथ चली जाना पर अभी तो मुझे इस नरक स निवारा दे। मच, उसके आसू देखकर मेरा कलेजा भर-भर आया। इच्छा हुई कि उस काठरी के किवाडा से अपना सिर फोड डालू।

'सुनी अपने जेठ की बातें ? ' सुनकर अबीरी बोली, 'अरी ! तू कैसी लुगाई है ? धणी का जेल म डलवा दिया घर की नादारी (गरीबी) पर तेरी आख नही जाती। फिर तू चाहती क्या है ?

कुजडी का हृदय पिघल गया। उसम जा करुणा थी, वह जागृत हो गयी।

उसन आकाश की ओर देखा। फिर वह घर से बाहर निकल गयी। उसके पीछे पीछे अबीरी।

कुजडी डेरे पर पहुची। ठाकुर का मुजरा भिजवाया। ठाकुर

आया। कुजडी ने घूघट निकालकर कहा, "ठाकुर सा ! मैं आ गयी हू।"

"आकर तो तू वापस भी चली जायेगी।"

"नही, ठाकुर सा ! मैं नाचूगी, आपके सामने नागी होऊगी। दारू पीऊगी। आप जो कहेंगे करूगी पण आप मेरे घरवाले को छोड दीजिए, उसे मत सताइये मैं आपके पाव पडती हू ठाकुर सा !'

कुजडी की आखें भर आयी। गला अवरुद्ध हो गया।

उसने डयोढीदार से कहा, इस ढोलण को साथ ले जा इसके खसम को छोड दे।'

"अन्नदाता आप कह रहे थे कि उसने चोरी की है।"

ठाकुर क्रोध मे भडककर बोला, 'और अभी कोई गधा कह रहा है ! अभी भी तो हम ही कह रहे ह।'

डयोढीदार ने भवे ऊची करके ठाकुर की ओर देखा।

ठाकुर खोखली हसी हसा और बोला, "मैंने ही बनाया, मने ही मिटाया।

डयोढीदार अबीरी और कुजडी को साथ ले जाने लगा तो ठाकुर ने अबीरी को रोक लिया "अबीरी ! तू तो ठहर जा। तू क्यो दाल भात मे मूसल बन रही है ?'

अबीरी रुक गयी।

ठाकुर मूछो पर ताव देकर बोला, "क्यू अबीरी, मैं जिसे पाव से बाध देता हू, वह अपने को हाथो से नहीं खोल सकता है न ? कसी मुल्तानी टाग मारी कि तेरी कुजकली चारो खाने चित आयी। आखिर मैं ठाकुर हू। मरी बिल्ली मुझसे ही म्याऊ कैसे कर सकती है ? तू तो जानती है कि पहले वालो से मनाता हू, फिर लातो से ! यही तो ठाकुरो की ठकुराई है।

अबीरी हालाकि छिनाल थी। वह गरीबी मे टूटी हुई थी, उसमे एक सम्पन्न जीवन के प्रति तीव्र लालसा थी, पर उसने अभी ठाकुर की हा मे हा नहीं मिलायी। उसकी आत्मा कह रही थी कि इस तरह जोर जबरदस्ती करना अन्याय ही है, पर ये बडे लोग तो छोटो पर अन्याय

करते ही आय है।

अरे, तुझे साप सूघ गया क्या ?'

"नही, अन्नदाता !"

"फिर मेरी बात का जवाब नही दिया।"

"छोट मुह बडी बात कसे कर सकती हू ? यह निगोडी जीभ बडी चिकनी होती है, कही उल्टी सुल्टी फिसल गयी तो आप नाराज हो जायेंगे।

तभी कुजडी आ गयी थी। उसकी आखें रोने से लाल हो गयी थी।

गुलबिया ने आते ही ठाकुर के पाव पकड लिये। वह गिडगिडाया, 'ठाकुर सा ! मैंने चोरी नही की। उस साऊकार के बच्चे ने मुझ पर झूठा इलजाम लगाया है।

ठाकुर ने लापरवाही से कहा, 'अब इस बात पर थूक दे।"

"अबीरी ! मैं रात को तरी अडीक रखूगा।'

कुजडी ने उसको जलती नजर से देखा। उस मन ही मन इतना गुस्सा आया कि वह उस कमीने की मूछें उखाडकर हाथ मे दे दे। पर तब दलित जाति के लोगो का आक्रोश विद्रोह आतमा की गहराइयो मे ही बवण्डर की तरह घुमडता रहता था।

वे डेरे से निकल गये।

रास्त म सब चुप चुप थे।

घर पहुचते ही गुलबिया लाल पीला हो गया। रोष के मारे उसका शरीर कापन लगा। दुबल पतले शरीर की नसें उभर आयी।

उसने कुजडी के बाल पकडकर दो चार घूसे जमा दिये। उसन अनाप शनाप फाश गालिया निकाली। आरोप लगाया, "मादरकाढ राड सतवती बनकर खसम की छाती पर मूग दलती है ? कमीनी ! क्यू नहीं ठाकुर की बात मानी ? तरी मा राड क्या घर म बठी रहती है ?

अबीरी ने बीच बचाव किया। उसने उसे बाहर आगन म धक्का देकर भेजा। कहा, 'क्यू इता नाराज हो रहा है ? आखिर है तो टाबर ही।

धीमे धीमे दुनियादारी सीख जाएगी। अब तू सात रह "

और कुजडी घूसा के दद को महसूस करती हुई अपनी दयनीयता पर साच रही थी 'गरीब का जमारा ही खाटा है। इसमे कोई 'भदरख' नही। एक जूण है जिसे कुतिया की तरह पूरी कर ली जाय।'

उसे अपनी मा रुपाली की याद आयी। उसे रावतिया काका याद आये जिसकी टाग तोड दी गयी थी और वह बेचारा सच कह भी नही सका। एक नही, साम ती जीवन की अनेक ववरताए उसके समक्ष नाच गयी।

वह अपने पति के प्रति घणा स भर गयी और उसने ठाकुर गोपीसिंह को भद्दी गाली निकालकर कहा, जदि मैंने तेरे मुह मे पशाव नही किया तो मैं भी ढालण कुजकली नहीं ! '

अबीरी ठाकुर से धान और दारू की बोतल चुपके से घाघरे मे छिपाकर ले आयी थी। उसन वह बोतल तो दोना भाइया को दे दी और खुद रोटिया मकने लगी।

उसने कुजडी को छेडना अच्छा नही समझा। कुचली हुई नागिन बडी भयकर होती है ! उसे शात होने दिया जाय।

जब रोटिया बन गयी और दोनो भाई जीम लिये तो वह थाली म खाना परासकर कुजडी के पास गयी।

"ले खाना खा ले।

"मुझे भूख नही है।'

"भूख किसी की भायली नही होती। आ खा ले।"

"मैं नही खाऊगी।"

"दिराणी ! इत्ता गुस्सा नही करत ! अरे ! वह मरद ही क्या जा अपनी लुगाई पर हाथ न उठाए। जब मरद लुगाई को आखें दिखाता है तब वह असल मरद लगता है।'

कुजडी न उसकी वाता म कोई रस नही लिया। वह मौन बठी रही।

जब अबीरी ने यह एलान किया 'जदि तू नही खायेगी तो मैं भी नही खाऊगी।"

कुजडी ने अनिच्छा म खाया।

अवीरी ने कहा, "आज रात ठाकुर सा के यहां चलना है। तू मीरा लग तो गले की साने वाली सावल माग लेना।'
कुजडी ने कोई जवाब नहीं दिया।
"बावली ! कुछ तो दुनियादारी सीख वरना जीना मुश्किल हो जायगा।'
कुजडी ने लम्बा सास लेकर कहा, "मैं सब मौसी सिखायी हू। ढाकण हू। सब कुछ गरभ म ही सीखकर आयी हू। समझी ?'
अवीरी हतप्रभ रह गयी।
'मैं अभी साऊगी।"
"और रात को ?"
'चलूगी, चलूगी चलूगी !" वह चीख सी पड़ी। अवीरी उठ गयी। उसके शरीर म ठडी लहर दौड गयी।

दोपहर थी।
सावन की मदरीली मधरी ऋतु ने अपने हरे हरे पग चारो ओर फला दिये थे।
नीम की गहर गभीर छाया के नीचे अखिया, कमला, रूपला और जुवारिया बठे बठे 'चौपड' खेल रहे थे।
दो आदमी और बठे थे। वे भी खेल का आनद ले रहे थे।
अखिया और रूपला भागीदार थे तथा कमला और जुवारिया !
खेल अपने पूरे चरमोत्कर्ष पर था।
चौपड लाल रग के कपडे की बनी थी। उस पर सफेद कपडे के खाने बने हुए थ।
लाल पीली हरी और काली गोटिया थी।
उनका रग भी नया था।
कौडिया फेंकी जा रही थी।
अखिया ने कौडिया को दोनो हाथो से रगडकर दाव फेंका।
सबकी नजर कौडिया की तरफ थी।

"पच्चीस!"

छह कौडिया म पाच कौडी मुल्टी और एक कौडी उरटी!

अखिया की आखें चमक गयी। उसने दुबारा सब पर दष्टिपात करके दाव फेंका। इस बार पाच उल्टी और एक सुल्टी। दस का दाव आया।

तभी पेमला ने कहा, "इस बार फिर दस आर मारे दाव बेकार!'

अखिया ने घमण्ड से कहा, "अरे, रहने द। इम बार तीन "

"नही, दस।"

"नही, तीन!" अखिया ने झट से कहा, "हुई रात!"

क्षणिक गहरी चुप्पी छा गयी।

'भाई! तुम लागा की बालती बद कसे हो गयी?"

जुवारिया जरा मुहफट था। सीधा पत्थर फेक देता था। बोला—'बोलती ता इसलिए बद हो गयी कि हमारे कौन स ठाकुर दुहे जात ह। तेरे भाई की वहू तो आजकल ठाकुर की 'पासवान बनी हुई है। तू तो दोना हाथो से पसे उछाल सकता है।

अखिया ने दप से कहा, "यह मेरे भाग की बात ह! तेरी बहू तो नाचती भी है और पल्ला भी भरकर नही लाती।'

जुवारिया दाशनिक की तरह बोला—' एक बात का ध्यान रखना—राजा जोगी-अगन जल, इनकी उल्टी रीत, डरत रहियो परसराम, थोडी पाला प्रीत कहीं ऐसा न हो, ये मखमली पलग भी छिन जाय और टूटी माचिया भी।

पमला न बीच म कहा, "बात का बतगड न करा। खेल मजेदार हा रहा है, इसलिए कौडिया हाथ मे ला।'

पेमला गुनगुनाने लगा—

'चौपड खेलो नी म्हारा रगराज
चौपड खेला नी

पर अखिया के हृदय मे एक फास सी फस गयी। शायद वह अपनी ही आत्मालोचना कर रहा हा कि कहीं वह इतरान तो नहीं लगा ह। वह जीती हुइ बाजी हारने लगा। उसका मन उखड गया था।

वह हारकर घर आया ता जवीरी ने उस बताया, "गुलबिया की वहू

कल सहर जा रही है। राजाजी की बरसगाठ है। वहा उसका मुजरा होगा।

"तू उसके साग नही जायगी ?'

'नही।'

'क्या ?"

'वह अपन साथ ले जाना नही चाहती।' अबीरी न साफ-साफ कहा, "वह तो निपट अकेली जायेगी। गुलबिया का भी साथ लेकर नही जायगी।'

अखिया का माथा ठनक गया।

उमे लगा कि कही कुजडी उनसे बदल न जाए ? सदेह का काटा चुभने लगा। उसन कह ही दिया "कही उसके मन मे खोट तो नही जलम गयी है ? '

राम जान !' अबीरी बोली, 'उसके हिये के अदर क्या है यह तो ईसर ही जाने।'

अखिया ने फिर अपन मन को समझाया—"यह अपन से नही बदल सकती। यह हिवडे की बडी ही चोखी है। कवली है। फिर मैं गुलबिया को समझा दूगा। वह जरा डाट पिलाकर घर की निगाह रखने के लिए कह दगा।'

अबीरी हस पडी जैसे कासी की थाली हाथ से छूटकर गिर पडी हो।

"तू हसी क्यो—खिल खिल !

वह व्यग्य से बाली 'भरतार जी ! राया का भाव राता का ही चला गया। अब वह बात नही रही। अब ता कुजडी के साम देवरजी थर-थर कापत ह। वह एक बदर घुडकी लगाती है न, उससे दवर जी के पसीना छट जाता है धाती की लाग ढीली हा जाती है। अब तो कुजडी स हाथ जाडकर ही कुछ कहा जा सकता है।'

अखिया वास्तविकता का समझ गया। अब यदि कुजडी को डाटा गया तो वह हम किसी सकट म डाल सकती है। इस पर समधिन रूपाली भी बार बार आकर उमे क्या कह जाती है—भगवान जान ? उस दिन तो मा बटी के बीच बडा तनाव हुआ था। फिर रूपाली हार गयी थी।

मगलवार का दिन था।

ढलता सूरज !

ढालन कुजडी घुघरुआ की पायलिया पहने रमक भमक करती हुई मदिर की ओर जा रही थी कि रास्ते म ही उसे अपनी मा रुपाली मिल गयी।

रुपाली थकी-थकी लग रही थी। उसकी पगरखिया धूल स भरी हुई थी। होठ सूख गये थे। आखो म झील सी गहराई झाक रही थी। लग रहा था उसके जीवन म एक ऊब आ गयी है। वह नीरसता से घिर गयी है।

कजडी अपनी मा स गले लगकर मिली। रुपाली न आशीष दी, 'जुग-जुग जी, मेरी लाडो ! तेरा सुहाग माकला (बहुत लम्बा) हो।"

'मा तू कैसे आयी ?

तुझसे मिलने।

' फिर तू बैठ, मैं हडमान बाबा के दरसन करके अभी आयी।'

मैं भी वही चलूगी।"

"तू घर जाकर हाथ मुह धो न ! इत्ती दूर स आयी है। थकी मादी होगी। थोडा-सा आराम कर न ! '

"म कौन सी मैनत मजूरी करती हू।" रूपाली न सूखी मुसकान के साथ कहा, "पैदल चलकर आयी हू। गाडी घोडा तो हमार लिए पहले भी नहीं था और अभी भी नही है। फिर पदल चलने स घबराना क्या ? मुझे कोई थाकेला (थकान) नही है।"

' जैसी तेरी मर्जी चल।'

वे दोनो मदिर आ गयी।

,मदिर काफी दूर एक टेकडी पर बसा हुआ था। किसने बसाया था, नही मालूम। अजीब अजीब किंवदतिया थी उसके बारे म।

आजकल हनुमान मदिर का पुजारी देवीदास था। लगभग पतालीस-पचास बरस का हृष्ट पुष्ट देवीदास आज स लगभग तीन साल पहले यहा आकर रहने लगा था। बडी बडी दाढी मूछें। दहकती आखे। कहता रहता था, 'मैं दूर हिमालय से आया हू। बहता पानी रमता जोगी का कोई ठौर ठिकाना नही होता। जहा 'धूणी' जगा दी, वही बठ गय। जब

हनुमान बाबा की आना होगी, उसी दिन यहां स चले जाएंग।"

देवोदास की कुजडी बडी इज्जत करती थी। उसको बाबा की बातें बडी अच्छी लगती थी। उसने उसे पहली बार महात्मा गाधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, भगतसिंह, सरदार पटेल, सुभाषचन्द्र, आज़ाद के नाम सुनाये।

उसने कुजडी को कहा था, 'ये सब लोग देश को आज़ाद कराना चाहते हैं।

कुजडी 'आजादी' का मतलब नहीं समझी। उसने पूछ लिया, "आजादी क्या होती है?'

देवोदास मुसकराया, 'आजादी का मतलब यह है कि इस धरती पर से *फिरंगियों राजाओं और ठाकुरों के राज्य को हटाना। जहां कोई राजा* नहीं, वही देश आजाद कहलाता है।'

"यह कैसे हो सकता है?"

'यह ऐसे हो सकता है कि जब हम सब लोग मिलकर इनसे लड़ेंगे तब ऐसा होगा। कुजकली! यह धरती उसकी है जो इस पर खेती करता है जो कपडे बुनता है।

कुजडी को देवोदास उसके असली नाम कुजकली से पुकारता था। उसने ही कहा था, "यह बिलकुल गलत है कि छोटे लोगों के नाम भी छोटे और भद्दे हों बिगडे हुए हों।"

उसने कुजडी को बताया, 'सच तो यह है कि इन राजा ठाकुरों और फिरंगियों के नाम भद्दे होने चाहिए जो गरीब जनता पर अत्याचार और अन्याय करते हैं। जैसे एक ठाकुर का नाम था दयालसिंह और काम करता था—गरीब किसानों के खेतों को जलाना। दूसरा एक जमींदार था। उसका नाम था रामसिंह। और करता क्या था? बताऊं? हर सीता की *इज्जत लूटता था।"*

कुजडी को लगता था कि बाबा बात बडी खरी कहता है। उसे आहिस्ता आहिस्ता उसकी बातों में रस आने लगा।

वह बाबा को अन्न और धन से मदद किया करती थी।

बाबा ने एक दिन पूछा था, "कुजकली! तू करती क्या है?'

"मैं ढालण हू । गा-बजाकर अपना और अपने परिवार का पेट भरती हू ।"

"क्या सब ढोलनें तुम्हारी तरह अच्छे कपडे पहनती हैं ? मेरे जैसे आदमियों की मदद करती ह ? या मदद करने की सामर्थ्य रखती है ?"

कुजडी के मुख सरोवर के तैरते हसो मे पीडा दिखायी दी । वह गदन भुकाकर वाली, "नही बाबा, में आपके सामने भूठ नही बोलूगी । दरअसल हमारी सारी जाति दलिदरता मे जी रही है । हमारे लोग-लुगाइया को न चोखा कपडा मिलता है और न घी की चुपडी रोटिया । कभी किसी के घर का चूल्हा नही जलता है और कभी किसी के घर का । मरदो के लिए तो बहुत थाडा काम है । कभी-कभास तीज त्योहारो पर ढोली लोगो को काम मिलता है । तव वे ऊटो पर बैठकर नगाडा बजाते हैं वरना तो लुगाइया ही कमाती है । रही मेरी बात सो मैं आपके सामने भूठ नही बोलूगी मैं तो ठाकुर सा के डेरे जाती हू ।'

कुजडी का सिर भुक गया ।

देवोदास न उसकी बात का मम समभकर लम्बी आह छोडी । सोचने लगा कि कब इस पथ्वी पर से आदमी का आदमी के द्वारा शोषण करना बद होगा ? कब इस देश का आदमी आजादी की हवा मे सास लेगा ? कब साम्राज्यवादी इस मुल्क को छोडकर जायेंगे ? कब साम तवाद का सूरज डूबेगा ?

वह गभीर हो गया था ।

कुजडी ने कहा था 'बाबा ! आप बडे गियानी घियानी हैं । सबकी बात समभते हैं । हालाकि मुभे भी यह जिनगी पसद नही है पर मरा भी तो नही जाता ! फिर मैं कुछ भी अणूती करती हू तो ये ठाकुर-उमराव हमारी सात पीढी को सताते हैं और सात पीढी मजबूरी के कारण मुभे सताती हैं । बस, यही चक्कर चलता रहता है ।"

बाबा ने बताया था, "इसीलिए तो गाधी बाबा देश को आजाद कराना चाहते हैं जिससे इस देश पर प्रजा का राज्य हो, हम सबका राज्य हो ।'

कुजडी बाबा के विचारो को ज्यादा नही समभती थी पर उसे लगता

था कि बाबा ऐसी बातें करता है जो पहले किसी ने उसे नहीं सुनायी थी, जो सब बातो से न्यारी बातें थी।

वह बाबा के प्रति अटूट श्रद्धा रखती थी।

अभी भी उसने आते ही सबसे पहले हनुमानजी को हाथ जोड़े। उसकी तीन फेरियां लगाकर वह बाबा के पास गयी। उसके पांव छूकर कहा, "पा लागी, बाबा!" फिर उसने अपनी मां का परिचय दिया, 'बाबा! यह मेरी मां है—रूपाली! मुझसे मिलने के लिए आयी है।"

"राम-राम, माता जी!"

रूपाली ने हाथ जोड़ दिये।

देवोदास ने उसे औपचारिक आशीर्वाद दिया। धूणी में आग सुलग रही थी। एक चिमटा धूणी की राख में गड़ा हुआ था। दूसरी ओर एक त्रिशूल था जिस पर सिन्दूर लगाया हुआ था।

'कुजकली, और क्या समाचार है?'

"अच्छी हूं, बाबा!' कुजड़ी ने कहा, 'मैं शहर जा रही हूं। राजाजी की वरसगांठ है। मुजरो करने जा रही हूं।"

देवोदास ने अपनी जटा को खुजाया। कहा, "मुझे मालूम है, कुजकली।'

"कैसे?"

"गांववालों से लाग जो ली जा रही है। जुल्म की भी कोई सीमा नहीं होती। ठाकुर के आदमी हरखिये की गाय खूंटे से खोलकर ले गये क्योंकि राजाजी की वरसगांठ है। गरीब जनता की पसीने की कमाई को ये लोग शराब-कबाब में उड़ा देंगे। पैसा तो हम सबका होगा और नाम राजा का।"

"यही तो रीत है।"

"अरे, इस रीत को तोड़ने के लिए ही तो भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद ने बीड़ा उठाया है। कुजकली! एक दिन सब मिट जायगा। हर आदमी को बराबर का ओहदा मिलेगा। न कोई अमीर रहेगा और न कोई गरीब। सब मेहनत करो और खाओ। न कोई अछूत और न कोई सवर्ण।"

"आपकी बात मेरी समझ मे नही आती।'

"धीरे-धीरे आ जायेगी। एक दिन ऐसा भी समय आयेगा कि तुम यह भी समझ जाओगी कि असल मे मैं कौन हू।"

कुजडी चलने लगी। देवोदास उठकर बाहर आया। उसन देखा कि सेठ किरपाचद पालकी पर लेटा हुआ जा रहा है। खुली पालकी थी। उस पर वह मोटा, भद्दा और टागो से लाचार सूदखोर बनिया अधशायित था। बचपन म उसे पोलियो हो गया था पर उसने अपने खानदानी पशे को बर-करार बनाय रखा। उसका बाप सूद का धधा करता था। दरअसल आस-पास के इक्कीस गावो का वह सबसे भयानक सूदखोर था। अपग होने के बावजूद वह हर राज पालकी पर बठकर निकल जाता था। ठाकुरा के अलावा रियासत के राजा के दरबार म भी उसका मान-सम्मान था।

उसके बडे-बडे खेत थे। उसम कई लोग काम कर रह थे। य सारे लोग बधक थे। कई कई लोग तो एक एक मन धान के एवज म उसके सागडी थ। ऐसे भी तीन चार आदमी थे जा दा पीढी स उसके वहा बधक थे।

वस्तुत वह एक राक्षस किस्म का आदमी था जिसके मुह म शोपण के भयानक दात थे।

देवोदास ने कहा, "इसका नाम भी किरपा है और किरपा शायद यह अपने बच्चो पर भी नही करता होगा।"

कुजडी ने तीखे स्वर म कहा, 'मैं जानती हू इस चाडाल को। पावा से लाचार है, पर फिर भी इसके तीन तीन बीविया है। सुना है तीना लुगाइया के बाप इसके करजदार थे।"

देवोदास अनत आकाश को देखता रहा, "बेचारी औरत!"

रूपाली और कुजडी दोना चल पडी।

एकात आते ही कुजडी ने पूछा, "बता मा, क्या आयी है?"

"मैं यह कहने आयी हू कि तू सहर क्या जा रही है?"

'इसलिए जा रही हू कि ठाकुर सा मुझे राजाजी से मिलायेंगे और राजाजी की किरपा हो गयी तो मैं पासवान पर्दायतण बन सकती हू। मा! इस जिनगी से ता किसी एक की बनकर साति से जीना बहुत अच्छा है।

राटी राती के निए ता नहा भटकना पडेगा ।"

"और उन्होने तुझे पसद नही किया ता ? '

"तो वापस आ जाऊगी ।

' लेकिन मै नही चाहती कि तू वहा जाए ।'

' तरे चाहने और न चाहने स क्या हाता है ?" वह एकदम भडक उठी 'मैं अपना भला बुरा खूब समझती हू । मा ! मैं तेरी तरह उस ठाकुर के चक्कर म अपना जोवन खराब करना नही चाहती हू और न ही मैं घर घर भीख मागना चाहती हू । मुझे तरी तरह रात बिरात गुरओ के चक्करा म पडकर पराये मरदा के साथ नही सोना है । मैं तो ठाकुर सा की ही बात मानूगी । *उन्हाने ठीक ही कहा था—'ढोलण की जायोडी पटराणी* तो नही बनेगी ।' फिर क्या न भाग का अजमा लिया जाय । भाग की माया निराली है । वह भभूत म भी नही छुपता । मा ! मैं घर घर जाकर लाऊगी तो रोटी ही । जिस तिस के साम नागी नाचने से तो अच्छा है— दो चार बडे आदमिया के सामै नाचू ?"

' तेरे भीतर कोई पलीत (प्रेत) घुस गया है कुजडी !"

"नही मा, आखिर मरना तो भूखा ही है । जब मरना है तो कुछ करना भी चाहिए । कही तुक बैठ जाय । हमारी जात मे कितनी लुगाइया और टाबर बिना दवा के मरते हैं ? कितने आदमी ऐसे हैं जो नया कपडा पहनते हैं ? भूख, गरीबी और लानतो के सिवाय क्या है हमारे जीवन मे ? बोल मा बोल !

रूपाली चुप हो गयी । उसे लगा कि इसमें एक चालाक औरत घुस गयी है । इसमे किसी दूसरे का पलीत है वरना वह इतना गहर गभीर नही सोचती ।

' अगर तरे सासरवाला न राका तो ?"

वह हसी । बोली, ' उनकी क्या मजाल है जो मुझे रोकें ? ठाकुर गोपीसिह मेरे जेठ जेठाणी और धणी की चमडी न उधेड देंगे ? '

फिर तू गुनवियां को लेकर मेरे साथ चल । अपना कमाया हुआ अपनी सात पीढी को क्यो खिलाती है ? मैं ही तेरा मामला जमा दूगी ।

कुजडी भडक उठी । उसने अपनी मा को डाटा, 'मा ! आजकल तुझे

क्या हो गया है ? तू बार बार मुझे सासरेवालो मे अलग होने के लिए क्यू कहती है ? तू ने अपने धरम का पालन करके मुझे विदा कर दिया और अब मैं क्या करती हू इसम तू सिर खपाना छोड दे। मेरे पास वैसी हुआ तो मैं तेरी भी सेवा करूगी।"

रूपाली खामोश हो गयी।

दो चीलें आपस मे लडती हुई ची ची ची कर रही थी। कभी वे धरती के सन्निकट आ जाती थी और कभी आकाश मे काफी ऊची चली जाती थी।

एक खरगोश उनके आगे से दौडता हुआ झाडियो म छिप गया।

वे दोनो छोटी पगडडी से जा रही थी। आगे चलकर पगडडी बडे रास्ते मे मिल गयी। वह रास्ता भी कच्चा ही था।

उस स्थान पर कुजडी का सूदखोर से टकराव हो गया।

"राम राम सेठजी !"

सेठ ने ऊची गरदन देखकर कहा, "कहो ढोलण, क्या हाल चाल है ? तेरे जेठ ने सूद नही पहुचाया है।"

"सेठजी ! कुछ सूद तो यहा बाकी छोड दीजिए।

"किस खुशी मे ?"

"फिर अगले जन्म म किससे वसूल करेंगे ?

सूदखोर की बोलती बद हो गयी। बोला, "बडी मुहफट है !"

सूदखोर की पालकी आगे निकल गयी।

रूपाली ने नाक को उगली से कुचटकर कहा, 'इसका सूद क्यो नही देती ?"

'आज से साल भर पहले मेरे जेठने पीतल का लोटा अडाणे (गिरवी) रखकर एक रुपया लिया था। एक पाई सदव के ब्याज पर। अब लोटा कौन छुडायगा ? इतने ब्याज मे तो कई लोटे आ जाए।"

वे दोनो घर लौट आये थे।

घर म फिर पचायत बैठी पर कुजडी के सामने सबने हार मान ली।

सबने अपनी भलाई इसी म समझी कि जो कुजडी कह उसे ही मान लिया जाय।

गुनविया ने उसे अवल में ले जाकर अंतिम बार उसे बांहों में भरकर चापलूसी भरे स्वर में कहा, "मुझे तो तू नहीं भूलेगी ?"

'नहीं, कभी नहीं।' उसने दृढ़ता से कहा।

और रूजडी ने अपना गांव छोड़ दिया।

रिगचू रिगचू रिगचू

बैलगाडी धीरे धीरे चली जा रही थी। ठाकुर गोपीसिंह ऊंटपरसवार था। ऊंट के 'गोरबंद' बज रहे थे। वह गाडी के पीछे था।

बूढ़ा गाडीवान माली जाति का था। उसने साफा पहन रखा था और उसकी अंगरखी फटी हुई थी। बैलगाडी के बैल नागौरी थे। सफेद रंग के बैलों के सिर पर काला टीका था। गले में घंटियां थी, जो बज रही थीं—टन टन टन ऽऽऽ !

गाडी के चारों ओर लाल रंग का खोल था। खोल पर सफेद और नीले रंग के कपडे के फूल पत्तियां और बुर्ज बने हुए थे।

खोल चारों ओर से बंद था। उसमें से देखने के लिए एक जालीदार सुराख रखा हुआ था। उस खोल के भीतर बिछौना बिछा था। उस पर दो गाव-तकिये थे।

बैलगाडी के नीचे पानी का चाडा (छोटा मटका) रखा हुआ था।

कूजडी पसरकर लेटी हुई थी।

ऊंट का गोरबंद सुनकर वह गाने लगी—

गोरबंद लूम्बालो

झड झूम्बालो लड लूम्बालो

म्हारो गोरबंद लूम्बालो

गाडी चल रही थी।

धर कूचा धर मजला

बीच बीच में ठाकुर खुद गाडी पर आ जाता था और गाडीवान को ऊंट की लगाम पकड़ा देता था। फिर वह बूढ़ा गरीब पैदल ही चलता था।

जंगल में जहां-जहां नदी-नाले पड़ते थे, वहां कोई जानवर दिख जाता

था, विशेषत हिरन।

अभी भी वे एक बरसाती नदी पार कर रहे थे। गाडीवान एस मौके पर ऊट को तो गाडी के पीछे बाध देता था और खुद बैलो की लगाम पकड-कर आगे-आगे पैदल चलता था ताकि बैल चमकें नही।

गाडी मे कुजडी और ठाकुर दोनो थे।

ठाकुर ने कहा, 'कुजडी! मुझे पक्का विश्वास है कि तेरे जावन और सुभाव पर राजाजी मर-मिट जायेंगे। बस, मेरा एक ही काम करना—मुझे पद्मगढ की जागीर दिलवा देना।'

'दिलवा दूगी।" उसने लापरवाही से कहा।

जदि मामला बेसी जम जाय तो उन्हे कहकर दीवान बनवा देना।'

कुजडी ने व्यग्य से मुसकराकर कहा, "और उससे भी बेसी मामला जम जाय तो किसी रात राजाजी को तो जहर पिला दू और आपको रियासत का राजा बना दू?'

ठाकुर ने उसे तीखी निगाह से देखा।

कुजडी ने ठाकुर के हाथ पर अपना हाथ रखकर पूछा, ठाकुर सा!"

'हा!"

'बुरा नही मानें तो एक बात पूछू?"

पूछ।'

"जदि आपको राजाजी अपना राज-पाट देना चाहें और उसके बदले आपकी सारी ठकुराणियो को लेना चाहें, तो?"

बहुत ही तिक्त और अप्रिय सवाल था। ठाकुर की त्यौरिया बदल गयी। चेहरे की नस उभर गयी। पलकें खुल गयी।

'मेरी बात को बात की तरह लीजिए जदि ऐसी स्थिति आ जाय तो आप क्या करेंगे? धरम से कहिएगा हालाकि ऐसा कभी हो नही सकता? सिर्फ मैं तो बात के लिए बात पूछ रही हू। बताइए।'

"राजा बनने के बाद तो चारो ओर लुगाइया ही लुगाइया हो जायेंगी।' ठाकुर ने बेहयायी से कहा।

कुजडी समझ गयी कि इन सामन्तो की नजर मे औरत की कोई कीमत नही है। वह सिर्फ एक वस्तु की मानिंद है सिर्फ भोग की वस्तु है।

ठाकुर की गंभीरता इतनी बढ गयी थी कि वह डरावना लग रहा था। वह झट से बोली 'ठाकुर सा ! जब राजाजी ने मुझे अपने पास रख लिया तो ?'

तो तेरे भाग खुल जायेंगे। तू जिन्दगी भर आराम से रहेगी।"

"नहीं ठाकुर सा, नहीं ! कुंजडी ने ठाकुर की बात को काटते हुए कहा, 'मैं राजाजी के पास नहीं रहूंगी। ठाकुर सा, मुझे आपसे परेम है। लाग है। मैं आपके बिना नहीं रहूंगी।'

"नहीं कुंजडी, नहीं ! ठाकुर ने सहमत हुए कहा, 'राजाजी नाराज हो गये तो मुझे बड़ा नुकसान होगा। कुंजडी ! तू बस राजाजी को पटाकर मेरा और अपना भला कर। जदि राजाजी हम पर 'तूठ' गये तो सात जनम का दलिदर धुल जायगा।'

"और आपको मुझे छोडने का कोई दुख नहीं होगा ?'

'दुख की क्या बात है ! ठाकुर ने कहा "ऐसा तो होता ही आया है। एक ताकतवर दूसरे बडे ताकतवर के सामने सिर झुकाता ही है। ससार का नियम है—जिसकी लाठी उसकी भैंस।'

और जो आप परेम की बात करते थे वह फिर क्या थी ?'

ठाकुर खिलखिलाकर हसा। उसे अपनी बाहों में भरकर बोला, 'परेम की बात ढोलण के मुह में चोखी नहीं लगती। परेम के पीछे मरा तो नहीं जाता। परेम परेम की रट लगाते-लगाते मरद लुगाई आखिर सात तो इकट्ठा होते हैं। फिर परेम दुनियादारी से अलग कैसे हुआ ? कुंजडी ! तू वैसी समझदार न बन। तू तो बस यही समझ कि जीवन के रहते चार पैसे कमा ले ताकि बुढापा दुख में न बीते।

कुंजडी को लगा कि यह आदमी आदमी नहीं पक्का दलाल है। बहुत ही छोटा स्वार्थी है। फिर उसे अपनी मा रूपाली याद हो आयी। उसने भी तो प्रेम के पीछे अपना सब कुछ गंवा दिया था। वह भी एक ठाकुर ही था।

फिर वह प्रतिहिंसा से भर गयी। मन ही मन उसकी मूछों से खेलती हुई बोली, देख बच्चू ! मेरा समय आने दे। जिस तरह तूने मुझे नचाया है उसी तरह तुझे नचाऊंगी।'

प्रतिहिंसा प्रतिशोध की आग से गर्म होकर तीखी हो गयी।

गाडी ने भूरी नदी पार कर ली थी।
गाया का एक कड जोर-जोर से रभा रहा था।

रियासत का राना फतहसिंह अपनी बठक म बठा था। गन्ने तामवे ..
सा रग गीध-सी अप्रिय आखें, गालो पर छोट छोट छिद्र फूला हुआ पट
कन्धे तक के बाल बडी-बडी तलवार जसी मूछें।

वर्षगाठ का सात दिनो का उत्सव खत्म हो गया था। महल मे जो
हलचल थी वह कम हो गयी थी। विभिन्न ठिकाणा से आये हुए
ठिकाणेदार उमराव और सामन्त चले गय थ।

मुदगार किरपाचद भी आया था। वह राजा को ग्यारह हजार रुपय
नजर करके पावा म सोन का कडा पहनने का अधिकार ले गया था।

कुजडी न वषगाठ के उत्सव म भाग नही लिया। ठाकुर गोपीसिंह
कुछ और चाहता था। वह कुजडी जैसी अपूव सुन्दरी को भीड मे दिखला
कर उनके असली महत्त्व को कम करना नही चाहता था। इसलिए आज
उसन दीवान से अलग समय ले लिया था और वह ठीक समय दीवानखाना
पहुच गया था।

दीवान ने राजा के ए० डी० सी० के साथ ठाकुर गोपीसिंह को राजा
के पास भेज दिया। गोपीसिंह ने नीचे झुककर राजा की घणी घणी खम्मा
की। तीन मोहरें नजर की।

क्या बात है ठाकुर सा ?" अफीम के नशे मे मदमस्त राजा ने पूछा।

"आज रात को मैंने फतहगढ की बारादरी म हुजूर के वास्ते नाच
का बदोबस्त किया है। हुजूर को पधारना ही है।'

'कुण सी पातर आयी है ?

ठाकुर गोपीसिंह दलाल की-सी बनावटी हसी हसकर बोला, "अन्न
दाता ! आप यह न पूछें तो चोखो। जदि धीरज नही है तो आप अपनी
डावडी 'नथली' से पूछ लीजिएगा।"

राजा न अपनी आखें औसतन आकार से ज्यादा खोलकर कहा,
'तो आना ही पडेगा ?"

'चरणा मे दास की तो यही अरज है।"

'चोखो-चोखो!"

ठाकुर गोपीसिंह ने खम्मा-खम्मा की और वह अपने साधारण डेरे पर लौट आया।

इस बीच कुजडी ने राजा की आस्ता और वहा की ढोली जाति के बारे मे जानकारिया प्राप्त कर ली। पाच ढोलणिया सदा आती थी जो उसके साथ गान बजाने का काम करती थी।

कुजडी ने उनकी बातचीत से जाना कि उन सभी ढोलणियो की स्थिति अच्छी नही है। भूख गरीबी और कुछ अशो म बगारी भी उनके साथ जुडी हुई है। इस पर सामाजिक रूढियो ने भी उन्हें इतना दीन और असहाय बना दिया है कि उन पर दया आती थी। साहूकारी का धधा खूब चल रहा था। सूदखार ब्याज ब्याज-दर-ब्याज, दर से दर-ब्याज यानी ब्याज, पडब्याज और लडब्याज लेकर इन ढोलिया का शोषण करते थे। उनका अपना कोई अस्तित्व नही था। उनका सुख और रोटी उनके अपने यजमाना पर अवलम्बित थी।

नथली ने ही उस बताया था, "ढोलणजी! जदि आप सारे नगर म घूमगी तो सोना चादी केवल ठिकाणेदारो या साऊकारा की लुगाइया के सरीर पर ही देखेंगी। बामणो की भी कोई बहुत चोखी हालत नही है। वे भी पाठ-पूजा करके अपना गुजारा करत हैं। और छोटी जात तो कीडा-मकोडा की तरह जी रही हैं। यही दसा हम डावडिया की है। हमसे तो गली के गडक (कुत्ते) भी चोखी जिनगी जीत हैं। कम स कम अपनी मर्जी स भाग तो सकते हैं।'

कुजडी करुणा और आक्रोश दोनो से भर आयी। उसका दिल बगावत करने के लिए आतुर हो गया पर वह अपनी शक्ति और वास्तविकता को समझती थी। वह तो आख टेढी भी नही कर सकती। हा, एसे क्षणो म उसे बाबा देवोदास की याद जरूर आती थी। बाबा एसी बातें कहता था जिनमे आग होती थी। उसने भी कहा था, ये ठाकुर और राजाओ की व्यवस्था है सभ्यता है, रीति रिवाज है जिसम चद मुट्ठी भर लोग तमाम दबे हुए लोगो का शोषण करते हैं, उन्हे जानवर की तरह रखत है।

इसलिए इन राजाओ और फिरगियो के राज्य को खत्म करना पडेगा। एक ऐसी लडाई लडनी होगी जो सबको एक-सा जीवन दे।'

और कुजडी सोचती थी, यह सब कसे हो सकता है? राजा ठाकुरा को कसे मिटाया जा सकता है? लोग तो कहते हैं कि ये तो ईसर है उन्ही के बटे पोते है। और बाबा कहता है—'यह व्यवस्था है, एक गलत व्यवस्था। इस व्यवस्था को मिटाना होगा, उसके लिए एक आन्दोलन एक क्रांति '

कुजडी बाबा के भारी भारी वाक्या के अथ को कम समझती थी। बस, वह इतना तो समझती ही थी कि देवीदास बाबा को यह सब पसद नही है। अजीब है यह बाबा भी! देवताओ को गाली भी निकालता है और देवता को पूजता भी है।

नथली ने भी उसे एक रहस्य की बात बतायी थी, इस जीवन के चार दिन हैं। इसके जाने के बाद लुगाई को सिवाय धणी के कोई नही पूछता। इसलिए इसका लाभ उठा लेना चाहिए।'

कुजडी अपनी जाति की लुगाइया की जो दुदशा देख रही थी, उससे उसका मन दुखी हो गया था। फिर हर एक के सामन नाचने गाने से तो अच्छा है कि किसी एक का ही 'साथल दिखायी जाय।

कुजडी अपन आपको चालाक बना रही थी। नथली उस ड्योढिया की चालाकिया एक कुटनी की तरह समझा रही थी।

और अब भी आटे, घी और हल्दी के मिश्रण का लेप बनाकर नथली कुजडी के शरीर पर 'पीठी कर रही थी। समझा रही थी, "आपका डील बडा ही 'फूटरा' है। राजाजी मोहित हो जायेंगे। सुन्दरिया उन्होन बहुत देखी होगी पर आप जैसी नही। आप तो ढोलणजी अपसरा हो। जसा रग वसा ही रूप! सबसे बडी बात है—आपकी बोली भी बडी मीठी है, जसे कोयल।

कुजडी को लाज न घेर लिया।

"पर एक बात ह!"

'क्या?"

"राजाजी बडे भोगी है। ऐसा भोगी तो तिरलोक म नही मिलेगा।

अपना तीना सालिया स भी ब्याव घर लिया है क्योंकि वे फूटरी (सुदर) थीं। और डावटिया, पामवानें, घाघरवालिया, पडदायतणें, राणिया अलग । फिर ऊपर ही ऊपर जाते जात दूसर शिरार। जि आपन राजाजी को राजी कर लिया ता लिछमी आपरे पगो म पडी रहगी।"

कुजडी न कोई जवाब नहीं दिया।

नथली उस सवारती रही, सजाती रही और उसके शरीर के ढाच की प्रशसा करती रही।

उस केमरिया रग का घाघरा काचली, कुर्ती और आटना पहनाया गया। पावा म चादी की घुघरुआ की भारी भारी पायल जो छम छम घुघरुआ की तरह वजती थी।

सिर पर बोरल, हाथ म लाग की चूडिया, गल म चादी के तावनिय।

नाक म चमकदार तिनगा और ललाट पर लाल की बनी चमकदार बिंदी। पावा म जाधपुरी कसीदा निकाली हुई पगरखी!

कुज ी को नजर न लग, इसके लिए उसन उस भुल्कारा डाला और कहा, *ढोलणजी! आप पटराणिया स भी फूटरी फरी लगती हैं। जि* सारी राणिया का आपक सामन खडी कर दें तो वे आपके साम पाणी भरेगी।

कुजडी को अपनी प्रशसा सुनना अच्छा लगा। उस गणगौर की याद आ गयी। हडमान भी उसके रूप की तारीफ करता हुआ कहता था, कुजडी! तू तो 'गवरजा लग रही है। रूपाली गणगौर!'

सहसा उसे हडमान की याद आ गयी। वह उसे वास्तव म प्रेम करता था। वामण नहीं होता तो वह उसके साथ फरे खा लेता। पर उसके भाग म ता गुलबिया जो लिखा था।

नथली न उसके ध्यान को भग किया क्या सोचने लगी?

'कुछ नही।

नथली न आकाश की ओर दखकर कहा 'सभा पड रही है। बैल गाडी तयार हो रही है।"

"हा, नथली!" कुजडी न नथली क थके हारे और मुरभाय हुए चहरे को ओर देखकर कहा *"सभा पड जायगी, विचारी ढोलण कुजडी फतह*

मट्न जायेगी, गायेगी, नाचेगी फिर राजाजी के सामने एक-एक 'वसतर' उतारेगी राजाजी राजी हो गय तो झोली भर देंगे, नही तो डाम चिपक्वा देंगे। क्या नियति है हमारी नथली ? केवल ढोलिया की ही क्या, हमारे जाति भाई मिरासी भी तो ऐसा ही कस्टा का जीवन जीते है। कच्चे कच्चे मकान ! तालावा और भीलो पर अधनगे होकर कपडे धोना। दिन भर रोटी के लिए सघप । ढोराक लिय हुए इधर-उधर मार मारे फिरना ! '

नथली न कहा "सच तो यह है कि सारी गरीब रयत विवै म जी रही है। गरीवा की यही दसा है।'

वलगाडी तैयार हो गयी थी। उसकी घटिया वजन लगी थी।

नथनी ने उठकर कहा 'चलिए, ढोलणजी !"

कुजडी चल पडी—छम छम !

उस ध्वनि का सुनकर उम हसी आ गयी। नथली शायद उमके रूप सौंदय पर रीझ गयी थी। गाने लगी— ह गवरल रुडो ह न नारा तीखे नणो रा '

सचमुच कुजडी के तीखे नयनो का नजारा अनुपम ही था।

वह वलगाडी मे वठ गयी थी।

वैलगाडी धीर धीरे चल रही थी। गाडीवान कभी-कभी वला को हाक देता था। डिचकारी लगा देना था—टिच डिच डिच डिच ऽऽ

कुजडी चुपचाप वठी थी।

रस्ता थाडा लम्बा था। नथली को चुप्पी अच्छी नही लग रही थी। उसने कहा, 'ढोलणजी ! कुछ गाओ न, रस्ता सरल हा जायगा।

ढोलण के कहने पर नथली ने गाडी पर लगी खोली के पर्दे दानो ओर स ऊचे कर दिय।

ठाकुर गोपीसिह राजाजी का लने चला गया था। कुजडी को नथली की बात म कुछ सार लगा। उसने गाना शुरू कर दिया। सन्नाट मे अमत की वर्षा करती है—भूमल। प्रणय-विरह की अमरगाथा का गीत ! विरह म तिल तिल जलन वाली राजकुमारी भूमल की अनत प्यासा मे घिरी आशा—'चल अपने प्रीतम के दश चल

काली काली काजलिये री रेखडी रे
हाजी रे कालोडे काठल मे चिमकै बीजली
म्हारी जेसाणे री भूमल हाले की अमराणे रे देस

भूमल की एक ही इच्छा—प्रीतम के देश चल आली जहा के देश चल

नथली का मन भर आया।

शायद सबको अपने-अपने जीवन की निरथकता का बोध हो आया हो कि वे अपने अपने प्रीतमो से तो मिल भी नही सकती।

उनके प्रीतम तो अपनी प्रियतमाओ को सामन्ती शोषण की नारकीय व्यवस्था म विडम्बना का जीवन जीने के लिए छोड चुके है। जीवित मुर्दे हैं उनके प्रीतम। कुजडी भी गात-गाते भर भर आयी।

नथली ने उसे रोका "यह क्या कर रही है, ढोलणजी? रोइए मत। रोयेंगी तो काजल पसर जायगा। गुलाबी गालो पर काली लकीर मड जायेगी आपको राजाजी के हजूर मे जाना है।"

कुजडी मावधान हो गयी। उसकी बडी बडी अखिया मे जो भीगापन तरा था, उसने उसे वापस पी लिया।

भला वह अभी कसे रो सकती है? वह रोयगी तो उसका चेहरा बिगड जायेगा! अभी तो उसे राजाजी के आग मुजरा करना है!

गाडी चली जा रही थी।

गाडीवान तटस्थ का तटस्थ बना रहा।

अधेरा गहरा होने लगा।

फतहगढ म ज्यादा कमरे नही थे। एक शीशमहल था और शेष छोटे छोटे महल। शीशमहल मे जाजम बिछ गयी थी। जाजम के आगे ईरानी गलीचा। उस गलीचे के बेल बूटो मे दो नग्न औरतें दो राजाओ को शराब पिला रही थी।

छत से झाड फानूस लटक रहे थे जिनमे मोटी मोटी मोमबत्तिया जल रही थी।

जाजम के चारो ओर चादी के दीपदाना पर चीन की बनी हुई शीशे-वाली बडी-बडी चिमनिया जल रही थी ।

अत्यत ही तेज प्रकाश था जिममे सुई आसानी से पिरोई जा सकती थी ।

जाजम के दूसरी ओर तीन ढोलिने बठी थीं। तीनो निहायत ही सुदर थी। एक ढोलन के सामने ढोलक रखी हुई थी। दा ढोलिनें कुजडी को गाने मे सहयोग देने के लिए थी।

राजा आ गया था।

वह जाजम पर बैठ गया। उसके साथ उसके अदली, ड्योढीदार, कामदार, पोशाकिया हुक्काबरदार आदि सब थे।

राजा को सोने के जाम मे दारू दी गयी। ढोलनो को शीशो के जाम मे। कुजडी को चादी के जाम मे। ठाकुर गोपीसिह मुजरे म नही बैठा।

मुजरा शुरू हुआ। कुजडी ने गीत पर गीत गाये—

दारू दाखा रो,
पीवड आलो लाखा रो
ढोला ढोन मजीरा वाजे रे
काली छीट रो घाघरो निजारा मारे रे

कुजडी को थोडा सरूर आ गया तो उमने तीसरा लोक-गीत गाया—

म्हैं रावल सू नाय बोला
नाय बोला मुख नाय बोला

ढोलक बज रही थी। दूसरी ढोलिनें नाचने लगी थी।

राजा मदमस्त था। पानी की तरह दारू पी रहा था।

कुजडी ने एक उत्तेजक झटका देकर कहा—

जद ढोला म्हारी सेजा आसी
घूघट रा पट नाय खोला
म्हैं रावल सू नाय बोला

राजा उत्तेजित हो गया। वह गावतकियो पर लुढक गया जैसे सूअर कीचड म लौटना हो। वह उगलियो को उलझाता हुआ बोला, "अरी, घूघट क्या, तू तेरा सब कुछ खोल दे खोल दे मादरचाद '

कुजडी अपनी नियति और परिणति का जानती थी, उसन गाते गात अपना ओटना उछाल दिया।

वह नाचती रही। नाचती रही।

राजा सूअर की तरह लोटता रहा। लोटता रहा जाजम की चादर म सलवटें पड गयी। जगह जगह शराब गिर गयी थी। उसन चक्ते कालीन और जाजम पर फैल गय थ।

नया गीत शुरू हो गया था।

धिनाक धि धिन धिनाक धिन धिनऽऽऽ

ढोलक बजी। कुजडी न गाया—

थारी मरवण टाना के लागी

के लागी जी ढाला के लागी

थारी मरवण ढाला के लागी ऽऽऽ

राजा न उठकर कुजडी का हाथ पकडा। उसकी काचली कुर्ती को वहशी की तरह फाड डाला। और दूसरी तीनो ढोलिनें पूववत तटस्थ भाव से गा रही थी—

म्हारा ससुरो जी री मैंना

म्हारी सासू जी री कामलटी

म्हारे साला री भनड लागी

थारी मरवण ढोला के लागी

राजा ने चीखत हुए कहा, 'खाल द घाघरा नाच कुजकली नाच

ढोलक बजती रही

गीत चलता रहा

और और आदमजात कुजडी नाच रही थी नाच रही थी उसकी आखें भर आयी थी।

राजा फतहसिंह तीन दिनो के बाद फतहगढ के शीशमहल स बाहर निकला।

वह इतना खुश था कि उसने ढोलन कुजडी को फतहगढ ही बख्श दिया, 'हम तुम पर बहुत ही खुश हैं। तुम हमारी आज से पडदायतण हो। आज से तुम पर्दे म रहोगी। हम तुम्हे पाव म सोना पहनने का भी हुक्म देते है।"

"अन्नदाता! मैं पदनीजियोडी (शादीशुदा) हू। मेरे भरा पूरा परिवार है।

"उसकी रोटिया का परबन्ध खजाने मे से हो जायगा।'

"पण ?"

पण-वण हमारे माम नही चलेगा। राजा ने उसे डाटते हुए कहा, 'कुजक्ली! पडदायतण कुजक्लीजी! हम आपसे बहुत खुश हैं। आपने हमे निरपत कर दिया।'

डावडी नथली और दो दूसरी डावडिया को उसकी सेवा के लिए भेज दिया गया। एक नया डयोढीदार भेज दिया गया जो राजा का खास आदमी था।

और ठाकुर गोपीसिंह का भी सपना पूरा हो गया। उसे राजा ने कई जागीरें दी। इस खुशी मे ठाकुर ने कुजडी से मिलने की इच्छा प्रकट की। वह उससे मुजरा करने के लिए फतहगढ आया।

इस बार ढोलण कुजडी पर्दे के पीछे रही। यही तो मर्यादा थी। आखिर वह पर्दायतण थी। राजा की पदायतण।

ठाकुर ने सोने की मोहर के साथ मुजरा किया, 'मुजरो करू, पडदायतणजी!"

"आपकी इच्छा पूरी हुई न ?"

"आपकी किरपा से!

कुजडी ने दुप्टता की, 'ठाकुर सा! क्या इन बडे-बडे जागीरदारो की बडी बडी जागीरो के पीछे यही तो असलियत नही है ?"

ठाकुर चुप रहा। एक क्षण के बाद वह दीनता से बोला, आपके लिए हजारो रुपया के गहने बन रहे हैं। राजाजी के होठो पर से तो आपका नाम जाता ही नहीं है। मुझ पर आप अपनी किरपा बनाये रखें।'

ठाकुर लौट आया।

कुजडी जाजम पर आकर पड गयी। उसका मन अजीब से दद से भर आया। राजा उससे राजी हो गया पर वह कितना घिनौना है! रीछ है। गदा है। वह मुख इसके बाद ? उसे सहमा काचल पथियो का प्रसाद लेना याद आ गया। उसे भी तो ? उसे यह सब याद करके उल्टी-सी आने लगी।

वस्तुत राजा भयानक यौन विकृतिया का शिकार था।

कुजडी न अपन आपको केवल भाग्य के सहार नहीं छोडा। नथली न उसे कुटिल बनाना शुरू कर दिया। वह नथली को अब अपनी मा की तरह समझने लगी।

एक सप्ताह के भीतर कुजडी के तरह-तरह के जवर बनकर आ गये।

सिर के लिए जडाऊ राखडी, पात, टीडी पलको, सकरपारा, बारियो, मोरमीरा, लडिया मोतियो की। काना मे टोटिया, मुरलिया, झूमरा कणफूल गले म सीमणिया, तेवटो, आड, हसनी सावल और सतलडा मोतिया का हार।

हाथा म सान की चूडिया, लाख की चूडिया जिन पर असली नगीन जडे हुए थे। आवला, हथफूल बाजूबद, टिडडा चौथ, बगडिया और अगूठिया।

पावों म पायल कडिया पगपान, बिछिया, चूडिया और रमझोल!

दरजी तरह-तरह के कपडे सी लाया।

देखते-देखते कुजडी के ठाट-बाट न्यारे हो गये।

उसन सदेश भेजकर अपने सासरेवालो को भी शहर बुला लिया।

उन्हें राजाजी स एक घर का पट्टा दिलवा दिया और उनके लिए रोटी का बदोबस्त भी कर दिया।

हालाकि राजा चाहता तो उसके पति को नगाडची बना सकता था पर इससे उसी की जाति के लोगो का हक छिनता था, इसलिए उसने उसे मजूर नही किया। इससे वह अपने समाज म अप्रिय बन सकती थी। एक सीमा तक पचायत की नौबत भी आ सकती थी। तब भले ही उसक

पति को राजवी नगाडची का ओहदा मिल जाय पर ढाली-समाज मे उसकी इज्जत कुछ भी नही रहेगी। हर एक की अपनी अलग ढग की इज्जत होती है, मूल्य होते हैं, तरीके होते हैं। ढोलण नाचे गाये, इसस उसकी इज्जत खराब नही होती है। पर दूसरा का हक मारे, यह असह्य बात हो जाती है। फिर देवोदास बाबा ने भी कहा था—'दूसरो का हक छीनने वाला लुटेरा होता है।' वह किसी का हक नही छीनेगी। विशेषकर अपनी जाति वाला का !

उसका परिवार यदा-कदा उससे मिलने आता था—वह भी एक-दो के दल म। सारे सदस्य एक साथ नही आ सकते थे। राजाजी की मनाही थी। उसने ढोलन कुजडी को कह दिया था, "सुनिए कुजकली जी, ढोलिया चमारा का हमारे यहा मेला नही लगना चाहिए। अब आपकी एक न्यारी इज्जत आबरू हो गयी है।" तब नथली ने भी उसे सलाह दी थी कि वह राजा जी का हुक्म माने वरना कभी उसके साथ ढोर सा बरताव हो सकता है।

इसीलिए पहली बार जब जेठाणी आयी—तब उसे उसकी यह बात पसद आयी। कुजडी के ठाट-बाट देखकर उसका मन प्रफुल्लित हो गया। उसकी नजर एक जगह ठहर नही रही थी। वह गहनो को तो पागल की तरह छू छूकर देख रही थी फिर भी उसे उनकी वास्तविकता पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह मनमुग्ध-सी बोली "ओह ! तू तो सोने से पीली हो गयी। अब भी गरब म मत फूलना जितना ऐंठ सकती हो ऐंठो। जितनी राजा जी की जेब खाली कर सकती हो, करो। यह जोबनिया है जो जिनगी मे सावणिया लाये हुए है।"

उसने अपनी जेठानी को कोई जवाब नही दिया। वह तो उसकी बातें सुनती रही। जाते समय जेठानी को उसने दस रुपय दिये। वह उसे आशीष देकर चली गयी।

उसी तरह एक दिन उसका पति गुलबिया भी फतहगढ आया था। उदास और टूटा-टूटा !

नथली ने उससे कहा, 'तेरा धणी आया है।

कुजडी का मन गहरे कुए मे चला गया, उसे ऐसा महसूस हुआ। वह

कुछ पल सोचती रही।

नथली ने फिर पूछा, "क्या आप उससे नही मिलेंगी ?'

'तू ही बता, क्या उमस मिलना मेरे और उसके लिए चाखा होगा ?'

चाखा सा नही रहेगा।' नथनी ने साफ-साफ कहा, "यह डयाढी दार जी है न यह राजा जी का खास आदमी है। चुगलखोर भी ह। चुगली कर दगा तो आपके धणी पर वकार की आफत आ जायेगी'। आप पर भी नाराजगी हो सकती है।"

नथनी की बात मे काफी सच्चाई थी। यदि राजाजी को जरा भी मालूम हो गया तो गुलबिया पर कोइ भी अत्याचार हो सकता है। बाबा दयोदास ने ही एक बार कुजडी को बताया था—'इन राजा सामन्ता के न्याय की कोई किताब नही है। इनका न्याय है इनका जूता, इनकी इच्छा और इनकी सनक। जदि राजाजी सनक म आ गये तो गुलबिया का घोडा से कुचलवा सकते है।'

वह भयभीत हो गयी।

उमने नथली को कुछ रुपये दिये और कहा, "ये उसे ले जाकर दे दें, मेरी ओर स छिमा माग लेना। उसे यह भी कहना कि वह इधर न आय। उस म टक्के-पैस भेजती रहगी।'

नथली रुपय लेकर गयी।

गुलबिया की आखा मे उदास सवाल रेंग रहा था। वह अपन सूखत हुए हाठ पर अपनी जीभ फिराकर बोला, "वह नहीं आयी ?"

'वह नहीं आ सकती, भाई।" नथली न अत्यन्त ही स्नहिल स्वर म कहा, 'वह अब केवल कुजटी नही रही, वह पटदायतण कुजक्ली जी है। उसकी डयोढी म महाराजा के सिवा कौन जा सकता है ?'

मुझे एक बार तो मिला दो।' उसने अनुरोध किया।

'यह नहीं हो सकता।

नथली बाई सा! मैं आपको हाथ जोडता हू आपके पाव पडता हू मुझे आप उमस एक बार मिलवा दीजिए।

नथली न उस समझाया, "भाई! तू क्या नहीं जानता कि यहा की

मरजादा अलग है। क्यू अपना और पडदायतणजी का जीवन जोखम म डाल रहा है ? हा, मैं राजाजी का हुक्म लेने का जतन करूगी। तू अभी जा जा मेरे भाई !'

गुलबिया मुटठी मे रुपये लेकर लौट आया। यही उसकी गैरत थी—औरत की कमाई पर जीना।

वह लौट आया। उसने रास्ते मे नशा किया।

जैसे ही वह अपने वास मे घुसा वसे ही उसे छिणगारी नाम की युवती मिल गयी। बहुत ही तेज-तर्रार औरत ! ढोलिना मे भी हलकी ढोलन ! गुलबिया को देखत ही बोली 'कहा से आया है रे गुलबिया ?

गुलबिया ने कोई जवाब नही दिया। वह पीए हुए था। कुछ कुछ डोल रहा था।

"अरे ! साला गूगा हो गया है क्या ?

छिणगारी उसके पास आ गयी। उसका रग सावला था पर नाक-नक्शे तीखे-तीखे और जानमारू थे। आखें तो इतनी मादक और कामुक थी कि जिसे देख लेती वह यह समझता कि यह मुझे चाहती है।

"बता, कहा से आया ?" वह कडककर बोली।

कुजडी के पास गया था । उसके मुह से बदबू का भभका निकला।

"सीऽऽऽ ! उसने अपन मुह पर उगली रखकर आहिस्ता से कहा, "अब तू अपनी लुगाई को कुजडी मत कहा कर वह पडदायतण कुजकली जी है। राजाजी की खास पडदायतण ! अब तू उसे ओछा बोल बोलेगा तो तेरी जीभ काटकर तेरी हथेली पर रख दी जायगी। अरे बावला ! अब तो वह सोने की पायल पहनती है।"

गुलबिया डर गया।

छिणगारी ने इधर उधर देखा। वह मिठास से बोली अब तू उस राणीजी का खयाल छोड दे। जदि माथा खराब हो जाय तो मेरे पास आ जाना, छिणगारी तेरा सदा माण रखेगी।'

गुलबिया के अन्तस मे पीडा का ज्वार उठ रहा था। वह शराब जरूर पिये हुए था, पर उसमे जोश खरोश की जगह एक निराशा थी। वह

विगलित स्वर मे बोला, "आज मैं उसके पास गया था, वह मुझसे मिली ही नही।"

"अच्छा।"

"हा, छिणगारी, उसने मुझे आने के लिए मना भी कर दिया। कुछ रुपये जरूर दिये।"

छिणगारी चौंक पडी। उसकी आखो म चमक आ गयी। बोली, "उसने तुझे रुपिये दिये, कितने ?"

दस।"

"इसे कहते हैं नाता का निभाना। वह है तेरी लुगाई। तुझसे आज भी उसे लाग-लगाव है। दस रुपिये ! गुलकिया !"

'क्या ?'

'मुझे एक रुपिया देगा ? यह तेरा मुझप उधार रहा। जब तेरे डील मे टूटण ही टूटण होने लगे तो मेरे पास आ जाना। तेरा हिसाब बिरोबर हो जायेगा आज घर मे अनाज नही है। मा भी भूखी है। तू तो जानता है कि वह लकवे की बीमार है ! जब वह अच्छी तगडी थी तब वह सारे मोहल्ले की सेवा करती थी—और आज वह बीमार है तो उसे कुत्ता भी आकर नही सूघता।"

गुलकिया ने कहा, "भूखा तो मैं भी हू।"

वह उत्साह स बोली, "फिर चल मेरे घर, मैं तेरी सारी भूखें मिटा दूगी चल चल न !"

छिणगारी उसे अपने साथ ले आयी।

ढोलिया के बास का ऊबड खाबड रास्ता था। सारे घर रद्दी किस्म के थे। एक एक इट पत्थर से उन लोगो की दीनता टपक रही थी। टाबर-टाली नगे-अधनगे थे। बूढे-बुढियाए फालतू चिथडो की तरह पडे हुए थे।

फिर भी गाना-बजाना जिनकी घुट्टी मे दिया जाता है, उन ढोलिया के घरा से ढोलको की आवाजें आ रही थी, साथ मे गाने का स्वर—

रुत आई रे पपइया थारैं बोलण री
रुत आई रे
जेठ मास लूवा म बीती, अब सुरगी रुत आई

रुत आई रे पपइया
आवाज शहद सी मीठी।

एक घर की चौकी पर दो किशोर बालिकाए बठी-बठी गा रही थी—

फिर फिर भिरमिर मेवलो बरसँ
बादलिया घररावे ए

गीत ही गीत। जैसे उन घरा के पत्थर भी गाते बजाते है।

छिणगारी के सग गुलबिया को देखकर सब चकित हो रहे थे। यह खसम छोडणी लुगाई बापडे गुलबिया को कसे पकड लायी ?

जेठकी न कहा "इस मालजादी का क्या ' एक से नाता करती है तो दूसरे को छोड देती है। पच भी इस राड को बेसी नही कहते ?"

मूलकी न नयन मटकाकर कहा, 'फीटीराड का मुह भी कौन लगाय ? दो मरद किये और दोना को छोडा। तोहमत लगायी कि दाना मरद नही है। लाज सरम का घालकर पी गयी है।'

जेठकी ने कहा, "एक बात इसमे चोखी है चाहे कितनी ही छिनाल हो पण अपनी मा की बडी सेवा करती है। चाहे कूवा-खाड ही करे पण उस तो दोनो जूण रोटी डालती ही है।'

'मरी राड मे अगुण के सागै सागै गुण भी बहुत बसै।

छिणगारी चली जा रही थी—हथिनी की तरह। कुत्ते भोकते हैं तो भाकने दो।

उसन गुलबिया को अपने दानखाने मे बिठाया और बोली, "पैसे दे ताकि मैं तरे लिए दारू और नाज ले आऊ।'

गुलबिया ने पस दिय।

वह एक टूटा हुआ बतन लेकर चल पडी।

गुलबिया विमूढ सा बैठा रहा।

पासवाले घर से आवाज़ आ रहा थी—

बागा बगीचा मैं फिरू रे जूरी
लाई चम्पके रा फूल
सूघो ता होतो ए

जूरी की वेदना मे गुलबिया की वेदना मिल गयी। सोचने लगा—
'मैं भी तो तरे द्वार आया था, कुजडी ! मुझ देख तो लेती, ऐ कुजडी !'

कुजडी न उसे नही देखा। गुलबिया ने हजार बार दरवाजा खटखटाने के बाद भी नही देखा। वस्तुत कुजडी का साहस ही नही हुआ। वह राजा के भय से आतंकित थी। जानती थी कि राजाजी को यह मालूम हो गया कि गुलबिया आला है तो वे गुलबिया की क्या दुगति करेंगे ! उस किसी भी दोष म कैद कर सकते है उसकी हत्या भी करा सकते हैं इस बीच मे उससे न मिलना ही उसने बेहतर समझा।

एक बार तो खुद कुजडी के पास छिणगारी आयी थी। उसन आकर कहा था, बैनड ! थोडी बहुत तो गुलबिया पर दया कर बेचारा तरे लिए तडप रहा है। उसके मन मे तो तरा रूप जोबन बस गया है।'

'फिर तेरी क्या वह केवल आरती उतारता है ?"

"आरती तो नही उतारता !' छिणगारी ने अपनी आखा का मटका-कर और निचले होठ को चूमकर छोडा, 'जब जब वह ऊबता है तब तब वह मरे पास ही आता है। गरीब का दूसरी मिलती भी नही। पातरो के यहा जाय तो ढेर सारे कलदार चाहिए फिर पातरें भी तो ढोलियो दमामियो को हेटा समझती है। नीचा समझती है। इसके लिए तो मैं ही रूपवती रभा हू। पर मस्ती के सार पल छिना क बीच वह तुझ याद करता है। तेरे एक एक अग की माला जपता है। अरी निठुर! उस पर एक बार दया कर।'

कुजडी गभीर बनी रही। कुछ देर सोचकर वह बोली, 'तू तो गली की गैली रही। पागपन तेरा साथ ही नहीं छोडता पर छिणगारी, तू जरा अक्ल लगाकर सोच कि यहा पग-पग पर खतरा है। यहा इस तरह की बातें सत्यनास करती हैं। और इधर राजाजी दिन प्रतिदिन मुझ पर ज्यादा मोहित हो रहे हैं। मैं अपने मन को मारकर जो वे कहत है पूरा करती हू। उनके घृणित से घणित जुल्मो को हस हसकर सहती हू। औरत के मामले म वे पूरे पलीत हैं।

और अत म कुजडी ने उसे समझाते हुए कहा, "अब तू ही उसे सभालना। मैं कुछ भी बन जाऊ पर मैं नही चाहती कि उसको (गुलबिया को) कोई तकलीफ हो ! वह नादान है उसे समझाती रहना।"

कुजडी इस माहौल मे रहकर वहा की सारी कुटिलताए और चाटुकारिताए सीखने लगी। उसमे सहायक रहा कामदार जेठमल वर्मा। हालाकि यह जेठमल वमा नाई था पर उसने अपने आपको इस वर्मा के पर्दे म छिपाकर रखा था। वह बहुत ही दूरदर्शी और चतुर था। सबसे बडी बात तो यह थी कि वह अग्रेजी भी जानता था। इसलिए उसने राजाजी को बताया कि वह कायस्थ है।

राजा फतहसिह उसके काम से बडा ही सतुष्ट था। धीरे धीरे वह उसके मुह लग गया था।

कामदार दीवान से असतुष्ट था और कुछ ऐसा चक्र चलाना चाहता था जिसस दीवान से राजा रुष्ट हो जाय और वह दीवान बन जाय।

इसके लिए उसने कुजडी को अच्छा साधन समझा। वह जान गया था कि दीवान कुजडी से नाराज है। उसने रानियो को भी भडकाया है। फतहगढ म कुजडी का रहना रानियो को जरा भी पसद नही था। यह तो रानियो और पटरानी का अपमान था। इसके विरोध मे रानियो और पटरानी ने राजा को कहा था पर राजा के कानो पर जू भी नही रेंगी।

पर घर म राड ने जन्म ले लिया था।

कामदार इसका लाभ उठाना चाहता था। तभी तो उसने नथली के माध्यम से कुजडी को सिखाना पढाना शुरू कर दिया।

कभी-कभी स्वय कामदार भी कुजडी से मिलता था। कुजडी राजा से सोना चादी और नकदी ले रही थी। अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर रही थी। पर उसे यह भी निरतर महसूस होता था कि राजा उसकी मन से इज्जत नही करता है।

एक दिन राजा कुजडी पर बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने कुजडी से कहा, 'आज हम तुम से बहुत खुश हैं। आज तुम जो मागोगी, वह हम तुम्हे देंगे।'

कुजडी ने सोचा कि बहुत ही अच्छा अवसर है। उसने राजा के पाव

दबाते दबाते कहा, 'अन्नदाता ! यह दीवान आपके विरोध में काफी कुछ उगल रहा है। सुना है वह फिरंगी से मिलकर गोरी हुकूमत के साथ आपके विरुद्ध कोई जालसाजी कर रहा है।"

राजा को विश्वास नहीं हुआ। उसने उससे कहा, "पडदायतणजी ! आपको राज-काज के काम में नहीं उलझना चाहिए। उसके लिए केवल रूप की ही नहीं, अक्ल की भी जरूरत होनी है।

कुजडी डर गयी। एक अज्ञात डर के मारे उसकी जबान तालू से सट गयी। उससे कुछ भी नहीं कहा गया।

राजा ने उसके उदास चेहरे को भाप लिया। वह बोला, "क्या बात है ! तुम्हारा मुह क्या उतर गया ? '

' ऐसे ही '

सुनिए मेरी प्यारी मरवणजी, मैं तुम्हें सच्चे हिये से चाहता हू। मेरी रग रग में तुम्हारा प्यार है पर तुमने राज-काज के काम में दखल दिया तो अच्छे-बुरे दोनो अजाम भोगने पड सकते हैं।'

पण दीवानजी मेरे बारे म उल्टी-सुल्टी जो बातें करते हैं ?

'जो तुम्हारे बारे मे आछे शब्द कहेगा, उसे मैं जिंदा जमीन में गडवा दूगा। उसकी जीभ कटवा डालूगा। तुम निश्चित रहो।' राजा ने लाव से कहा, 'तुमसे जो कुछ कहूगा, मैं कहूगा। दूसरा को यह हक नहीं है।

कुजडी समझ गयी कि उसे राज-काज म दखल नहीं देना चाहिए। राजा उसे कभी भी कुछ कह सकता है।

आप कुछ और मागिए।"

फिर बताऊगी।'

कुजडी जाने लगी तो राजा ने उसे अपनी ओर खीचकर बाहो म भर लिया।

राजा प्रसन्न हो गया एक दिन मागना जरूर।'

वह जब अपने महल लौटा तो उसके ए० डी० सी० ने बताया, 'आज कल दीवानजी पडदायतण कुजकलीजी के विरुद्ध बहुत जहर उगल रहे हैं।'

राजा के ललाट मे बल पड गये। वह बोला, "तो पडदायतणजी झूठ नही कह रही थी ? मैं अभी ही मिस्टर माइकेल से बात करना चाहता हू।"

माइकेल अग्रेजा की ओर से राजस्थान के रजवाडा मे घूमता रहता था और कौन राजा अग्रेजा का कितना विश्वासी है, इसकी गुप्त रिपाट दिया करता था। वैस वह अपने आपको इतिहासकार बताता था, रजवाडो के अध्ययन की बात करता था, पर था वह एजेंट ही है।

राजा फनहसिह से उमकी अच्छी दोस्ती हो गयी थी। राजा ने उस सोने के मूठ की तलवार और चादी की ढाल भी दी थी।

राजा फतहसिह को उसने कई मामलो मे ऐसी सलाह दी थी कि वह उसस खुश हा गया था। उसका विश्वासपात्र हो गया था।

आज भी जब राजा ने माइकेल को बुलाया तो वह आया।

उसने राजा से हाथ मिलाया। बडी देर तक दीवान को लेकर बातचीत हुई। अत म यह तय हुआ कि दीवान को हटा दिया जाय और उसकी जगह कुछ अर्से के लिए युवराज को दीवान बना दिया जाय। माइकेल ने इससे दो बडे फायदे बताये। पहला फायदा तो यह था कि युवराज राजकाज सबधी बातें सीख जायगा। दूसरा बडा लाभ यह था कि युवराज राजा के प्रति कितना विश्वासपात्र है, इसका भी पता लग जायेगा।

इस पर राजा न माइकेल से अनुरोध किया कि उन्हे भी युवराज की मदद करनी पडेगी ताकि युवराज होशियार हो जाए।

साथ ही माइकेल के मन म कुजडी के प्रति तीव्र जिज्ञासा जागी कि आखिर वह कौन है ?

उसने सहमत, शका करते पूछा, "क्या मैं उसे देख सकता हू ! य ढोलिनें कस गाती हैं, नाचती हैं विशेषकर आपकी कुजकलीजी को ?"

पलभर के लिए राजा चुप हो गया। माइकेल साहब कुजडी को देखना चाहता है अब वह केवल ढोलन नही उनकी पदायतण है। उसे भला पराया मद कसे देख सकता है ? लेकिन इतनी सी बात के लिए इतन बडे आदमी को नाराज करना भी राजा न ठीक नहीं समझा।

'आप क्या सोचन लग ?" माइकेल ने कहा, "कोई परेशानी हो तो

जाने दीजिए।"

राजा ने सोचकर कहा, "मैं आपको फिर बताऊंगा। बस दूसरी ढालणा का गाना आप कभी भी सुन सकते हैं।'

और माइकेल के जाने के बाद राजा सोचता रहा—माइकेल वायसराय का खास आदमी है। वह उस पर बड़ा विश्वास करता है। राजा यह भी जानता था कि माइकेल चोरी-चोरी सब राज्यों की रिपोर्ट भेजता है। यह राजा को बड़ा बना सकता है। अंग्रेजों का भी कृपा पात्र बना सकता है।

माइकेल ने उसकी राज्य की रिपोर्ट बहुत ही बढ़िया भेजी थी। इससे ही वायसराय ने उसे के सी आई ई की पदवी दी थी। ऐसे शुभ चिंतक को वह नाराज करना नहीं चाहता था। 'औरत का क्या? वह तो पाव की जूती है। एक कुजकली की जगह सैकड़ों कुजकलिया आ सकती हैं। यह सोचकर राजा ने तय कर लिया कि वह कुजडी का माइकेल को दिखायगा।

बस, दूसरे ही दिन उसने फतहगढ में एक भोज का आयोजन कर लिया। भोज के पहले सुरापान की व्यवस्था थी।

राजा ने खुद जाकर कहा, 'कुजकली!"

कुजडी ने राजा को टोका, 'आज आपने मुझे पर्दायतणजी की जगह कुजकली क्या कहा?"

राजा ने कहा, "कभी-कभी नाम लेने की भी इच्छा होती है।"

'कहिए, क्या हुक्म है?'

आज तुम्हारे यहां हमारा भोज है। माइकेल साहब भी आयेंगे। वे तुम्हें देखना चाहते हैं।'

कुजडी चौंक पडी। बोली "मुझे देखना चाहते हैं पर मैं तो पडदायतण हू। परदे में रहती हू।"

तो क्या हुआ?

यह तो मरजादा के विरुद्ध है। यह कैसे हो सकता है?"

'हो क्यों नहीं सकता?" राजा ने झल्लाकर कहा, तुम तो नेम नियमों की बातें करने लगी।

"मैं धरम की बात करती हू।"

"धरम-करम का चक्कर फिजूल है। बस तुम तैयार होकर आ जाना।" राजा का स्वर कठोर हो गया।

"आपन मुझे जो इज्जत दी है उस पर कीचड पड जायगा।'

राजा का स्वर तिक्त हो गया। वह बोला, "तुम समझती क्या नही कि यह समूचे राज्य का सवाल है, हमारी भलाई का सवाल है। अग्रेज-गवरमेंट राजी हो जाती है तो हम कई पदविया और मिल सकती हैं। हम सम्राट के 'एडिकाग हो सकते हैं।"

'पण अन्नदाता, इससे तो मैं वापस ढोलण की ढालण हो जाऊगी। जबकि मैं चाहती हू कि आपकी ही गोद म साती-माती एव खानदानी लुगाई की तरह मर जाऊ।'

राजा क्रोध म भर उठा, "नाम पदवी बदलन स जात धरम थोडे ही बदल सकता है। तुम्हें सज धजकर आना है यह मेरा हुक्म है।"

राजा बाहर निकल गया।

कुजडी हतप्रभ सी खडी रही। सोचती रही—'इनके लिए लुगाई साचेली पाव की जूती है । एक सुवारथ की पूरती है एसा ही है तो अपनी पटराणीजी को क्यों नही बाहर लाते? उम फिरगी क सामने क्या नही नचवाते? '

वह आतरिक सघष म झूलती रही। फिर उम अपन आप पर रहम आया। इसे इतना बढ चढकर नहीं बोलना चाहिए। आखिर उसकी बिसात ही क्या है? है तो वह एक गरीब ढोलण ही!

तभी एक डावडी न आकर कहा, "पडदायतणजी! आपकी मा सा पधारी हैं।"

उस अपन पास ठहरा लो, मैं कल मिलूगी। आज राजाजी पधारेंगे। यहा मोज है।"

"जो हुक्म!' डावडी चली गयी।

बस अब कुजडी के अपन अलग ठाट थे। पाच डावडिया। दो हयादीगर। दो रथ। खूब तामझाम।

थोडी देर वह चिंतित हो रही कि उसकी मा क्या पधारी है पता।

फिर वह अपने सजने धजने मे व्यस्त हो गयी।

शहर की सुन्दर ढोलनिया को छाटकर बुलाया गया था।

मुजरे म केवल माइकेल और राजा ही थे। दोनो गाव तकिये के सहारे बैठे थे। ढोलिनो ने भुक भुककर और रल रलकर मुजरा किया।

माइकेल हिन्दी और राजस्थानी समभता था। अग्रेज जाति की यह विशेपता रही है कि वह अपने हित की हर वात सीख लेती है।

सोन चादी के वतना मे शराब ढाली जाने लगी। ढोलिनें घूघट निकाले बठी थी। उन्होने भी नये घाघरे, कावलिया और ओढने पहन रखे थे। ये सब उन्ह आज ही दिय गये थे। ये वापस नही होंगे। इन्ह पहने हुए ही य ढालिनें घर लौट जायेंगी!

कुजडी आ गयी।

गहना ओर शानदार पोशाक म सजी धजी। लाख की चूडिया और लाख जडी काच की बिंदिया काच की कलात्मक आकपक चिमनियो के प्रकाश म चमक रही थी।

उसन वारी वारी से भुक भुककर सलाम किया, 'मुजरो करू, अण्ण दाता न मुजरो करू, साव नै"

माइकेल कुजडी के अप्रतिम रूप का देखता रह गया।

उसने अचानक कहा, "हाऊ ब्यूटीफुल? यह कितनी खूबसूरत है! ऐसी सुन्दर औरत हमन पहले नही देखी महाराजा! इस पर तो राज्य निछावर हा सकता है। सिंहासन छोडा जा सकता है। यह आप किस जगह से खोज लाये?

राजा माइकेल की आखो म दहकती वासना को भाप रहा था। वह समभ गया कि माइकेल कुजडी पर देखते ही मोहित हो गया है। यह कुजडी को पान के लिए कुछ भी कर सकता है या मैं कुजडी को साधन बनाकर इससे कुछ भी करवा सकता हू।

'अरे, आप कहा खो गय?"

"ओह! म कही नही खोया बल्कि मै सोचन लगा कि यह कितनी भाग्यहीन है वर्ना मैं इसे अपनी पटराणी बनाता। राजा ने सफेद झूठ बोला।

कुजडी राजा के झूठ से मर्माहित हो गयी। वह यह खूब समझती थी कि वह राजा की गदी आदतो को सहती है, इसलिए राजा उसे चाहता है वर्ना वह उसे एक ढोलण से ज्यादा कुछ भी नही समझता।

"गाने शुरू किए जाए ?' कुजडी ने पूछा।

"हा हा।'' माइकेल न कहा।

कुजडी राजा के पास बठ गयी।

साज वजने लगा। ढोलक और सारगी। सारगी बजाने वाला कुजडी का जेठ अखिया था। उसन नयी धोती, अगरखी और साफा पहन रखा था।

कुजडी ने ही कहा था बिना सारगी गाने का मजा अधूरा रहता है इसलिए आज सारगी वाले को जरूर बुलवा लीजिए।

इस मामले म राजा कुजडी की बात नही टालता था। कुजडी ने अपने जेठ को बुला लिया। इससे उसे कुछ धन की प्राप्ति हो जायगी। नये कपडे भी पहन लेगा। साज के साथ पहले राजा की प्रशसा के गीत गाये गये।

ढोलनिया पीने लगी। माइकेल न देखा—ये ढोलनिया अच्छा-खासा पी लेती हैं एक पर एक गीत गूजता रहा। ढोलनिया नशे म अपने ओढने फेंक चुकी थी।

"तुम गाओ ना ? राजा ने कुजडी का कहा।

कुजडी न राजा की ओर तीखी नजर से देखा। उसमे उलाहना था—'क्या मैं आपकी सही मायन मे पडदायतण नही बन सकती ? क्या आपने मुझे यह ओहदा सिफ दिखावे के लिए ही दिया है ?'

राजा नशे मे मदमस्त था। उसने कुजडी की बाह पकड ली जिससे बाजूबद उसकी बाह म चुभने लगा। वह चुभन की पीडा से तिलमिलाकर बोली, "छोडिए राजाजी, बाजू मे बाजूबद चुभ रहा है।"

राजा चिढकर बोला, "गा न कुजकली माइकेल साहब को खुश कर दे इनकी कली-कली खिला दे।"

कुजडी अपनी वास्तविकता से आहत हो गयी। उसे लगा कि वह ढोलण कुजकली से ज्यादा कुछ भी नहीं हो सकती।

उसे कामदार की बात याद आयी, "ये बडे-बडे लोग आपको आज भी ढोलण ही समझते है। राणिया-पटराणिया तो आपके नाम के साथ ऐसे थूकती है जैसे उनकी जीभ खारी हो जायेगी" और कुजडी उसके कथन की मार्मिकता और वास्तविकता समझती जा रही थी।

माइकेल चुप था। उसने न 'हा' कहा और न 'ना'। वह मदमस्त ढोलिनो को निहारता निहारता शेर की खाल वाली दीवार को देखने लगता था शेर की भयकर आकृति। लगता था कि शेर अभी झपटकर मास का लोथडा नोच लेगा।

इस बार राजा ने कुजडी को पकडकर कालीन की ओर झटका दिया, "नखरा न कर गा, कुजक्ली, गा!"

और कुजक्ली गाने लगी—

माथे मे ममद हृद से विराजै
तो रखडी की छवि न्यारी जी
म्हारा झिलता जोवन पर किण डारी
पिचकारी जी

माइकेल कुजडी के मधुर स्वर मे खो गया। कुजडी अत्यन्त ही ताल-सुर मे गा रही थी।

माइकेल ने उस पर एक मुग्ध नजर डाली। कुजडी गाये जा रही थी। ढोलिनें नाच रही थी।

राजा ने एक मोहर निकाली। उस मोहर को लेने के लिए जैसे ही ढोलिन राजा के पास आती थी, राजा उसकी काचली खोल देता था। वह काचली निर्विरोध खोलने देती थी। जानती थी कि मनाही का क्या मतलब हो सकता है?

माइकेल बुत बना रहा।

अखिया तो ब्रह्मलीन-सा बठा था। उसके सामने उसके ही भाई की बहू नाच रही थी और वह सारगी बजा रहा था। यदि उसे यह मालूम होता तो वह नही आता किसी और को भेज देता। इसे उसकी आत्मा स्वीकार नही कर रही थी।

जब राजा ने कुजडी को अपने पास बुलाकर उसकी काचली मे हाथ

डाला तो उसने राजा की ओर इतनी दीनता से देखा मानो कोई गाय कसाई की ओर देख रही हो। फिर उसने याचना भरी नज़र से माइकेल की ओर देखा। माइकेल उसकी आखा की मर्मा तक वेदना को समझ गया। उसने राजा को मना कर दिया पर राजा तो शराब के नशे मे उचित-अनुचित समझ ही नही रहा था। वह तो मदाध सा कुजडी के वस्त्रो को नोचने लगा।

तभी माइकेल उठ गया। उसने कहा "हिज हाइनेस! मैं जा रहा हू। मुझे यह सब अच्छा नही लगता।'

राजा तो गाव तकिये पर लुढक-सा गया। अब उसके होश पर बेहोशी हावी हो गयी थी।

माइकेल ने नाच गाना वद करा दिया। उसने कुजडी से माफी माग-कर कहा, 'पर्दायतणजी! मैं तो सिफ आपको देखना चाहता था ओनली टू सी यू और यहा तो सब कुछ भद्दा होने लगा मैं आपकी इज्जत करता हू। मुझे यह सब पसन्द नही।"

और माइकेल चला गया।

सारी ढोलिनें जाने को तयार हो गयी। कुजडी ने सबको इक्कीस-इक्कीस रुपये और दिये तथा अपने जेठ को तीन साने की मोहरें। हालाकि वह जेठ मे नही वालती थी पर अब ता उसके और उसके जेठ के बीच सम्बन्धो का अलगाव आ गया था, इसलिए उसने कहा अखिया जी! आप अपने घर को भरिए पूरिए। पैसा को केवल दारू-अमल मे मत उडाइए समय कभी एक सा नही रहता।'

अखिया ने कोई जवाब नही दिया। वह अपनी सारगी को उसके खोल मे डालकर धन लेकर चलता बना।

धीरे-धीरे महल मे सन्नाटा छा गया। राजा भमे की तरह पडा था। वह जोर जोर की भद्दी खर्राटें ले रहा था।

कुजडी उसके पास बैठी थी। उसके विरूप शरीर को देखते देखते वह घिन से भर आयी। उसकी इच्छा हुई कि वह इस पाजी को लाना से मारे जिसने कुजडी को कुजडी ही रखा। वह सोचने लगी—मैं भी कितनी भोली हू। अपने आपको पडदायतण समझने लगी। हू ता मैं नीची

जाति की ढोलण ही। मुझे अपनी असलियत को नही भूलना चाहिए। नही भूलना चाहिए। पीतल पर कितना ही भोल चढाओ, वह सोना नही हो सकता। जो लोग खून और खानदान को लेकर सोचते हैं, वे किसी को क्या प्रेम करेंगे ? कुजडी ! तू सदा कुजडी ही रहेगी। बेसी से बेसी ढोलन कुजकली कायल सी गानेवाली कुजकली।'

और उसे नीद ने आ घेरा।

बाहर 'कोचरी श्राऊ ऽ श्राऊ ऽऽ बोल रही थी।

भोर होने के साथ ही राजा अपने महल चला गया।

कुजडी भी उठकर आगन मे आ गयी। उसने नथली को पुकारा।

नथली विलोवणा कर रही थी। उसकी घरर-घरर की आवाज आ रही थी। वह उसे छोडकर आयी। पूछ बठी, "क्या हुकम है, पडदायतण जी ?"

"नथली !" कुजडी ने आहत होकर कहा, "नथली, तू मुझे पडदायतण जी मत कहा कर, तू मुझे केवल कुजकली कहा कर। अरी ! कुज की कली को कोई भी तोड मरोड सकता है। वही दसा मेरी है। मैं उससे अधिक कुछ भी नही बन सकती।

नथली ने प्रश्न भरी निगाह से कुजडी का देखा।

हा, नथली, मैं जो असल हू, वही रहूगी।" और वह जैसे याद करके बोली, "और मेरी मा क्या कर रही है ? उसे नास्ता पानी दिया ?"

"वह कोठरी मे बठी हुई है। नथली ने कहा, "उसने नास्ता पानी कर लिया।'

"उसे बुला ला।"

नथली जिस पाव गयी, उसी पाव लौट आयी। उसके साथ रुपाली थी। उदास और टटी टूटी। उसके चेहरे पर पीलापन था और वह काफी हताश लग रही थी।

"क्या तू बीमार है, मा ?" कुजडी ने पूछा।

"नही बेटी !'

"फिर क्या बात है ?"

रूपाली ने विस्फोट किया, "तेरा बाप मुझे छोडकर चला गया।"

"क्या ?" वह अवाक रह गयी।

"हा, कुजडी।'

उसने आश्चय म आखें फाडकर कहा, 'वह निकम्मा और निठल्ला तुझे छोड गया ?'

रूपाली ने कुजडी के ठाट बाट पर नजर डालकर कहा "अब वह निकम्मा नही रहा था। अब वह बहुत ही मनती और सीधा हा गया था। सारे नशे छोड दिये थे। दिन भर ढोलक लिय आसपास गावा तक घूमा करता था। साझ तक रोटी का कुछ जुगाड करके ही लौटता था। जो दिनभर बक-बक-झक झक करता रहता था, वह काम पडने पर ही बोलता था। बार बार एक ही बात कहता था—'बाबा रामसा पीर ने मेरी मत सुधार दी।' मैंने भी अपने भाग को सराहा। सोचा कि जवानी होरी कटी तो बुढापा तो सोरा कटेगा पर मुझे क्या मालूम कि तरा बाप मुझे इस तरह छोड दगा।'

पण हुआ क्या ?

"तेरा बापू जोगी बन गया।'

"क्या ? वह खडी हा गयी। उसकी आखें फटी की फटी रह गयी।

'हा बेटी, तेरा बापू जोगी बन गया।' रूपाली ने भर्राए स्वर म कहा, 'मैं नही जानती कि ऐसा उसन क्यो किया ?

कुजडी बडी देर तक विमूढ-सी खडी रही। उसकी आकृति नितात भावहीन थी। रूपाली का दद बढता-बढता आखा की राह बहने लगा।

"जो भाग मे लिखा होता है वही होता है।' कुजडी न मा को ढाढस दिया, 'तू किसी बात की चिता न कर, मैं तेरे बुढाप का बदोबस्त कर दूगी। तू गाव चली जा।

रूपाली ने कहा, 'मैं गाव जाकर अकेली क्या करूगी ?'

'यहा तू दुकेली कसे होगी ? कुजडी ने जरा गभीर होकर कहा, 'फिर गाव का घर सूना छोड देगी तो वह उजड जायगा। खाली घर म तो ऊदरे (चूहे) ही नाचेंगे।" उसन लम्बा सास लेकर राय देते हुए पुन कहा,

"फिर घर जसी यहा साति कहा ? यहा तो आदमी दिन-रात व
करता है।

रूपाली की आतरिक इच्छा तो गाव जाने की नही थी पर क
मर्जी के खिलाफ चलना उसे अच्छा नही लगा।

खा पीकर जाने लगी तो कुजडी ने पछा, "बापू जोगी बनक
गया ?'

"वह मुभम भीख लकर चल पडा। कहने लगा—'तीर
करूगा। अपनी इस काया को सुधारूगा। अपने जलम-जलम के
धोऊगा। वह जात का तो ढोली है ही। जब उसने चिमटा
गाया—

मन लागो मेरो या फकीरी मे
जा सुख है राम भजन मे
वो सुख नाही अमीरी मे
मन '

सच कहती हू कुजडी—लाग रोने लग। साचली उसके सुर म
थी। वह आगे बढ गया।

' थोडी दूर पर रावतिया काका बैठा था। रावतिया काका
पी रहा था। तर बापू के साथ भीड को देखा तो वह एकदम चौक
गेरुए वसतर म वह महात्मा लग रहा था। रावतिया काका चिलम
भूल गया।

"होरू तू ? काका ने अचरज से कहा, 'यह तूने क्या भेस
है ? यह ता कायरा का भेस है। अभी तो गिरस्ती की गाडी को
का समय है और तू बीच मे ही भाग रहा है। छि छि !

' तरे बापू ने काका की ओर देखा। काका ने उसे फिर धिक
'धिक है तुझे ! बेचारी रूपाली जसी लुगाई का बीच मझधार छोडक
रहा है ? अरे ! वह अकेली अपनी जिनगी की गाडी को कस खीच
जोगी तो मुझे बनना चाहिए।'

"तेरा बापू काका की ओर देखता ही रहा। कहा, 'यह मा की

है काका। मन को यह चोला पहनना था पहन लिया।

'इस चाले की क्या भदरक है! अपनी सोवणी-मोवणी लुगाई को छाडकर जुम्मेवारिया स भागकर, तेरी यह मिनख जूण सुख पा लेगी? मैं तो एमा नहीं साचना। सच्ची भुगति-जुगति तो मैनत-मजूरी मे है। अपना धधा करने म है।'

"तेरा बापू गाने लगा—

नहीं बाधेली मन्नै मायला
थारी कच्ची परीत
हु जावूला परभु रै द्वारे
या ही सच्ची परीत

और तरा बापू आगे गया। गली गुवाड स बाहर निकलते निकलते वह फिर अपने मीठे स्वर म गाने लगा—

यार जोगीडो धण रो यार जोगीडो

और इस तरह वह ससार के बधन तोडकर चला गया।'

कुजडी न उसे झल्लाकर कहा, "पण तूने उसे क्यू नही रोका?"

रूपाली ने लम्बा सास लेकर कहा, मैं उसे क्या रोकती? वह चार-पाच दिना तक तो गायब रहा। फिर आया तो भगुवे भेस म। पक्का जोगी बनकर। भीख मागन लगा, राजा भरथरी की तरह 'मया' कहकर मेरा तो कालजा फट गया। मैं रीस से भर आयी। सोचन लगी— ये कसा माणस है? पहले एक नसे मे धुत रहता था और अब दूजे नसे म धुत रहने लगा। मह दुख देवा' किसी न किसी नसे म रहगा ही जोग-सजोग की बात है। किसी लुगाई के भाग मे धणी का सुख नही होता है। आखर मैं तो हठीली हू। मेरा भी अपना मिजाज है मैंने सोच लिया—ये जोगी बनकर मोह माया को छोडना चाहता है तो छोडने दो। मैंने भी उसके खप्पर म भीख डाल ही दी। जा रे जा जा जोगीडा जा यह ससार बहुत बडा है—उसमे रम जा मैं तुझ मीरा की

तरह नही रोकूगी   नही कहूगी—

मत जा   मत जा मत जा जोगी

पाव पड़ूं मैं तोरे

मैंने नही कहा। मैं तेरे सामने झूठ नही बोलूगी बल्कि मैंने छिन से भरकर अपने घर के किवाड बद कर लिये।   किवाड के सहारे सिर टिकाकर रोयी जरूर।   बडी देर तक रोती रही। फिर हिया कठोर करके पड गयी।"

कुजडी ने लम्बी आह छोडकर कहा, "मा! बुरा नही मानो तो एक बात कहू?

"कह।'

"दरअसल तूने बापू को कभी भी हिये से नही चाहा। तुझे सदा ही उसकी सूग आती रही।   वास।"

रूपाली का कोई जवाब नही सूझा।

कुजडी ने चुभने वाला सत्य उगला था। उसका सिर झुक गया।

कुजडी ने फिर कहा, "चलो, यह अच्छा ही हुआ। अब तू अपने रास्त और वो अपने रास्ते।   पण मैं आज भी तेरे जवाई के लिए कभी-कभी तरसती हू। तरसती भी नही हू तो मुझे उस पर दया आती है।'

रूपाली फिर भी चुप रही। उसने तो जसे अपने होठ सी लिये हो।

कुजडी ने कुछ रुपये उसके हाथ म रखे और कहा, "चली जा   तेरे लिए तो अपना घर ही ठीक है।' रूपाली उसी दिन चल पडी।

समय के साथ साथ कुजडी का मन भरने लगा। उसे अब पक्का विश्वास हो गया कि ढोलण की नियति गाना-बजाना ही है। चाह वह राजा-ठाकुर और अमीर उमरावो के सामने नाचे, चाहे वह गरीब गुरबा के आगे—है उसको नाचना गाना ही।

उस दिन एकाएक माइकेल ने कहलाया था 'मैं आपके यहा आना चाहता हू। आपके कुछ गीत सुनूगा। पिछले कई दिनो स मानसिक रूप से बडा ही परेशान हू।   हिज हाइनेस महाराजा साहब का हुक्म भी ले

लिया है। बस, आपके हुक्म की जरूरत है।'

जब राजाजी न हुक्म दे दिया तो कुजडी को क्या एतराज हो सकता है? फिर भी उसने राजाजी से पुछवाया तो राजाजी ने कहा, "तुम माइकेल साहब को राजी रखो। उन्हें चोखी तरह पटा लो। बडे काम के आदमी हैं। वैसे मैंने तुम्हारे कहने पर अपने बटे का दीवान बना दिया है। इससे तुम्हें खुशी होनी चाहिए। मैं कल रात आऊगा।"

कुजडी न अपने सिर को भटका देकर कहा—"राजाजी ने मेरे कहने से दीवानजी को हटाया है। सायत हटाया होगा पर नया दीवान बना तो उनकी अपनी मर्जी से ही है। उनका अपना ही बेटा। साप को हटाकर नाग को बिठा दिया।"

नथली ने आशका से घिरकर कहा, 'मुझे लगता है कि अन्नदाता का मन आपसे अब भर गया है।

नथनी! मुझसे उनका जी नही भर सकता। वे घिनवाले काम करते हैं। उस मैं ही सह सकती हू। यह ताब मुझम ही है कि उस रीछ का सहू। सहसा वह किसी दहशत से घिर गयी। राजा को रीछ कहकर सोचा कि उसने बहुत बडा अपराध कर दिया है। कभी राजा को मालूम पड गया तो जीभ खिचवाकर हथेली म रखवा देंगे।

नथली ने कुजडी कहा, "आप बहुत ही चिंतित हो जाती है, पडदायतण जी! मैं तो समझती हू कि बाबा राम सा पीर सब ठीक करेंगे।'

कुजडी शात रही।

रात को माइकेल आया था। बाहर जा छोटी-सी बारादरी थी, आज उसम जाजम बिछायी गयी। दारू का प्रबध किया गया।

हल्का-हल्का प्रकाश था।

माइकेल ने दारू का घूट लेकर कहा, "इधर मैं बहुत ही परेशान हू।'

"क्या?'

"तुम जानती नहा, इस देश मे क्या हो रहा है। यहा के लोग महात्मा गाधी के नेतृत्व मे आजाद होना चाहत हैं। ब्रिटिश हुकूमत और राजा-

महाराजाओ के राज्या का अत करना चाहते हैं। दरअसल पदायतण जी इस देश के लोग सीधे सादे हैं। वे नही जानते कि अग्रेजो म हकूमत नही छीनी जा सकती है। उसकी जडें बडी मजबूत हैं। मजेदार बात तो यह है कि उनके राज्य म सूय अस्त ही नही हाता !"

कुजडी चौंक पडी, "क्या कहा आपने ?"

माइकेल ने दप से कहा, मैंने यह कहा कि हमारे राज्य म सूरज डूबता नही।

'क्या आपके राज्य मे गत नही होती ? साबजी ! दिन के बाद तो रात होती ही है।'

माइकेल उसके भोलपन पर मुसकराया। बोला, पदायतणजी ! आप भोली और अनजान है।' फिर माइकेल ने कजडी को ज्ञान विज्ञान की बातें बतायी।

कुजडी सारी बातें समझकर भी विश्वास नही कर पायी। जब उसने तरह-तरह के कई सवाल किये ता माइकेल ने उसकी पीठ थपथपाकर कहा, "अभी आप नही समझेंगी गाना सुनाइए "

कुजडी ने एक ढोलन को बुला लिया था। उसका नाम सु दरकी था। कुजडी ने उसे नयी पोशाक दी ताकि उसकी मदद हो सके। सु दरकी ढालक को पाव के नीचे दबाकर बैठ गयी।

"आप लोग दारू नही पीयेंगी ? '

"नही।'

"क्या ?' माइकेल चौंका। उसन अपना पाइप निकाल लिया था। उसे जलाकर पीने लगा। उसका धुआ छाडते हुए वह बोला, "आज क्या है ?'

"आज रामदेव बाबा की एकादसी है। आज के दिन हम दारू फारू नही पीती।

"धरम की बात है ?"

'जी साब जी।'

इसके बाद ढोलण कुजडी न गाना शुरू कर दिया। जब उसने कुरजा' गायी तो माइकेल का मन भर भर आया।

कुजड़ी ने ऊंचे स्वर म गाया—

"कुरजा ए म्हारो भवर मिला दे ए
तू कुरजा म्हारी भायली
तू म्हारी धरम री बैन कुरजा ए
एडे छेडे ओलमा बीच म सात सलाम
कुरजा ए कागज ले र चाली ए '

माइकेल मत्र मुग्ध हो गया। वह गीत के भावार्थ में खो गया। कुरजा पक्षी को—प्रीतम से मिलाने री विनती थी।

माइकेल के मुह से वाह वाह निकल गया। फिर ढोलन कुजकली ने रसिया सुनाया। उसने सुदरकी की ओर सकेत किया। फिर गाया—

"दल बादल बिच चिमके जी तारा
माभ मर्मै पिव लाग जी पियारा
काई रे जवाब करु रसिया
जवाब करूली, जवाब करूली
आनीजा री सजा मे रीझ रहूली
काई रे मिजाज करू रसिया

माइकेल वाह-वाह करता गया।

जब महफिल खत्म हुई तो माइकेल न कुजडी को धयवाद दिया और सुदरकी को ग्यारह रुपये। उतन ही रुपये कुजडी ने सुदरकी के हाथ मे थमा दिये। कहा, कुछ दिन तो आराम स गुजरेंग।

सुदरकी ने वे रुपये अपने ओढने के पल्लू म बाध लिये। कहा "बन पूरा महीना आणद से गुजर जायेगा। तेरे कारन हम लोगा की दसा सुधरी है पण जदि तू बुरा नही माने तो एक बात पूछू ?

पूछ।'

जणती पूछगी ता रीस तो नहीं करेगी ?

"अपने आदमिया स काई रीस की जाती है।" कजडी ने गहरी आत्मीयता स कहा, 'सुन्दरकी ! अणूती सणूती जो तेरे मन म है वह तू कह डाल तेर पट का आफरा भी मिट जायेगा वरना तेरा पेट फूलता फूलता फट जायगा।'

ढोलन कुजकली

सु दरवी ने सिर झुकाकर पूछा, "तू पडदायतणजी है या ढालण !"

"नाम की पडदायतण और काम से ढोलण। अरी बावनी ! जात धरम मिटाये से थोडे ही मिटते हैं ? मेरी तो राजाजी को बडी जरूरत है इसलिए इस गढ मे बैठी हू वरना तो मैं कभी की धक्के देकर निकाल दी जाती।

सुदरवी ने अपनी ढोलकी उठा ली। बोली, "फिर भी तू यहा बठी है तो अपने लोगा का तो भला करती है। रामदेव बाबा तेरी 'पत' बनाये रखें।"

वह चली गयी।

कुजडी जाजम पर एक तरह से बिछ सी गयी। उसे खुद को यह सवाल सालने लगा। पीडा देने लगा। वास्तव म वह पडदायतण नहीं बन सकी।

इसी पीडा म खोयी खोयी वह सो गयी।

दूसरी रात।

आकाश एसे फला था जसे उसने चूनर ओढ रखी हो। कोई उल्लू घू घू कर रहा था।

राजा फतह आज बहुत उद्विग्न था। उसने बताया, "दीवान जी को पद स हटाने से हमारे सारे राजवी लगभग नाराज हैं।'

ता क्या हुआ ? रीस करेंगे ता अपनी रोटिया कसी खायेंगे।'

अरी पडदायतण जी ! तू राज-काज की बातें नहीं समझती। यहा टेढी होती हैं।'

मैं राज काज की बातें नही समझती।' कुजडी न कहा, ' पर इतना जानती हू कि जो राजा अपने चाकरा ठाकुरा से डरता हो, वह क्या राज काज चलायगा ? अन्नदाता ! मेरे खिलाफ सारी राणियाँ-ठकुराणियाँ हैं। मुझे तो आप इस गढ का पट्टा लिख दीजिए जिसम साफ-साफ लिखा हो कि यह गढ पडदायतण कुजवली का है और इस उसकी सात पीढी म कोई भी खाली नहीं करवा सकता।'

राजा ने कहा, "मैं तुम्हारे नाम से पट्टा लिखवा दूगा। अभी मौज-मस्ती के समय ये राज-काज की बातें चोखी नही लगती।'

कुजडी ने सीधा उस पर आरोप सा लगाया, "और आप होश म आते ही यहा स भाग जाते हैं। मेरी कोई बात भी नही सुनते।"

राजा ने शराब का गिलास एक ही सास मे खाली कर दिया। वह ललाट म बल डालकर लम्बे स्वर मे बोला "पडदायतण जी! बुरा नही मानें तो एक बात कहू?"

"कहिए।'

"आपकी खोपडी के पीछे कोई और खोपडी काम कर रही है।'

कुजडी को राजा की बात से एक झटका-सा लगा। उसके स्मृति पटल पर कामदार की सूरत उभर आयी।

राजा ने उसे अपनी बाहो म भरकर कहा, "तुमने मुझे जो सुख दिया है वह किसी भी लुगाई ने नही दिया, इसलिए हम तुम्हारा मान रखते है पर इतना जानिए कि जो दूजा की राय पर चलता है वह कभी न कभी किसी 'दरड़े' म पकायन गिरता है। इस भूमि पर अक्ल निकालने वाले बहुत हैं।"

कुजडी गभीर हो गयी। उसने राजा की बात का कोई जवाब नही दिया।

राजा उन्माद की स्थिति तक पहुच गया था। उसने कुजडी को अपनी बाहो म भरकर कहा "मगर हम तुम को इस गढ का पट्टा जरूर देंगे।

कुजडी मन ही मन खुश हो गयी। उसने कामदार को मन ही मन धन्यवाद दिया।

मगर सुबह तक राजा की खुमारी नही मिटी, उसके पहले ही माइकेल का सदश आ गया कि हुजूर से जरूरी बातें करनी हैं। राजा जल्दी से कपडे बदलकर अपने गढ पहुच गया। उसने माइकेल को हाजिर होन के लिए कहला दिया।

कुजडी न इस पर कोई गौर नही किया। वह नहाने धोने लगी। नहा धोकर उसने रामदेव बाबा को धूप' किया। फिर उसन सोचा कि

आज की रात वह रामदेव बाबा का जुम्मा करायेगी। सारी रात जागरण होगा। रामदेव बाबा उस पर तूठेंगे। प्रसन्न होंगे।

तभी डावडी न आकर कहा, "देवोदास बाबा का कोई आदमी आया है।"

देवोदास बाबा का नाम सुनते ही वह चौंक पडी। उसम आनद की लहरिया उमड आयी। वह लपक्कर वठक में आयी।

आगन्तुक नायक जाति का मोवनिया था। नायक मोवनिया 'पौरातिया था। गाव मे पहरा लगाता था और इसके एवज मे उसे हर घर से एक एक रोटी मिलती थी। कोई-कोई सब्जी भी दे देता था। यही उसके जीवन का आधार था।

"बोल मोवनिया, कैसे आया ?'

'मुजरो करू पडदायतणजी ने। बाबा ने कहलाया है कि गाव कब तक पधारेंगी। गाव छाडा तो फिर उस ओर मुह मोडा ही नही। बडा याद करते हैं बाबा।"

"उन्हें मेरा पावधोक कहना। वे देवता आदमी हैं। सारी माणस-जूण को एक सुख की जिनगी देना चाहते हैं। उन्हें कहना—आपकी कुजडी तो अब महल की मैना हो गयी है। उसके पावो मे जजीरें ही जजीरें है। फिर भी मौका निकालकर आयेगी ही।

और आपकी मा सा बिलकुल ठीक है ?'

"चोखा। हा, मदिर के लिए पैसा तो बराबर मिलता रहता है ?'

'पडदायतणजी !' मोवनिये न कहा, "बाबा को रुपिये-टक्के की बिलकुल परवा नही है। जदि ठाकुर पेटिया दे दत हैं तो ठीक और नही देत ह तो ठीक। मगर जहा तक मेरा ध्यान है—ठाकुर एक माह रुपय देता है और एक माह नही देता। बडे लोगा का तो यही काम है।

कुजडी गुस्से म भर गयी। भवें चढाकर बोली, "ठाकुर सा तो बडा ही कमीना है। मदर का 'धरमादा भी चट कर जाता है।'

बात यह थी कि कुजडी ने राजा का कहकर उस हनुमान मदिर का जीर्णोद्धार करवा दिया था और बाबा देवोदास की उसन इतनी तारीफ की कि उसके लिए राजा ने पेटिया बाध दिया जिससे मदिर की पूजा भी

रहने वालो की है, इसलिए इसका सारा सुख बराबर बटना चाहिए।"
कुजडी एक पल चुप रहकर आत्त स्वर मे बोली, "नथली ! तेरी कोई जिनगी है ? दो रोटी के टुकडो के पीछे तुझे बैल की तरह काम करना पडता है।"

नथली न इधर-उधर देखकर कहा, "पडदायतणजी ! यहा तो बडे लोग आदमी का भी गिरवी रख लेते हैं। इन बडे लोगा के सीने म हिवडे की जगह पत्थर के टुकडे है। हम पर भगवान कब राजी होगा ?"

कुजडी का चेहरा भगवान के नाम पर कठोर हो गया। वह बाली, 'यह भगवान भी पसे वाला का ही हो गया है। वे ही तो बेसी परसाद चढात है, व ही तो मदर बनवात हैं। साची बात तो यह है कि माणस से लेकर दवी दवता सुवारथी हो गये हैं। जसे जो मिनख राजा की नजर बेसी गिन्निया करता है, राजा उससे ही बेसी राजी रहता है।"

नथली उठ गयी। उठकर उसने कमरे मे जाकर कपडो का सन्दूक उतारा। सन्दूक पुराना था। जगह-जगह टूटा हुआ। उसकी एक कोर खच से उसकी दा उगलियो मे चुभ गयी। सर-सर खून बहने लगा।

नथली बाहर निकली। कुजडी मिल गयी। खून देखकर कुजडी घबरा गयी। बाली 'क्या बात है ? यह खून कैसे आ रहा है ?"

' सन्दूक की कार चुभ गयी।'

"जल्दी स कूकू (कुकुम) दाब।'

नथली न विश्वास से कहा, 'मैं इसका इलाज अभी करती हू।'

वह मोरी पर चली गयी। थोडी देर मे लौट आयी। कुजडी ने देखा कि खून बहना बन्द-सा हो गया है।

अरी तूने इसके क्या लगाया ?"

' मैन इस पर पेसाब कर दिया।

' क्या ? '

' हा पडदायतण जी, पेसाब से घाव भी नही पकता, और उसम मवाद भी नही पडता।"

"फिर भी कूकू दबा ले।

"हुक्म !" नथली चली गयी। वह कूकू दबाकर आ गयी तो कुजडी

ने अचरज से कहा, "लगी हुई की चोखी दवा बतायी। पेसाब से और क्या-क्या होता है ?"

नथली ने बताया, "मेरी मा बताया करती थी कि पेसाब से शरीर में कई रोग दूर हो जाते है। लगी हुई चोट पर तो पेसाब रामबाण दवा है।"

"तूने यह चोखा बताया।' कुजडी ने याद करके कहा, "आज मगलवार है। मुझे हडमान बाबा के दरसन करने हैं। यहा कही मदर है क्या ?"

"है न !"

"कहा ?"

'यहा से पच्छम दिसा जाना पडेगा।'

"पैदल चलना पडेगा ?"

"चलना तो पदल ही पडेगा वरना पालकी पर जाना पडेगा।"

"देवी-देवताओ के दरसन करने मैं पालकी पर चढकर नही जाती। इससे पाप लगता है। मिनख पर मिनख बठकर पुण्य का काम कैसे कर सकता है। चल पैदल ही चलेंगे।"

कुछ देर मे दोनो चल पडी। उनके पीछे एक ठाकुर था। बडी-बडी मूछोवाला ठाकुर।

थोडी दूर पर मालिया का वास था। कच्चे-कच्चे मकान। कच्ची ही नालिया। बीच बीच मे बडी-बडी चट्टानें।

चौराहे के बीचोबीच पानी का एक 'कुडालिया' किया हुआ था। शायद उस कुडालिया (गाल चक्र) द्वारा किसी न अपना कोई बुरा ग्रह उतारा हो।

नथली इस टोने का तोड जानती थी। उसने उसम थूक दिया। थूकने से वह अपवित्र हो गया और उसकी शक्ति नष्ट हो गयी पर कुजडी उसमे थूकना भूल गयी।

जब वह हडमान बाबा का दरसन करके लौटी तब उसके सिर म दद होन लगा और बदन म उसे कमजारी-सी महसूस हुई।

उसने नथली को बताया "पता नहीं, अचाचूक डील बिखरने लगा

है। पोर-पोर मे पीड होने लगी है।"

नथली ने कहा, "आप कहे तो वैद्यजी का बुला लाऊ ?" फिर साच-कर बोली, "माथे मे तो दरद नही ?"

"है।"

"आप 'काली मिरच' कराके खा लीजिए। उससे माथा तो 'पकामत' ठीक हो जायगा।"

"नही, मेरी इच्छा नही है।"

वह अचरज से तनिक उछलकर बोली, "आपका कुडालिये मे पाव आ गया था। फिर जब आप हडमान बाबा के दरसन कर रही थी तो तीन *मालिनो ने आपको देखकर कहा था—ओह, आप कित्ती फूटरी हैं ! हाथ* लगान भर से दाग पडता है। मैं ता समझली हू कि उन 'कालजीवियो' की चाख (नजर) आपको लग गयी ठहरिए, मैं अभी लूण मिरच आप पर ऊवार कर आग मे डालती हू।

नथली रसाडे म स हाथ म नमक मिच मिलाकर ले आयी। उसन कुजडी को बिठाया और दोनो हाथा से सात बार नमक मिच ऊवारा। फिर उसे आग मे डाल दिया मगर उसमे कोई भी गध नही आयी।

"पडदायतणजी ! आपको बास आयी ?

' नही।"

"बस आपको उन कालजीविया की चाख ही लगी है।" नथली न गहरे विश्वास के साथ कहा, 'अब आप थोडो देर म ठीक हो जायेंगी।

कुजडी चुपचाप जाकर ढोलिये पर सो गयी।

आहिस्ता-आहिस्ता उस नीद आ गयी।

उस दिन कुजडी बहुत खुश थी। वह सदा-सदा के लिए फतहगढ़ की स्वामिनी बन गयी थी। राजा न उस पट्टा दे दिया था।

उसकी जेठानी अबीरी आयी थी। वह सुन्दर पोशाक पहन हुए थी। उसने सिर पर सोने का बोरिया बाध रखा था।

कुजडी ने सबस पहन पूछा, ' जेठाणीजी ! वो कसे हैं ?'

अबीरी ने नाक-भौं सिकोडकर कहा, "बस उस खानगी राड छिणगारी के घर पडा रहता है। पता नही उस छिनाल ने उस पर क्या कामण (जादू) कर दिया है कि उसे तो आठो पहर छिणगारी ही छिणगारी दिखती है।"

कुजडी जरा भी आवेश मे नही आयी। वह अत्यन्त ही शात स्वर मे बोली, "अरे ! वह बापडा वहा न पडा रहेगा तो फिर करेगा क्या ? आखिर है तो मिनख का जाया ही। जो अन्न खायेगा, उसे सब कुछ चाहिए।

"पण वह उसे पैसा भी खिलाता है।"

"वह छिणगारी को पैसा नही देगा तो फिर वह क्या खायेगी ?" कुजडी ने कहा, "हा, एक बात है ?"

"क्या ?

'आप उसका दुबारा ब्याव कर दीजिए।' कुजडी न बडे सयत स्वर म कहा मैं तो उसके पास अब वापस नही आ पाऊगी। ब्याव हो जायेगा तो बिचारे का नाम लेनेवाला भी हो जायेगा। परलोक भी सुधर जायेगा।"

जेठानी उसे अपरिचित नजर से देखती रही। उसकी भाव भगिमा मे लग रहा था कि जसे एकाएक कुजडी अजनबी हो गयी है।

कुजडी ने सिर झुकाकर कहा, "मैं आपको ठीक कह रही हू। आप उसका दूजा ब्याव कर दीजिए। जो कुछ भी पसा लगेगा वह मै द दूगी। बीनणी के गैणें भी बनवा दूगी।'

अबीरी की स्थिति एक नादान बच्चे की तरह हा गयी।

उससे न हा' कहा गया और न ना।

बस टुकुर टुकुर वह कुजडी को देखती रही।

उसकी समझ मे नही आया कि आखिर इस कुजडी को हो क्या गया है ?

'आप तो एस देख रही हो जस मैंने बडी इचरज वाली बात कह दा, पण मैंने बिलकुल ठीक बात कही है। आखिर अब मेरा उससे क्या नाता है ?'

अबीरी उसकी बात की गहराई को नही समझी। उसन कोई उत्तर

नहीं दिया।

थोड़ी देर तक खामोशी छायी रही।

अघोरी बोली, "तू उसकी कुछ भी नही लगती है, फिर भी वह तुझे याद करता है।"

कुजड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया।

अघोरी बड़ी देर तक बातें करती रही। फिर उठकर चली गयी।

उसके जाते ही उसने नथली को बुलाया। कहा, "नथली।"

"जी।"

"तू एक बार छिणगारी को बुला ला।"

"क्या?"

"उसे मैं गुलबिया की चोखी तरह मोलावण देना चाहती हू।"

"कभी ले आऊगी।

"हा, भादवे मे रामदेवजी का मेला है, तुम चलोगी न?"

"आपके साथ तो मैं चलूगी ही।

"इस बार सवा मण का चूरमा करूगी। बडा परसाद वाला हुआ है।"

'बहुत चमत्कारी देवता है। कलजुगी देव ही रामसा पीर है।'

'हा, नथली!' कुजडी ने आत्मिक श्रद्धा से कहा, 'यही सच्चा देवता है। इसके दरबार मे ही राजा ठाकुर, चमार नायक, मुसलमान और तेली-तमोली जा सकता है। हर धरम और जाति के लिए उसका मदर खुला है। रूणीचा गाव का तो उस परभु के कारण रग ही बदल गया है।"

नथली ने भी श्रद्धा म हाथ जोडकर कहा, 'अधे को आखें देते हैं, कोढी का रोग दूर करते हैं पागल को पग देते हैं। वो तो साचो देवता हैं। गरीब-गुरबा का माण रखने वाला तवर अजमालजी का बेटा आपको घणी घणी खम्मा।'

कुजडी ने आखें बद कर ली। वह भीतर से अभिभूत सी हो गयी। उसके सामने रूणीचा गाव का विशाल मदिर, उसम रामदेवजी के कपडो के घोडे, कलश, घटिया अखूट जल वाली बावडी तालाव और बाबा की समाधि का एक एक दृश्य नाच गया। तबूरा पर वाणियो की गूज

छमछमो की झवार—

साधो भाई, मन लोभी बडोई जबर रे
ओ तो सोचें सौ बरस री,
पल की नई है खबर रे
साधो भाई

नथली गदगद हो गयी। वह अपनी कोठरी मे गयी जहा रामदवजी के 'पगल्या' रखे हुए थे। उसन उन पावो को नमस्कार किया। फिर उसने घोडे को हाथ जाडे—कपडे के बन श्वेत घोडे को। रामदव बाबा की सवारी!

नथली को डयोढीदार न पुकारा तो वह और कुजडी दोना चौंक पडी।

नथली पल्ला सभालती हुई लपककर डयोढीदार के पास गयी। बोली, "मुझे आपने क्या हेला मारा था ?

"डावडीजी! ठाकुर गापीसिहजी आये है। पडदायतणजी स मिलना चाहते है।

नथली पगोपग कुजडी के पास आयी। उसने ठाकुर क आगमन के वारे मे अरज की।

ठाकुर के नाम के साथ-साथ कुजडी की जीभ पर कसलापन तैर आया। साच बठी, 'इसी निठुर ने मुझे जबरदस्ती यहा पहुचाया है। जब इसने मेरे धणी को झूठ मूठ ही चोरी के अपराध मे पकडा था तब मैंने इसे अपनी इज्जत देत हुए परतिगा की थी और अब मेरे दिन आ गये है। राजाजी मुझ पर मोहित है। अब क्या नही इसस भी अपना हिसाब बरोबर कर लिया जाय ?'

उसने उसी समय रामदेव बाबा को याद किया—बाबा! मेरी पत रखना। मुझे अपना बदला लेने का 'सत' देना। मैंने अपना बदला ले लिया तो मैं तुम्हारे पर सोन का छत्तर चढाऊगी। एक बार फिर रूणीचे गाव आऊगी।

'आप क्या विचारन लगी, पडदायतणजी ?

'उन्ह भेज दीजिए और डयाढीदार को कहिए कि वह कामदारजी

को अभी बुला लाय। वे अपने साथ चार-पाच आदमी भी लायें।"

नथली न अपना सिर भुकाया और वह चल पडी।

उस कुछ भी अदाज नहीं हुआ कि उसकी मालकिन क्या करने जा रही है।

कुजडी शीशमहल म आकर बठ गयी।

नथली मदेशा कहकर वापस आयी और उसने कुजडी स पूछा, 'पडदा तो रहगा न ?'

कुजडी जार स खिलखिलाकर हस पडी। नथली भौंचक्की-सी उसे देखने लगी।

कुजडी बोली, तू ता सफ्फा गली है। मैं पडदा क्यू करूगी ? मैं कौन सी सेठाणी ठकुराणी हू ? मैं तो ढोलण की ढोलण ही रही। पडदायतण बनने के बाद भी मरी इज्जत-आबरू म क्या फरक पडा ? हा, कुछ धन मेरे पास जरूर हो गया। धन क्या पातरा के पास नही होता ! पातर से अधिक यहा मरी इज्जत नही है। इज्जत तो तब होती जब दूजी ड्योढी की लुगाइया की तरह मैं भी रहती—एकदम पडदे और जाली झरोखो मे।"

नथली समझ गयी कि पडदायतणजी के मन म अपनी स्थिति से बडा दुख है। वास्तव म राजाजी ने इन्हे पडदायतणजी का कोई रोब रुतबा नहीं दिया है।

वह ठाकुर को बुलाने जाने लगी कि कुजडी ने पूछा, "तूने डयोढीदार जी को कामदारजी को बुलाने के लिए कह दिया न ?"

'जी, कह दिया।

"फिर ठाकुर को भेज दे।'

ठाकुर गापीसिह आया। उसने आते ही व्यग्य से कहा, 'मुजरो करू, पडदायतणजी !'

'मेरा भी मुजरो मजूर करीजो।' कुजडी ने भी अथभरी मुसकान बिखेरते हुए कहा, 'विराजिए आलीजहा। आज इणगी आने की तकलीफ कसे की ? कम हम याद आ गये ?'

ठाकुर न जाजम पर बठते हुए कहा 'सुना है, आप हमसे नाराज है ?"

कुजडी शीशमहल पर लटकत हुए झाड फानूस पर निगाह जमाकर बाली, 'आप बातें ही नाराजगी की करते है। हडमानजी के मदर का आधा 'पटिया' आप हजम कर जात है। सुना है कि आपने मनमुख ढाली के तीना बेटा को अडाणे (बधक) रख लिया है और मिरामिन बरक्तडी की मोटयार बटी को साऊकारजी ने अपने यहा अडाणे रख ली है। ठाकुर सा! क्यू इत्ते पाप कर रह है? पाप की जड सदा हरी नही होती।'

ठाकुर चौंका। बोला, 'यह पाप है तो फिर पुण्य किस कहग, पटदायतणजी? मैंन और साऊकार न उन्ह 'दस बोसी धान दिया है। जदि हम उस कुल पर दया नही करते तो उसके सारे मिनख कीड मकाडा की तरह भूखो मर जाते।

'उन्ह देना तो आपका धरम है। आप ही तो हम ढोलिया के माई-बाप ह। फिर हम आपके बिरती है। बिरती जजमान के घर का दरवाजा नही खटखटायगा तो किसका खटखटायेगा? सच तो यह है कि यह अयाय है आपका!'

'यह धधा है।' ठाकुर ने कहा, ढालणजी, सच ता यह है कि साऊकार म ही मैंने कुछ नये पतरे सीखे ह। उनसे मुझे काफी लाभ हुआ है।'

कुजडी न सोचा कि इस ठाकुर की जबान पर भी उसके मन की असलियत आ गयी। उसने मुझे आखिर ढालण कह ही दिया। वह तिक्त स्वर मे बोली, वो साऊकार तो राखस है, पागला है, पैसे के लिए बावला है। ईसर ने उसे चलन फिरन की सकति तो नही दी इस पर भी वह मिनखा का सबड मबडकर लोही पीता है। इसका अत बडा बुरा हागा। इसको अत समय पानी देनेवाला भी नही मिलेगा।"

वह समय तो बहुत दर है। ठाकुर ने कहा "हा, तेरा चहेता बाबा दवोदास साऊकार और मुझसे बहुत नफरत करता है। सच तो यह है कि हम दोनो उस आख दीठ नही सुहाते। मैंने भी उसे चतावनी दे दी है कि तू अब जल्दी स अपना बारिया बिस्तर गोल कर ले वरना कभी तुझे जिदा ही जमीन म गाड दूगा। पता नहीं, साला कहा स आ मरा है?'

कुजडी ने रोष भरे स्वर मे कहा, 'आप सबको तो बाबा बुरा लगेगा ही। बाबा हम गरीब गुरबो का पखधर जो है। वह आदमी आदमी की

बराबरी की बात जो करता है। वह एक आदमी द्वारा दूजे आदमी के गोलापे (गुलामी) की निन्दा जो करता है। उसने ही तो बताया है— आदमी-आदमी सब बराबर हैं। बडा-छोटा बनानेवाले ये बडे लोग हैं। बाबा ने ही कहा था कि इस देस का हर मरद लुगाई अमल खाता है। नसवाला अमल तो आप बडे लोग खाते हैं और धरम रूपी अमल हम लोग खाते है।'

"तुम सबको वह बाबा कभी बरबाद करके छोडेगा।' ठाकुर ने चिढ़कर कहा, "मैं अब उसकी शिकायत राजाजी से करूगा। और उसने प्रसग बदल दिया, "कुजडी! बाबा-साबा की बात खतम कर और दारू पिला।

कुजडी के हृदय पर फिर चोट लगी कि उसने उसे कुजडी कहा। उसने ठाकुर को डाटा, "ठाकुर सा! मैं पडदायतण कुजकली हू! मुझे अब आप अदब से ही पुकारें तो अच्छा रहेगा।'

ठाकुर गुस्से मे आ गया। वह बोला "हमारी बिल्ली हमसे ही म्याऊ! खर, हम अपने बोल वापस ले रहे हैं," और वह उस पर वासना से लिपडी हुई नजर डालकर बोला, "पडदायतणजी! अब तो हम पिलाइए।

'आजकल मैंने अपने हाथो से परायो को पिलाना बद कर दिया है।'

"हमें पराया मे समझती है आप?"

'पराया तो नही समझती पर अब आप पीने के मामले म मुझे टावर लगते हैं।'

'वो कैसे?'

"अरे! यहा जो भी पीने आता है, वह एक बातल तो पानी की तरह पी जाता है। बोतलो से पिलाते पिलाते गिलासा से पिलाना तो मैं भूल ही गयी हू।" कुजडी ने अदाज से कहा।

'हम भी बोतल खाली कर सकते हैं।' उसने घमड से कहा।

कर लिया!

'भरोसा नही होता है हम पर? ठाकुर ने घमड से कहा, 'मैं अच्छे-अच्छे पीनवाला का रूला सकता हू।'

कुजडी न एक बातल अलमारी मे स निकाली और उसे थमा दी।

गोपीसिंह उसे गटागट पी गया। बीच में उसने दो लम्बे सास लिये।
उसे खासी भी आयी।

कुजडी ने उसे गौर से देखा। उसके होठो पर दुष्टता भरी मुसकान
थिरकी। खुमारी में ठाकुर उठा और कुजडी को बाहो में भरकर बोला
कुजडी ! तू लुगाई नहीं काई सुख की गद्दी है।'

कुजडी ने उसे जोर का झटका दिया 'बदतमीजी बद कीजिए
यह न भूलिए कि मैं पडदायतण कुजक्ली हू ! दूर हटिए।'

वह खिलखिलाकर हसा "तू पडदायतण कुजक्ली नहीं बन सकती।
तू ढोलण की ढोलण ही रहेगी ढोलण कुजक्ली !'

उसने उसे फिर दबोचा कि वह जोर से चिल्लायी 'बचाओ
बचाओ !'

ड्योढीदार और माली भागकर आये। उन्होने ठाकुर को दबोच लिया।
तभी कामदार भी आ गया। उसने सारी स्थिति देखी तो वह गुस्से
में भर गया। उसने अपने आदमियो को ठाकुर के हाथ-पाव बाधने की
आज्ञा दे दी। फिर वह राजा के पास गया। उसने सारी स्थिति बतायी।

राजा कुछ देर तक सोचता रहा। फिर उसने कहा, कामदार जी !
इस मामले को आप ही निपटा लीजिए। वैसे आप एक ही बात का
खयाल रखें कि वह ढोलण है और ठाकुर गोपीसिंह हमारे रिश्तेदार !
कुछ ऐसा चक्कर चलाइए कि साप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे।

कामदार तो कुजडी का पक्षधर था ही। वह सीधा कुजडी के पास
आया। उसने कुजडी से सलाह मशविरा किया। कुजडी ने साफ-साफ कह
दिया कि वह उससे अपना बदला स्वय लेना चाहती है।

"कैसे ?

'एक बार इस दुष्ट ने मेरे पति को चोर करार करके मुझे अपने सग
सोने के लिए मजबूर किया था। तब मैंने परतिगा की थी—ठाकुर, तेरे मुह
में मैंने पेसाब नहीं किया तो मैं असल बाप की बेटी नहीं। आज मुझे वो
परतिगा पूरी करनी है।'

'बहुत ही भयकर प्रतिज्ञा है। घृणित भी।

कुछ भी हो कामदार जी यह होना चाहिए। मैं आपसे बडी

उम्मीदें रखती हू। और जब ठाकुर गोपीसिंह को फतहगढ से धक्का देकर निकाला गया तो उसका मुह पशाब के कारण चरपरा था।

"इस हरामजादी की गरदन धड से अलग कर दूगा!" ठाकुर अपमान की पीडा से तिलमिलाकर बडबडाया। फिर लज्जा और विक्षोभ के मारे ठाकुर गाव चला गया पर शर्म के मारे किसी को कुछ नही बताया।

कुजडी के मन को अजीब सा सतोष हुआ, हालाकि कामदार ने इसे उसके मन की कोई विकृति ही समझा। उस पर आरोप लगाते हुए उसने कहा "पडदायतणजी, यह सब पागलपन है।"

'मुझे यह पागलपन करते हुए बडा ही सताप हुआ।" कुजडी ने कहा, "आप इन सबके पागलपनो और सनको की जाच करें तो आप खुद पागल हो जायेंगे। मैंने तो एक बार ही पागलपन किया है।'

कामदार हैरान होकर चला गया।

जब राजा को इस हरकत का पता चला तो वह बहुत ही आगबबूला हुआ। एक बार तो उसकी इच्छा कुजडी को खरी-खरी सुनाकर दड देने की हुई पर अपनी विकृतिया याद करके वह चुप हो गया।

दिन ढलने लगा।

साझ होते ही ड्योढीदार ने नथली से कहा,"नथली! पडदायतणजी से कहो कि एक साधू बाबा उनसे अभी मिलना चाहता है। वह उनके गाव से आया है। बता रहा है कि उनसे उसका कोई जरूरी काम है।'

नथली ने जाकर कुजडी को सदेश दिया। कुजडी सोचने लगी कि ऐसा कौन-सा बाबा है? फिर वह वहा आयी जहा बाबा खडा था।

सजोग से ड्योढीदार चिलम भरने अपनी कोठरी म चला गया। कुजडी ने गौर से देखा। वह बाबा को नही पहचान सकी।

आप आप कौन हैं?' कुजडी ने हाथ जोडकर पूछा।

'मैं बाबा ब्रह्मानद गायत्रीवाला हू।'

बाबा की आवाज सुनते ही वह देवोदास बाबा को पहचान गयी।

आप ? और इस भेस म?' कुजडी चौंक पडी।

'खामोश रहो, कुजडी! मेरा नाम मत लेना। मैंने तुम्हें अपनी बेटी से भी ज्यादा अपना समझा है। तुम्हारे सामने झूठ नही बोलूगा। मैंने उस

पिशाच सूदखोर निरपाचद की हत्या कर दी है।

"क्या ?'

"हा, कैसे और क्या की यह तुम अपने आप जान जाओगी। मैं अभी जा रहा हू। पता नही जीवन म फिर तुमसे भेंट होगी या नही ? बहुत सभव तो यही है कि अब दुबारा भेंट नही होगी ! तुमसे आत्मा से जुडाव हो गया है। इसीलिए मिलने आ गया।"

कुजडी मर्माहत होकर बोली, 'बाबा ! तू कैसा आदमी है ! क्या आदमी आदमी के बीच की ऊच-नीच मिटा देगा ? तू फिरगियो और राजाओ ठाकुरो स सिंहासन छीन लेगा ? '

'मैं अकेला नही हू। मेरे जैसे हजारो इसान है जो क्राति लायेंगे। इस व्यवस्था और शोषण को मिटाने के लिए आखिरी सास तक लडते रहेगे। अच्छा मैं चला, कोई आ जायेगा ?'

देवीराम बाबा ने दाढी मूछ काट डाली थी। सिर मुडवा लिया था। उसने गेरुए वस्त्र पहन रखे थे। उसके एक हाथ म कमण्डल और एक हाथ म भाला था। वह जसे ही जाने लगा कुजडी ने उसे रोका "ठहरिए बाबा जी मैं अभी आयी।

वह बिजली की फुर्ती से भीतर गयी और कुछ नकदी रुपय और चद जेवर लाकर बाबा की झोली मे डाल दिये 'ये आपके काम आयेंगे।

'लेकिन कुजकली मैं पकडा गया तो ये कुत्ते तुम्हें नोच डालेंगे !

'तो क्या होगा ?" कुजडी ने अत्यत ही सवेदनशीलता से कहा 'एक कुजडी नही रहेगी तो कौन-सी दुनिया मिट जायेगी ? एक ढोलण नहीं रहेगी तो कौन-सा गाना बजाना बद हो जायगा ? मैं तो इतनी निरीह हू कि किसी का जमारा भी नही सुधार सकती। मै तो अकूडी का चिथडा हू। कभी कोई ऐसे ही आकर आग लगा देगा और मैं जल जाऊगी। पण आप तो दयालु आदमी है दस को सुततर कराने वाले है। गरीब गुरबा को रोटी दिलाने वाले है इन फिरगियो के जोर-जुलम को मिटाने वाले है। आपका जिंदा रहना जरूरी है। ईसर आपकी रिच्छा करें आपको मरी उमर दे दें।'

वह भर भर आयी। उसकी आखें नम हो गया।

बाबा ने उसके सिर पर हाथ फेरकर कहा, "कुजकली! मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगा। आज तुमने मुझे पन्ना धाय और भामा शाह की एक साथ याद दिला दी है। तुम्हारा यह धन हम सबकी लड़ाई में काम आयेगा। भगवान तुम्हें सुखी रखें।"

"कहां जायेंगे बाबा?"

"दिल्ली। मुझे एक बार गोरों से हिसाब चुकाना है।"

ड्योढ़ीदार के आने से कुजकली उसके गले पड़ गयी। डांटते हुए बोली, "आप आलतू फालतू लोगों को क्यों आने देते हैं? बहुत ढीठ था, भीतर घुस ही गया।"

"क्यों, मेरा नहीं कहा? आगे से इस बात का ध्यान रखूंगा।"

कुजकली आकर अपने ढोलिये पर लेट गयी। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। उसके मानस पटल पर मृदगार की बदीन आकृति नाच गयी। उसके अत्याचार सजीव हो गये। वह कमीना किस तरह आदमियों को जानवरों की तरह रखता था यह उसे याद हो आया। वह कितनी निर्ममता से रोते बिलखते किसानों की गाय-बैल छीन लेता था जैसे वह आदमी नहीं पत्थर हो। उसे बाबा ने मार डाला? चोखा ही किया। ऐसे कमीनों को तड़पा तड़पाकर मारना चाहिए था। बिना बदला लिये जुल्मों को नहीं रोका जा सकता।

बाबा जरूर देवताओं की मिट्टी का बना हुआ है जो अपना सुख हम सब के लिए छोड़ चुका है। वह अपनी जान की बाजी लगाकर फिरंगियों को हटायेगा। वह सीना फुलाकर कहता था—गोरो हटजाओ। इन गोरों को देस से निकाल दो।

ढोलण कुजड़ी रावतिया काका का एक गीत गाने लगी—

नगाड़ो बाजे रे
घूसो बाजे रे
राज रयत रो हुवै चोखो
राजा गोरा बामण-बाणिया,
पाणी पीवे छाण छाणकर,
लोहू पीवै ए अणछाणिया,

मानखो नाज रे

उसने अभी गाना खत्म ही नही किया था कि नथली भयभीत सी आयी और बोली, "राजाजी और माइकेल साब जी आय हैं।'

वह चौंक पडी, 'क्या ?'

'हा, पडदायतणजी !" नथली न सिर झुका लिया।

"आज कुसमय क्स आय ? उसे आश्चय हुआ।

वह सभले, इसके पहले ही माइकेल आर राजा शीशमहल म आ धमके। दोना काफी गभीर और गुस्से मे थे।

दोना जाजम पर बैठ गये। कुजडी मुजरा करती रही पर आज दोना न उसके मुजरे का जवाब नही दिया। उसन ही पूछा, ' अ नदाता ! सब कुशल मगल तो है ?

' मैं पूछता हू कि तुम देवादास बाबा को कब स जानती हो ?'

"जब से हडमान बाबा के मदर जान लगी।' कुजडी ने उत्तर दिया।

'और तुम कब स मदिर जाने लगी ?'

'जब से मेरी शादी हुई।'

'यानी यही पिछले दो-ढाई साल से।'

हा अ नदाता ! ' कुजडी ने कोमल स्वर मे कहा, "मगर आप "

"और तुम्हार उससे क्या क्या सबध है ?' माइकेल ने भडककर पूछा, "उसको तुमने अपने बारे म क्या-क्या बताया ? वह तुम्हे क्या-क्या कहता रहा ? सच सच बताना ? '

' मेरा उसस कोई नाता रिश्ता नही है। वह एक भला आदमी है। गरीबा की भलाई की बात करता है। मिनख और मानखें का डका बजाना चाहता है। कैस बजाना चाहता है, यह मैं नही जानती।"

"तुम यह भी नही जानती कि वह कहा का रहने वाला है।"

' नही, साबजी !'

' तुम झूठ बोलती हो! माइकेल ने डाटा, 'हमे पता चला है कि तुमन उसे जान-बूझकर मदिर मे रहने के लिए मजबूर किया था। यदि तुम्हारा उसस कोई नाता रिश्ता नहीं था फिर तुमने हिज हाइनेस को कहकर उसके खाने पीने का बदोबस्त क्से कराया ?"

'मैं उस पर गरधा रखती हू। बाबा एक देवता पुरुष है।'

वह दवता नही, राक्षस है।' राजा बीच म ही चिल्लाया, "वह हत्यारा है। वह क्रातिकारी देवीप्रसाद है। उसने पाच गार सार्जेंटो की हत्या की है। वह भगोडा खूनी था।"

"क्या ?' कुजडी की आखें फट गयी।

वह हमारा और महाराजा का तख्त उलटने वाला बदमाश था।" माइकेल बोला।

"और वह साऊकार किरपाचद का खून करके भाग गया है।'

"नही-नही एसा नही हो सकता।' कुजडी अनजान बनकर चीखी।

'ऐसा हो चुका है। उसन साऊकार का बदूक की गोली से उडा दिया है।"

कुजडी ने बडी नाटकीयता से कहा, "नही अन्नदाता, आपको गलत-फहमी हो गयी है। वह एसा काम नही कर सकता। वह तो इतना दयालु था कि चीटी को भी नही मारता था, फिर वह इतने आदमियो का खून कैसे कर सकता है ?'

माइकेल क्रूरता स हसा, 'जो चीटी को नही मारते हैं वे ही आदमी को आसानी से मार देते है।'

राजा ने शात होकर कहा, 'अब तू बता कि वह बाबा गया कहा ?'

"मुझे क्या मालूम ?"

माइकेल ने उसे हिकारत से देखा और कहा, 'हिज हाइनस ! य आपकी ढोलिण बडी चालाक है। मुझे तो एसा लगता है कि य उस आतकवादी से मिली हुई है और इसका आपकी पर्दायतण बनना भी मुझे किसी कुटिल चाल-सा लगता है। आह ! इस औरत ने किस सफाई म हमारी ही रोटियो पर हमारे दुश्मन को पाल लिया।"

राजा ने उसे समझाते हुए कहा, "कुजकली ! तूने तो अपनी जात बता ही दी। जिस थाली म खाया, उसी म छेद कर दिया। फिर भी हम तेरे साथ दया का बरताव कर सकते है, जदि तू देवोदास बाबा के बार म सच सच बता देगी ! वह इसी सहर में छुपा हुआ है। पागी कीरतनिया देवोदास के पखो के निसानो का पीछा करता करता यहा तक पहुच गया

है। उसे पक्का भरोसा है कि बाबा वहा से सीधा भागकर यहा आया है। और यहा तेरे सिवा और उसका कौन है ? '

'आप मेरा भरोसा रखें कि वह अभी तक तो यहा नही आया है।' वह आयगा तो मैं आपको तुरन्त खबर कर दूगी।

माइकेल ने विश्वासपूवक कहा, 'यदि वह अभी तक यहा नहीं आया है तो अब जरूर आयगा।

राजा ने उसे चेतावनी दी 'जदि वह यहा आ जाय या वह तुझे कोई सदेश भेजे तो हमे तुरन्त सूचना देना। इतना याद रखो कि अब तेरी चाल-बाजी तेरी सात पीढी का कोल्हू म पिसवा सकती ह।

कुजडी ने सिर झुकाकर कहा 'आप भरोसा रखें कि मैं ऐसी नौबत नही आने दूगी।'

डयोढीदार लपककर उसके पास आया। उसने सिर झुकाकर कहा, 'खम्मा खम्मा अन्नदाता अभी एक साधू बाबा यहा आय थे!''

'साधू बाबा ? कब ?''

अभी! पडदायतण जी न उसस कुछ देर तक बातचीत भी की थी।'

'क्या बातें की ?''

''मैं तो कोठरी मे चिलम पी रहा था।'

माइकेल ने विश्वासपूवक कहा वही आया होगा और इस हराम-जादी न उसकी मदद की होगी। महाराजा साहब! आपके ही साये मे हमारे दुश्मन पलते हैं।'

राजा का धय जाता रहा। उसने कुजडी का गला पकड लिया। घृणा मे आखें तरेरकर बोला, 'कमीनी! बता वह साधू कौन था ? वरना मैं तेरी बोटी-बोटी कटवाकर चील-कौवा को चुगवा दूगा।

ढोलण कुजडी के गले से घरर की आवाज निकली। उसकी आखें फटने लगी। उससे कोई भी जवाब नही दिया गया।

माइकेल ने राजा का मना कर दिया, हम खुद पता लगा लेंगे कि यहा कौन आया था। खोजी तो हमारे पास है ही। वह यहा के पावो के निशान देखकर सब कुछ बता देगा। इस कुजकली को रात भर सोचने का अवसर दिया जाय। यदि यह अपना भला चाहेगी तो बाबा के बारे

मे सच सच बता देगी वरना इसकी वडी दुगति होगी।"

कुजडी दहशत से घिर गयी। अब उसकी पोल खुल जायगी। फिर भी उसने साहस नही छोडा। उसने साफ इनकार करते हुए कहा कि वह देवीदास बाबा के बार मे कुछ भी नही जानती।

माइकेल और राजा चले गय। कुजडी सो नही सकी। उसे बाबा की बतायी हुई पन्ना धाय की कहानी याद आयी। उसने मेवाड के राजा के लिए अपने पुत्र का बलिदान कर दिया था। उसे देखकर भी ता बाबा को पन्ना धाय की याद आयी थी। उधर नथली का भी रोम रोम काप रहा था। जब नीद नही आयी तब उसने नथली से दारू मागी। उसने लगभग दो पैग एक ही सास मे पी लिय।

फिर भी उसे आतरिक सघष के कारण नीद नही आयी। उस यह भी महसूस हुआ कि उसे नशा चढा ही नही है।

नथली न ही सहमते-सहमते पूछा, 'यह सब क्या हो रहा है, पडदायतणजी ?

'कुछ नहीं नथली!'

"वह बाबा कौन था ?'

'वह किरातीकारी था। वह फिरगियो को अपने देस से निकालना चाहता था। वह राजा ठाकुरा से रयत का हक वापस लेना चाहता था। वह मानख का रखवाला था। अरी! मैं तो ठहरी धूड बराबर एक ढोलण। मेरी क्या इज्जत है? मेरी क्या जिनगी है? बस तो सारा ढोली समाज ही जिनावर की जिनगी जीता है। सुबह चूल्हा जल गया तो साझ की चिंता? उनकी लुगाई भूख के मारे मारी मारी फिरती हैं। ऐसी स्थिति मे मेरे हाथ से बाबा को मदद हो गयी तो मेरा तो जमारा सुधर गया। जिनगी सारथक हो जायेगी।'

'पण इसका नतीजा क्या होगा इसे भी आपने जाना है?'

'राड स बमी कोई गाली नही होती। कुजडी ने कहा," मैं जीना भी तो नही चाहती। ऐसे जीने म क्या भदरक है? इससे तो मौत भली। जसा मैंने जीवन मे सोचा था, वसा नही हुआ। मैं तो इस जीने से ऊबी हुई हू। ला, थोडी दारू ला।

वह फिर दारू पीने लगी। आहिस्ता आहिस्ता उसे सभी चिन्ताओं से मुक्त करने वाली नींद ने आ दबोचा।

सारे शहर को पुलिस ने घेराव कर लिया था। साधू-संतो के आश्रमो की खोजबीन शुरू हुई पर सुबह तक देवोदास नहीं पकडा गया।

राजा और माइकेल पागी को लेकर फतहगढ आये। पागी अपनी पैनी निगाह से पदचिह्नों को देखने लगा।

उसने गढ से काफी दूर पर पदचिह्नों को पाया। उसने बताया 'यहा तक देवोदास बाबा आया था।

माइकेल ने अपने हाथ की बेंत को अपने पाव पर पटककर कहा, "उस बाबा को इस नमकहराम ने ही छुपा कर रखा है।"

राजा ने किले की तलाशी के लिए सिपाहियों को हुक्म दिया। उधर एक अधिकारी पुलिस का एक दल लेकर ढोलिया के वास गया।

दूसरे दल के साथ पुलिस इस्पेक्टर रूपाली के घर की ओर रवाना हुआ।

देवोदास की खोज!

माइकेल कह रहा था, "महाराजा साहब! यदि हम उस आतकवादी हत्यारे को पकडने म कामयाब हो गए तो वायसराय हम पर खुश हो जायेंगे और उस खुशी मे वह हमे क्या-क्या बख्श दें?

मैं शहर का चप्पा चप्पा छान मारूगा।' राजा ने व्यग्रता से कहा। क्रोध म उसकी आकृति बडी डरावनी हो रही थी।

वह कुजडी के पास फिर आया। इस बार उसने उसका हाथ पकडकर जोर का झटका दिया, "मादर ! बोल, वह साधू कौन था?"

वह दीवार से जा टकरायी। एक छोटा सा गूमडा' उसके ललाट पर उभर आया। सहसा कुजडी को अपने बाप की याद आयी। उसका बाप भी तो साधू बना हुआ है।

उसी पल राजा ने उसके केश लपककर पकड लिये। वह जोर-जोर से केश खीचने लगा—"बता मालजादी, वरना मैं तेरे मिरचे भरवा दूगा "

बालो की जडो म अथाह पीडा हो रही थी। उसकी आकृति की नसें

तन गयी थी। वह दबे हुए स्वर मे बोली, 'नही-नही !"

राजा कडक्कर बोला, "बता, वह कौन था ?"

"मेरा बाप ! अन्नदाता, वह मेरा बापू था।"

"तेरा बापू ?"

"हा, अन्नदाता !' कुजडी ने बताया, "वह साधू हो गया है।"

माइकेल गुस्से म तिलमिला गया। उसन कहा, "यह ढोलण कितनी हुशियार है। मुझे तो ऐसा लगता है कि यह बरसा से उन लोगा के साथ मिली हुई है। अरी गधी ! यदि वह तुम्हारा बाप होता तो तुम हम इतनी देर म बताती ? यह चक्र किसी और पर चलाना।'

"नथली !" राजा न पुकारा।

"जी, अन्नदाता !'

"जा, तू हिजडे फरसा को बुला ला। उसे कहना कि वह अपने सार हथियार लेकर यहा आ जाए !'

'ठीक है। उसने कापते हुए स्वर मे कहा।

नथली के जाते ही राजा ने कुजडी को झिझोड डाला और उस को लात मारते हुए कहा "सोच ले वरना तरी खर नही।"

कुजडी की आखें आसुआ से भरी थी। वह अशक्त सी जाजम पर पडी रही। उसे *एक बार फिर राजस्थान की त्यागी-तपस्वी नारिया* की याद आ गयी। बाबा ने उसे देखकर भामा साह और पन्ना धाय को याद किया था। वह भी वसी हो सकती है।

माइकेल और राजा आकर नाश्ता करने लगे।

उधर सिपाहिया ने ढालिया के बास म आतक फला दिया। एक एक घर मे घुस घुसकर वे *क्रातिकारी* देवीप्रसाद *यानी बाबा* देवोदास को ढून्ढने लग। उनके भाडे बरतन बाहर फेक दिय। अमूमन ढोलिया के घरो म मिट्टी के बतन थे वे टू टूटकर बिखर गय। ठीकरिया चारा ओर खिड गयी।

उनकी ढोलकिया सडक पर पडी थी। सुन्दर जवान ढोलिना को राजा के आदमिया ने धर दबोचा। उनकी इज्जत लूट ली।

चारा ओर आतक व्याप्त गया। किसी की हिम्मत नही कि मुह से

विरोध का बोल निकाल ले। सन्नाटे से घिरा आतंक बड़ा ही भयावह होता है। संत्रस्त और दुखी ढोली ढोलिनें अपने पर हो रहे जुल्म के कारण केवल आंसू बहा रहे थे।

पर बाबा नहीं मिला। वह तो प्रेतात्मा की तरह गायब हो गया था।

रूपाली को भी पुलिस पकड़कर ले आयी थी।

माइकेल ने रूपाली को समझाया, 'तुम अपनी बेटी को समझाओ कि वह दबोदास का पता बता दे। मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगा।

रूपाली कुजड़ी के पास आयी।

हिजड़ा फरसा आ गया था। वह आदमी की जूण में पक्का जल्लाद था। वह एकांत में एक खुली चौकी पर बैठा था।

रूपाली ने कुजड़ी को देखा। लग रहा था कि हिजड़े ने उस पर कई कोड़े बरसाये थे। वह श्लथ पड़ी हुई सिसक रही थी।

"कुजड़ी!" रूपाली ने ममता भरे स्वर में कहा।

कुजड़ी ने आंखें खोलकर देखा। अपनी मां को सामने देखकर वह गले लिपटकर रो पड़ी।

"तू क्या नहीं बताती कि बाबा कहां है। सच नहीं तो झूठ बताकर ही अपनी जान छुड़ा ले।"

'मैं उसके बारे में नहीं जानती। नहीं जानती।

"पता नहीं, तू बचपन से ही हठ और अनूठे काम क्यूं करती आयी है। बता दे बता दे लाडेसर वरना ये हिरण्यहीन लोग तुझे तड़पा तड़पाकर मार डालेंगे।'

वह जोर से चीखी, "मुझे नहीं मालूम मुझे नहीं मालूम!" उसे हाडी राणी की याद आ गयी।

'फिर तेरे पास कौन आया था?"

मेरा बापू।" उसने रोदन भरे स्वर में कहा।

रूपाली ने उसे काफी ऊंचा नीचा किया पर कुजड़ी ने दबोदास बाबा के बारे में कुछ भी नहीं बताया।

रूपाली हारकर राजा के पास आ गयी।

माइकेल ने पूछा, 'कुजड़ी ने कुछ बताया?'

रूपाली ने सिर झुकाकर नकारात्मक सूचक सिर हिला दिया।

माइकेल साप की तरह फुत्कार कर बोला 'यह नही बतायेगी ! यह आतकवादियो से मिली हुई है । मुझे लगता है कि यह उन्ही क दल की है । इसके साथ तो कुछ ऐसा करो कि यह सब कह दे। यह उनके बारे मे खूब जानती है।'

पूरे दिन कुजडी यातनाए सहती रही। उसने हर बार आत स्वर म यही कहा, "मैं कुछ नही जानती, अन्नदाता मैं कुछ नही जानती।

रात को उसे एक कोठरी म बद कर दिया। उस न रोटी दी गई और न पानी। प्यास के मारे वह तडपने लगी। उसके शरीर मे ढीलापन आने लगा। उसके भीतर की आग बुझने लगी।

सुबह हिजडे ने उसे फिर सताना शुरू कर दिया। आखिर उसने राजा से जाकर कहा, अन्नदाता सात गुनाह माफी हुव तो मैं एक बात अरज करू ?

"करो।'

' इस ढोलण म कोई भूत पलीत जरूर है। जदि ऐसा नही होता तो मेरी सजा से वह कभी का सच उगल देती।

राजा ने माइकेल की ओर देखा। माइकेल ने समझाया "इसे अब प्यार से पूछो। नशा पिलाकर इसकी अम्ल निकालो। लोभ लालच दो।'

राजा ने माइकेल की आर दखा और कहा, नही, इस राड के डील पर डाभ चिपका दो। इसे नागी करके सारे नगर म घुमाओ।'

माइकेल ने क्रूरता भरे राजा के चेहरे की ओर देखा। राजा की आकृति पर पैशाचिकता नाच रही थी। एकाएक वह उठा और कुजडी के पास पहुचा। बोला "ढालणकी ! तू हरामजादी देवोदास बाबा के बारे म सच मच बतायगी या मैं तरे डडा उतरवाऊ ?

कुजडी काप गयी। बोली, "मुझे नही मालूम मुझे नही मालूम आप भरोसा कीजिए फिर उसन रामदेव बाबा को हाथ जोडकर मन-ही मन विनती की ह कलियुग के सच्चे देवता मुझम हिम्मत देना ताकि मैं देवोदास बाबा के बारे म कुछ भी न बताऊ।

राजा न हिजडे को हुक्म दिया, 'इस राड का नागी करके डाभ

चिपका दो । फिर सारे नगर में घुमाओ।'

तुरन्त ही लोहे की दो सलाखें लायी गयी। उन्हें भट्टी की आग मे डाल दिया गया।

राजा माइकेल के पास सिर झुकाये आया। माइकेल ने राजा से कहा, 'वास्तव म इसमे कोई प्रेतात्मा या देवात्मा घुस गई है। कभी कभी लगता है कि इसम सारे क्रातिकारियो का साहस घुस गया है। इसके मन म देवीप्रसाद ने देश प्रेम की अजीब-सी आग लगा दी है। अब यह ढोलण मर जायगी पर देवीप्रसाद के बारे मे एक शब्द भी नही बतायगी।'

हिजडा सलाखें तपा रहा था। दो आदमियो ने ढोलण को नगा कर दिया। कुजडी ने सोच लिया कि अब उसे असह्य यन्त्रणाए दी जायेंगी। उस ने एक चालाकी सोची। टूटते स्वर मे वह बोली, 'फरसा! अन्नदाता को बुलाकर ला मैं बाबा के बारे मे सब कुछ बताती हू।"

"सच। फरसा प्रसन्नता में उछल पडा।

"हा!' वह बुझ गयी।

फरसा बिजली की फुर्ती से गया। कुजडी को बाबा का एक वाक्य याद आया— आफत मे भी साहस नही छोडना चाहिए। उसम दैवी शक्ति आ गयी। एक भीषण तूफान। पहाड सी दृढता।

फरसा जसे ही गया वैसे ही उसने दूसरे आदमी से कहा भाई, जरा पाणी पिला द।'

वह भी पानी लेन चला गया। उसके जाते ही उसन रामदेव बाबा को याद किया। फिर उसन एक झटके के साथ अपना लहगा उठाया और उसके सहारे एक सलाखी उठा ली जो आग की तरह जल रही थी। तीसरा आदमी चौंका। तभी उसने उस पर सलाख का प्रहार किया। आदमी भागा— 'बचाओ बचाओ बचाओ!

और ढोलण कुजडी वहा से सीधी छत की ओर भागी। उसम गजब की ताकत आ गयी थी। थोडी देर म वह छत पर पहुच गयी। उसके मन म मौत का भय नही था। उसने सोच लिया था कि गडक की मौत मरने से तो छत से कूदकर मरना ज्यादा उत्तम है।

वह दीवार पर नगी खडी थी। पीछे से रूपाली, राजा और माइकेल

की सम्मिलित आवाजें आयी, "कुजक्ली कुजक्ली, रुक जाओ।"

और कुजडी ने नीचे की ओर देखा। सोचा—'बाबा! हम लोगो का जीवन तो अकारथ ही जाता है। विरथा जनमते हैं और विरथा मरते हैं। कोई सारथकता नही, कोई मतलब नही। कीडे-मकोडो सा वसी क्या है हम? सायत तेरे बारे मे कुछ भी न बताने से मेरा जीवन सारथक हो जाय। वह सफल हो जाय। लोग यह जरूर समझें कि केवल बडे घर की लुगाइया ही नही हम छोटी ना कुछ लुगाइया म भी चोखे काम करने की ताकत है। बाबा! तेरा सपना जरूर पूरा होगा देस सुतंतर होगा पंचायत होगा।'

सहसा कुजडी की आखें भर आयी। उसने अनत नील आकाश को देखा। तेजोमय सूय का देखा। उसकी बडी-बडी आखो म लपटें सी उठी मानो व लपटें बोल गयी हो— मेरा जीवन साथक है साथक है। बाबा! तू मुझे स्वग म मिलना मैं तेरी प्रतीक्षा करूगी तूने ही मुझे सत्य के लिए मरना सिखाया है। तूने ही मुझे अन्यायियो के विरुद्ध खडा होना सिखाया है। तूने ही बताया था देश के लिए जो मरता है—वह अत म कहता है—इकलाब जिन्दाबाद!

ढोलण ने ऊचे स्वर मे कहा, "इनकलाब जिंदाबाद।"

और कोई उसे आकर पकडे, इससे पहले ही वह कूद गयी। उसका शरीर नीचे चट्टानो पर गिरा और चकनाचूर हो गया। रूपाली करुण क्रन्दन कर उठी। राजा और माइकेल जडवत हो गये।

उस दिन ढालिया में वाग म शोर ही शोर छाया हुआ था। जोगी बना कुंजकली का बाप भी आया था। वह तम्बूरे पर गा रहा था—

> बनगढ की ए कोयल, बनगढ छोड कठ चाली
> थारै आगै दीवाले गुडिया धरी
> थारी गाऊजी थारै बिना उणमणी

जोगी का स्वर इतना मार्मिक था कि सारा माहौल करुण करुण सा पड़ा। सच बनगढ की वह कोयल चली गयी। न जाने कहां?

और गवैया ने आलाप लेकर गाया—

ढालण   र ढोलण, थारो जीवण सफल
तू हाडी राणी से कम ई नई

सच, वह किसी वीरागना से कम नहीं थी—

कुजन्नी !

पडदायतण कुजक्ली !!

ढोलण कुजक्ली !!!